UNIVERSAL
LIBRARY

OU_178885

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H82.6/S25M Accession No. G.H.2349

Author [illegible]

Title [illegible]

This book should be returned on or before the date last marked below.

मुक्ति-यज्ञ

(एक मौलिक नाटक)

रचयिता

प्रो० सत्येन्द्र, एम० ए०

भूमिका लेखक

श्री गुलाबराय, एम० ए०

प्रकाशक

साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा ।

प्रकाशक—
महेन्द्र, संचालक
साहित्य-रत्न-भण्डार,
सिविल-लाइन्स, आगरा।

प्रथम संस्करण	श्रावण शु० २ सं० १९९४	मूल्य
१०००	अगस्त १९३७	[redacted] रुपया

मुद्रक—
साहित्य प्रेस,
सिविल-लाइन्स, आगरा।

दो शब्द

प्रस्तुत पुस्तक श्रीसत्येन्द्रजी की पहली रचनात्मक कृति है, किन्तु इस कारण वे हिन्दी संसार के लिए अपरिचित नहीं हैं। उनकी दो पुस्तकें ('साहित्य की झाँकी' और 'गुप्तजी की कला') आलोचनात्मक साहित्य में अपना स्थान रखती हैं। लेखक का सब से अच्छा परिचय उसकी पुस्तक है। 'नहि कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते'। वास्तव में लेखक और पाठक के बीच में किसी मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं, किन्तु तो भी प्राक्कथन की एक प्रथा सी पड़ गई है। इस आवश्यक परिपाटी की पूर्ति में पाठकों का समय नष्ट न करता क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं अपने नीरस प्राक्कथन से इस कलापूर्ण कृति का उत्कर्ष न बढ़ा सकूँगा। किन्तु इस पुस्तक का विषय है वीर पुङ्गव छत्रसाल-पदानुरञ्जित बुन्देलखण्ड भूमि की स्वतन्त्रता। इस पुण्य भूमि से मेरा विशेष सम्बन्ध रहा है। महाराज छत्रसाल के नाम पर बसे हुए छत्रपुर में अपने जीवन के सत्रह वर्ष व्यतीत किए हैं। इस कारण बुन्देलखण्ड से सम्बन्ध रखने वाली पुस्तक के सम्बन्ध में दो शब्द लिखने का लोभ संवरण न कर सका।

हिन्दी में नाटकीय साहित्य की बहुत कमी है। नाटक एक ओर तो काव्य का चरम विकास है और दूसरी ओर वह साधारण जनता की भी चीज़ है। जनता के मनोरञ्जन के लिए ब्रह्माजी ने पञ्चम वेद के रूप में नाटक की सृष्टि की जिससे कि सब प्रकार की जनता उसका आनन्द ले सके। नाटककार की यही समस्या रहती है कि वह अपनी कृति को जनता की रुचि और बोधशक्ति के अनुकूल रखता हुआ भी साहित्यिक बनाए रक्खे। साहित्यिक-चीज़ के लिए दुर्बोध होना अनिवार्य नहीं किन्तु कुछ लोग दुर्बोधता को ही साहित्य का पर्याय मानते हैं। साहित्य का गौरव मानवीय भावों और विचारों की अभिव्यञ्जना में है न कि उन पर पाण्डित्य का आवरण डालने में। प्रस्तुत पुस्तक साहित्यिक होते हुए भी जनता की वस्तु है और जन-साधारण की वस्तु होते हुए भी अपना साहित्यिक गौरव रखती है। नाटक की दृष्टि से यह अभिनय योग्य है। चम्पा अग्र-वाल हाई स्कूल में इसका अभिनय सफलतापूर्वक हो चुका है।

इस पुस्तक का नाम बड़ा सार्थक है। स्वतन्त्रता की लड़ाई वास्तव में मुक्ति-यज्ञ है। इस पुस्तक में सभी प्रकार के उत्तम, मध्यम और नीच प्रकृति के पात्र मिलते हैं। रोशनआरा और हीरा में नीच महत्वाकांक्षा और नृशंसता का परिचय मिलता है और दूसरी ओर है बदुरुन्निसा की-सी शान्तिमय सङ्गीत की प्रतिलिपि। एक ओर छत्रसाल और दलपति जैसी उदार वीर आत्माओं के पवित्र दर्शन होते हैं तो दूसरी ओर औरङ्गज़ेब

और रणदूलहखाँ से अहसान-फरामोश लोग दिखलाई पड़ते हैं। औरङ्गजेब अपनी पुत्री बदुरुन्निसा के प्रभाव से सुधर भी जाता है। मित्रता की ओट में दूसरों के राज्य हड़पने का प्रयत्न हम रणदूलहखाँ की बात-चीत में देख सकते हैं। संसार ही पुण्य पाप से भरा है। अन्त में दृढ़ निश्चय, सत्प्रयास और आत्म-बलिदान का सुन्दर परिणाम दिखलाई पड़ता है। हृदय में आशावाद का सञ्चार होता है।

आशा है कि पाठक स्वयं ही इस पुस्तक को पढ़कर सत्येन्द्र जी के परिश्रम से लाभान्वित होंगे और उनके प्रयत्न को सफल करेंगे।

—गुलाबराय

नाटक के पात्र

—:☰)(☰:—

पुरुष-पात्र

१–चम्पतराय—महेवा के राजा। स्वतंत्रता के पुजारी।

२–शुभकरण—सागराधिपति।

३–प्राणनाथ प्रभु—विंध्यवासिनी देवी के पुजारी। बुंदेलखण्ड के सर्वमान्य पूज्य राजगुरु।

४–पहाड़सिंह—ओड़छा के राजा।

५–कंचुकीराय—ढॉड़ेर के राजा।

६–कालिंजराधिपति—कालिंजर के राजा।

७–औरंगज़ेब—देहली के मुग़ल-सम्राट।

८–जयसिंह—आमेर के राजा, औरंगज़ेब के सेनापति।

९–छत्रसाल—चम्पतराय का पुत्र।

१०–दलपति—शुभकरण का पुत्र।

११–विमलदेव—पहाड़सिंह का घोषित पुत्र। छद्मवेश में विमला।

१२–रणदूलहखॉं, १३–फिदाईखॉं — औरंगज़ेब के सेनापति।

१४–रहमत, १५–हशमत, १६–करीम — रणदूलहखॉं की सेना के सिपाही।

इसके अतिरिक्त बाल-नर्तक, बुंदेलखण्ड के सैनिक, नागरिक, हकीम, गायक, साक़ी, दूत एवं चर और प्रहरी इत्यादि ।

स्त्री-पात्र

१-विंध्यवासिनी देवी—विंध्याचल की अधिष्ठात्री देवी ।
बुंदेलखण्ड की आराध्य शक्ति ।

२-हीरादेवी—पहाड़सिंह की रानी ।

३-विजया—ढाँड़ेर की राजकुमारी । कंचुकीराय की कन्या ।

४-विमला—विमलदेव के वेश में सागराधिपति शुभकरण की कन्या ।

५-रौशनआरा—औरंगज़ेब की बहन ।

६-बदरुन्निसा—औरंगजेब की पुत्री ।

७-बिजली
८-फातिमा } रौशनआरा की प्यारी दासियाँ ।

इसके अतिरिक्त दासियाँ एवं नर्त्तकियाँ ।

मुक्ति-यज्ञ

अङ्क १] [दृश्य १

(देवी का मन्दिर)

[उत्सव होने वाला है। यथास्थान ढाँडेराधिपति कंचुकीराय, ओड़छा के राजदम्पति हीरादेवी और पहाड़सिंह, सागर के राजा शुभकरण, महेबा के राजा चम्पतराय विराजमान हैं। देवी के पास भव्य भगवाँ वस्त्र पहने प्राणनाथ प्रभु देवी की आरती का आयोजन कर रहे हैं। बाल-नर्तकों का एक दल मंगलाचरण कर रहा है]

बाल-नर्तक—

देवी! विन्ध्यवासिनी देवी!
शुचि सुभक्ति की,
भव्य शक्ति की,
मूर्त्तिमती देवी!
विन्ध्यवासिनी देवी!

कलछल छलकै रूप-चन्द्रिका, दिग्मण्डल उजियारी है;
हास-विलास दामिनी-दुति से, शोभा मंजुल न्यारी है—

वंकिम भ्रू से—
मृदु कटाक्ष से—

शक्तिमती देवी—
विन्ध्यवासिनी देवी !—
तेरी भव्य भयावन मुद्रा सदय वरद कल्यानी है,
कल्मप-दलन हरण भव-बंधन मुक्ति-भाव की दानी है—
विश्व-प्रेम की
सृष्टि-नेम की
भक्तिवती देवी—
विन्ध्यवासिनी देवी !

[मंगलाचरण समाप्त होने पर बाल-नर्तकों का प्रस्थान]

प्राणनाथ प्रभु–(आगे बढ़कर)—वीर बुन्देलो, बोलो विन्ध्य-वासिनी देवी की जय !

सब—विन्ध्यवासिनी देवी की जय।

प्राण—आज बुन्देलखण्ड के शस्य-स्यामल, सर्व सुख-सम्पन्न प्रान्त की ये–वीरों को जन्म देनेवाली, इन महाशक्ति अधिष्ठात्री देवी के वार्षिक शृङ्गार और उत्सव का दिन है। इनका दिव्य तेज सदा हम लोगों को मण्डित किये रहता है। इनका प्रकाश हमारे रोम रोम में प्रस्फुटित होता रहता है। इनसे हमें वह बल प्राप्त होता रहा है जिससे विन्ध्य-भूमि की श्री की, स्वतन्त्रता की और सम्पन्नता की वृद्धि होती रही है। पर, आज हमारे प्रान्त को घोर घने काले बादल घेरते आ रहे हैं। भविष्य अन्धकार की स्पष्ट छाया की सूचना अभी से दे रहा है। हमारे वीर राजपूतों के मुख पर वह श्री क्रीड़ा करती हुई प्रतीत नहीं होती। आओ! हम सब आज अपने पूर्व वैभव और शक्ति की पूर्ण प्रतिष्ठा के लिये देवी से विनम्र

प्रार्थना करें—और कल्याण की मंगल-कामना के लिए आरती उतारें। आप सब तैयार हैं न ?

[सब नत मस्तक अपने स्थान पर खड़े होते हैं। एक दम दौड़ती हुई एक बालिका का प्रवेश। बाल बिखरे हुए और साड़ी का छोर उड़ता हुआ]

बालिका—ठहरो—

[सब आश्चर्य चकित-से उसकी ओर देखते हैं]

ठहरो !

[चुप हो जाती है—बड़े भक्ति-भाव से देवी की ओर देखने लगती है, फिर प्रफुल्ल होकर, रोमाञ्चित होकर, घुटने टेक कर, भाव-मुग्ध सी]—

बालिका—अहः शक्ति-संचारिणी—वह तेरी ही दिव्यता थी, तेरा ही तेज था, कहाँ वे दो सुकुमार छोटे बालक और कहाँ दीर्घकाय भयावने राक्षसों का वह समूह !—

चम्पत—विजया ! तेरी ऐसी दशा क्यों है ? क्या कह रही है ?

विजया—मेरे हृदय पर अभी तक अंकित है—राम और लक्ष्मण की सी वह वीर मूर्तियाँ—उन्होंने जिस प्रकार अपने पराक्रम से सुबाहु और मारीच जैसे राक्षसों की सेना को नष्ट-भ्रष्ट करके यज्ञ की रक्षा की थी—उसी प्रकार आज इन देवी के यज्ञ की रक्षा—दुर्दान्त राक्षसों से कुँवर छत्रसाल और दलपतिराय ने की है। यह सब उन्हीं देवी का प्रताप है—ठहरो, जब तक वे न आजायँ देवी अपनी आरती से सन्तुष्ट न होंगी।

कंचुकी—बेटी ! पागल हो गई है क्या—आज कल राक्षस कहाँ!

विजया—बिलकुल राक्षस, पिताजी !—माताजी ने रामायण में

राक्षसों का जैसा हाल बताया—वैसा ही मैंने देखा—उनके हाथ में तलवार थी। हमारी जैसी नहीं, जो दीनों की रक्षा करती है, परन्तु वह तलवार जो निरीहों और दीनों के ख़ून के लिये लप-लपाया करती है—ओह !

[चुप हो जाती है—फिर कहने लगती है]

उनके दाँत काले काले थे, उनके ओठ ऐसे लाल थे मानो ख़ून पीकर आये थे—उनकी आँखें—ओह—वे तो अब भी मेरे हृदय में गढ़ी हुई हैं—उनमें ख़ून बरस रहा था—लाल—रक्त ऐसी आँखें कि जिसे देखें-फाड़ खायँ—उनकी भाषा अण्डबण्ड—अहः—

(कुछ भय-सा प्रदर्शित-) मेरी कटार- (भावावेश में) मैं मार डालूँगी, मेरी ओर मत बढ़, मैं राजपूत कन्या हूँ, ठहर—

[कटार निकाल लेती है, प्राणनाथ उसके पास आजाते हैं—उसके सिर पर हाथ रख देते हैं ।]

प्राण—बेटी, (जलद गम्भीर ध्वनि में) आवेश में मत आओ—

विजया—(कुछ शान्त होकर) प्रभु—यदि कुँवर छत्रसाल और दलपतिराय न आ जाते तो वे मुझे पकड़ ले जाते—और इस मन्दिर को तोड़ फोड़ डालते। छत्रसाल ! धन्य है—उसने उन्हे गिरफ्तार कर लिया और मुझे और विमलदेव मुक्त करा दिया—

(नेपथ्य में—विन्ध्यवासिनी देवी की जय-छत्रसाल की जय।)

हीरा—(ओठ चबाते हुये) बड़े—बूढ़ों के रहते, छोकरों की जय बोली जाती है—ऐसा अपमान—

प्राण—देवी ! यह अपमान नहीं—विजयोल्लास है—आप शान्त बैठें ।

[छत्रसाल और दलपतिराय तथा विमलदेव का प्रवेश—यथास्थान खड़े होजाते हैं]

सब—विन्ध्यवासिनी देवी की जय—

चम्पत—वत्स, क्या बात हुई ?

विमल—मैं बतलाऊँ, वीर छत्रसाल कह न सकेंगे-दिल्ली के आलमगीर के सेनापति रणदूलहखाँ ने मुझे और विजया को घेर रक्खा था—वे विजया को ले जाना चाहते थे और इन हमारी देवी के मन्दिर को चूर चूर कर डालना चाहते थे। उन्हें वीर छत्रसाल और दलपति ने परास्त किया और सेनापति को गिरफ़ार कर लिया। ये केवल दो थे और वे पचास थे !

चम्पत—धन्य, वत्स, तुमने बुन्देलों की लाज रखली।

छत्रसाल—(चम्पत के पैरों में झुक जाता है) आपके आशीर्वादसे पिताजी ! और इन भगवती विन्ध्यवासिनी के अतुल प्रसाद से—

चम्पत—मुझे बहुत भरोसा है। अब अवश्य ही बुन्देलखण्ड किसी दिन स्वतन्त्रता के सूर्य का दर्शन करेगा।

हीरा—क्या ? हमारे शाहंशाह के सेनापति को गिरफ़ार कर लिया-इतनी धृष्टता।

कंचुकी—मन्दिर टूटना था-टूट जाता। पर अब क्या होगा-

हमारे शाहंशाह-श्रोह-राजविद्रोह- चम्पत ! अपने बच्चों को सँभालो ।

प्राण—शान्त—

[सब चुप हो जाते हैं]

शान्त रहिये-आरती का समय हो गया है—आओ वीर छत्रसाल ! देवी को नमस्कार करो। बुन्देल-खण्ड की स्वतन्त्रता का सूर्य तुममें ही अपना प्रकाश दिखा रहा है-देवी तुमसे प्रसन्न हो रही हैं। आओ इनका प्रसाद ग्रहण करो—

[छत्रसाल जाता है—देवी के चरणों में शीश झुका देता है]

प्राण—देवी ! शक्तिशालिनी ! (गद्‌गद होकर) इस भूमि में तुम ऐसे ही युवक उत्पन्न करो-ऐसे ही वीर उत्पन्न करो जो अपने धर्म, स्त्री-जाति की लज्जा और भूमि की स्वतंत्रता की रक्षा कर सकें।

[विजया और विमलदेव दोनों एक साथ देवी के गले में माला डालते हैं। माला देवी के गले में से खिसक कर छत्रसाल के गले में आ पड़ती है।]

विजया—ऐं ! (आश्चर्य में)

छत्र—(माला उतारता हुआ) यह क्या ?—

प्राण—वत्स, उतारो मत, यह देवी का प्रसाद है—

[आरती उतारता है]

ओम् जय जीवन दानी।

तेरी वरद मुक्त मुद्रा है,
अभय भाव खानी।
ओम् जय जीवन दानी॥
तेरे विमल विभायुत मुख से,
शुभ छवि छितरानी।
ओम् जय जीवन दानी॥
तेरा बल है, शौर्य तुझी से,
तेरे अभिमानी।
ओम् जय जीवन दानी॥
सूर्य-चंद्र युग नेत्र कलुष-हर,
वीर ज्योति झलके।
ओम् जय जीवन दानी॥
प्रेरित कर वह दिव्य भूमि का,
रोम रोम छलके।
ओम् जय जीवन दानी॥
चपल चंचला सी कर में है,
असि द्रुत गतिवाली।
ओम् जय जीवन दानी॥
भ्रू-निमेष से दर्प-दलन में,
दिव्य शक्तिशाली।
ओम् जय जीवन दानी॥
वर दे, कर दे अभय, भक्ति का,

भूरि भाव भर दे ।
ओम् जय जीवन दानी ॥
बल से, तप से, अरु साहस से,
शक्तिवान कर दे ।
ओम् जय जीवन दानी ॥

हीरा--यह उद्दण्डता-यह विद्रोह-हम नहीं सह सकेंगे-कंचुकी-राय जी ।

कंचुकी--बिलकुल ठीक है-शाहंशाह ईश्वर के अंश हैं-उनके ख़िलाफ़ हम कोई बात नहीं सुन सकते, चलो, यहाँ ठहरना भी पाप है—

[चलने को प्रस्तुत होते हैं—चित्रवत-पटाक्षेप]

रास्ता

[हीरादेवी का प्रवेश–साथ में कंचुकीराय]

हीरा—राजासाहब ! आपने कुछ सोचा ? चम्पतराय और उसके लड़के का साहस बढ़ता जा रहा है, उनके दाँत जमने लगे हैं। विष के दाँत जल्दी तोड़ देना ही अच्छा है—

कंचुकी—खूब ! खूब, रानी साहिबा ! हम तो आपके इसी गुण पर मुग्ध हैं। क्या बात कही है ? विष के दाँत ! जरूर तोड़ देने चाहिये। टुकड़े टुकड़े कर देने चहिये। इतना हियाब ! शाहंशाह के जाति-भाई और सेनापति रण-दूलहखाँ को गिरफ्तार कर लिया—कितने नासमझ हैं ! अगर आलमगीर को खबर पड़ जाय तो सारा बुन्देलखंड तबाह हो जाय। रानी साहिबा ! आप नहीं जानतीं। मैं तो रह चुका हूँ इन लोगों के साथ। बड़े ही गरीब-परवर और मौजवाले—और इकबाल कितना बुलंद है—एक ओर से दूसरे छोर तक इनका दबदबा है—मुसल-

मान हैं तो क्या! हैं तो राजा ही—हमारे बुजुर्ग बेवक़ूफ़ थोड़े ही थे जो उन्होंने यह कह दिया था—

पाँसा पड़े सो दाव—

राजा करे सो न्याव—

रानी साहिबा—आप क्या सोच रही हैं?

हीरा—कोरी बातों से काम नहीं चलेगा—आपका यह कहना ठीक है कि शाहंशाह को यह सूचना मिल गई तो फिर ख़ैर नहीं। कोई यत्न ऐसा करना चाहिये कि रणदूलहख़ाँ मुक्त हो जाय। आप कुछ कर सकते हैं राजा साहब?

कंचुकी—क्यों नहीं? अभी सेना को भेज दूँ, अभी मारकाट मचा दूँ, अभी ख़ून की नदी बहादूँ। मैं ढाँडेर का राजा हूँ। यह आपने क्या कहा, रानी साहिबा!

हीरा—ख़ून की नदी बहाने की अभी ज़रूरत नहीं।

कंचुकी—तो फिर। आपही बताइये मैं क्या कर सकता हूँ—

हीरा—अभी बिना ख़ून बहाये चुपचाप रणदूलहख़ाँ को छुड़ाना होगा। इससे कई लाभ होंगे राजासाहब! एक तो रणदूलहख़ाँ हम लोगों का अहसान मानेगा और सम्राट् औरंगज़ेब से तारीफ़ करेगा।

कंचुकी—बेशक-क्या ख़ूब-आप तो बहुत दूर की बात सोचती हैं, क्या कही है? हाँ और—

हीरा—और फ़िज़ूल ख़ून न बहेगा। कौन कह सकता है कि लड़ाई में किसकी जीत हो? छत्रसाल ने दलपतिराय

के साथ अकेले पचास मुसलमानों को भगा दिया, यह कुछ कम खटके की बात नहीं। हमें चम्पतराय का अभी खुल्लमखुल्ला विरोध भी नहीं करना है।

कंचुकी—वाह! क्या कहा है! फिर तो चुप चाप छुटकारा होना चाहिये। हाँ ··हाँ—अच्छा। खूब सूझी! आप फिक्र न करें मैं उसे भी करलूँगा।

[हीरादेवी के कान में कुछ कहता है]

हीरा—ठीक। वाह राजा साहब! आपसे यही तो आशा थी। आप को भी क्या सूझी!! समझते हैं न, छूट जाने पर रणदूलहखाँ फिर बहुत भारी सेना के साथ बुन्देलखण्ड पर चढ़ आयेगा। और तब चम्पतराय का सारा दर्प, छत्रसाल की सारी जय-जयकार छूमंतर हो जायगी। जाइये राजासाहब, इसी रात को यह कार्य होना चाहिये।

कंचुकी—बहुत अच्छा— [प्रस्थान]

हीरा—(बड़ी देर तक कंचुकीराय की ओर शून्य दृष्टि से देखती रहती है। फिर अनायास ही) चम्पतराय, तुझे मिट्टी में मिलाकर छोड़ूँगी। ऐ मेरी भीषण महत्वाकांक्षा तू इसी प्रकार जलती रह। जब तक ओड़छे के राज्य में महेवा नहीं मिलता—तब तक तेरी शिखा ऐसे ही धू-धू करके प्रज्ज्वलित रहे। मेरे सामने चम्पतराय का आदर! ऐसा नहीं हो सकता। हीरादेवी कृत्या की भीषण मूर्ति की तरह महेवा के राजवंश का नाश करके छोड़ेगी।

[एक भूत का प्रवेश। लम्बी दाढ़ी, सिर के बड़े बाल]

भूत—हिः हिः हिः रात्रि हमारी है–दिन के दाह के बाद श्मशान नीरवता की तरह काली कलूटी भयङ्कर रात जिस प्रकार आती है उसी प्रकार हम जीवन-सन्ध्या के बाद भूत-जीवन की मूर्त्ति की तरह जीवन स्फूर्त्ति के कलङ्कों की देह धारण कर मनुष्य के दुर्बल मनोवेगों के पहलू में अपनी कुदान मचाते हैं। हिः हिः हिः···हीरादेवी–ओ हीरा-देवी ! खोल अपना हृदय–और मुझे घुस जाने दे। वह कितना काला है—मैं उसी में सुखपूर्वक शयन कर सकूँगा। हिः हिः हिः।

[भूत हीरादेवी की तरफ बढ़ता है]

हीरा—(काँपती हुई) अः अः अः मैं–मैं–(पीछे हटती है, फिर साहस धारण करती है) अपनी कतरनी-सी जिह्वा मत चला। भूत, मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। च······ च·········ल।

[फिर खूब ज़ोर से हँस पड़ती है]

वाह मेरे भूत, अब समझी। जाओ ! अपना रास्ता लो। जल्दी जाओ।

[भूत का प्रस्थान]

हः हः हः चम्पतराय तुम्हारी वीरता देखनी है। बढ़ो, कितना बढ़ते हो।

[प्रस्थान]

——:❀:——

[रणदूलहख़ाँ का तम्बू में क़ैद होना]

रणदूलहख़ाँ—मुझे क़ैदी बना लिया। बिना कुछ दहशत खाये आलमगीर के सिपहसालार को गिरफ्तार कर लिया। आफ़त के परकाले छतरसाल-मेरी बहादुरी का ज़रा भी ख़ौफ़ न खाया, मैंने तो बच्चा समझा बच्चा और इस लिये हाथ न उठाया और तूने समझी अपनी बहादुरी! ख़ैर, हुई ग़लती, अबकी बार जान बची तो, फिर देख लूँगा। न खुद आलमगीर को ही चढ़ा लाऊँ तो मेरा नाम रणदूलहख़ाँ नहीं! काफ़िरों का एक एक का सर कुचल दूँगा। ये काफ़िर नहीं जानते कि हम लोग कितने बहादुर हैं, एक एक राजपूत के लिये दस दस--न कम न बढ़ मुसलमान सिपाही तैय्यार हैं-पर फिर भी करनी पड़ेगी थोड़ी तारीफ़ ही, हालाँकि मैंने बच्चा समझ कर ही छोड़ा, तलवार नहीं चलाई, पर इतना तो है कि उस से मैं लड़ नहीं सकता—कैसे शेर की तरह दहाड़ता है, कैसी बिजली सी चमकाता है— उफ़!

[दूसरी ओर दरवाज़े पर भूत का प्रवेश]

भूत—रणदूलहखाँ।

रणदूलह—उफ़ ! छतरसाल की वे .खूँख्वार पैंतरेबाजियाँ अभी तक मेरे दिल को धड़का रही हैं। धड़-धड़-धड़-अरे यह तो धड़कता ही जाता है—या .खुदा इन काफ़िरों पर तू अपना ग़ैबी क़हर बरपा कर-इनकी सारी क़ुव्वत तू क्यों नहीं छीन लेता—

भूत—खाँसाहब-रणदूलहखाँ·····।

रणदूलहखाँ—(चौंककर, उछलकर) ऐं कौन ? ऊ-ऊ-अरे-या खुदा, या खुदा, या .खुदा, ऐ परवरदिगार, रहीम-बचा बचा इस शैतानी चक्कर से। इस काली रात के ये कारनामे-अररर···यह तो इधर ही आरहा है। या .खुदा, या अल्लाह, या रसूल।

भूत—खाँसाहब—

रणदूलह—अरे बोला, ए भई-मेरी जान बख्श-मेरे ऊपर रहम कर-मेरे छोटे-छोटे मासूम बच्चों और बिलखती बीबी पर महरबानी की नज़र कर—मेरा पीछा छोड़—

भूत—सेनापति ! रणदूलहखाँ ! घबड़ाइए न, बात सुनिए।

रणदूलह—न-न-न-न बख्श-अपनी बात किसी और से कह--या .खुदा--या .खुदा--अब कैसे हो—

[घबराता हुआ भागता है]

भूत—खाँसाहब, मैं आपको क़ैद से छुड़ाने आया हूँ—

रणदूलह—तोबा···खाने आया हूँ-मुझे ! भई मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है ? माफ़ कर भई।

भूत—खाँसाहब-मैं आपका दोस्त कञ्चुकीराय हूँ—

रणदूलह—भूँ ठ-भूँ ठ-कञ्चुकीराय-और तुम ! भई माफ़ करो—दूर रहो-मेरी जान कल्ब से निकल जाना चाहती है, भई-या खुदा।

[आँखें बन्द करके बैठ जाता है। भूत अपनी दाढ़ी उतार कर फेंक देता है और पास पहुँचता है]

भूत—खाँसाहब-आँख खोलकर—

रणदूलहखाँ—अब मरा-अब मरा-अब तो बिलकुल पास आगया-अरे माफ़ कीजिये, मेरे गुनाह—

कंचुकी—खाँसाहब, फिजूल मत घबराइये। अब तो ज़रा देखिये। होश में आकर।

रणदूलहखाँ—[साहस करके आँखें खोलता है, कंचुकीराय को पहिचानता है] उफ़ ! आप हैं राजासाहब ! आप बड़े गुस्ताख़ मालूम पड़ते हैं। ऐसा भी क्या मजाक-जान पर आ बनी। थोड़ी देर और होती तो बस फिर इस दुनिया से कूँच था।

कंचुकी—खाँ साहब-मैं माफ़ी का ख्वाहिस्तगार हूँ। आपको इस क़ैद से छुड़ाने के लिए मुझे ऐसा रूप रखना पड़ा—

रणदूलहखां—राजासाहब, ओफ़-अभी तक धड़क रहा है। ख़ैर आइये-आपने इतनी रात तकलीफ़ की। आखिर आप क्या तदवीर मुझे छुड़ाने की करके आये हैं ?

कंचुकी—सो···तो—जैसा आप कहें, वैसा करूँ। आपसे सलाह लेने को—

रणदूलहखां—बस, रहने दीजिये-फिर आप छुड़ा सके। आप यहाँ हैं और आप से इतना नहीं बना कि इन काफ़िरों के मूँड़ काट लेते। मुझे छुड़ाने चले हैं !

कंचुकी—जी, गलती हुई, पर यह कुछ अच्छा न होता--

रणदूलहखां—हाँ-अच्छा कैसे होता, ख़ैर आप एक काम कीजिये, और तो कुछ आप क्या करेंगे ?

कंचुकी—जी, कहिये, बन्दा दिलोजाँ से हाजिर है--

रणदूलहखां--तो लीजिये—

[कमर से एक कटार निकाल कर]

इस कटार से आप शाही महल में बेखटके चाहे जहाँ जा सकते हैं। आप सीधे रोशनआरा बेगम के महलों में चले जाइये और यहाँ की सब ख़बर सुना दीजिये। साफ साफ बता दीजिये कि चम्पतराय और उसके लड़के छतरसाल ने आस्मान सिर पर उठा रखा है—

[छत्रसाल का प्रवेश]

छत्रसाल—और उसे अब सल्तनत मुग़लिया पर गिराना चाहते हैं। क्यों खाँ साहब ? आप अत्याचार अनाचार चाहे जो करते जायँ; धर्म, मज़हब की दुहाई दें और उसके नाम को बदनाम करें अपनी पापीयसी प्रवृति को संतुष्ट करने के लिये ! याद रखो, रणदूलहखाँ—मज़हब का नाम लेकर जो काम तुम आज कर रहे हो-वह इस देश के इतिहास को महा गन्दा बना देंगे। आगे की सन्तान तुम्हारे नाम पर थूकेगी। पर मदमत्त तुम्हें होश नहीं-

तुम्हारा अत्याचार भी क्षम्य और हमारा रक्षा का प्रयत्न भी अपराध—(कञ्चुकीराय की ओर मुड़कर)

हः हः हः राजा साहब ? वाह ! क्या राजपूती वेश है !! आपको लज्जा तो नहीं आती। वीर थे, वीर की तरह काम करते—खैर रखिये इस कटार को, रखिये—

[रणदूल्हहखाँ की ओर देखते हुए राजा साहब कटार रख देने का नाट्य करते हैं]

पटाक्षेप

(शुभकरण का तम्बू , विन्ध्याचल की तलहटी)

शुभ—सोओ, विश्व ! शान्ति पूर्वक सोओ। तुम्हारे हृदय में वह ज्वाला कहाँ है-जो शुभकरण के हृदय को दग्ध कर रही है ? ये तारिकापति हैं-विमल-शान्त-सुधापूर्ण मुस्कराहट से विन्ध्याचल के इन धवल शिखरों को सुशीतल कर रहे हैं। वनस्पतियों को जीवन प्रदान कर रहे हैं-ये भी अपना कर्त्तव्य कर रहे हैं। परन्तु शुभकरण का तो संसार ही बदल गया है। हतभाग्य शुभकरण, तू बुन्देलखण्ड के लिये विडम्बना की मूर्ति की तरह-उसके कलङ्क की तरह, जीवित है। जिन्हें तू घृणा करता था, जिन्हें देख कर तेरा वीर रक्त खौलने लगता था-उन्हीं के सामने तू दुर्बल कायर की तरह चुप हो जाता है। नारकी कुत्ते की तरह दुम हिलाने लगता है-फिर भी तू जीवित है। वचन बद्ध है-प्रतिज्ञा तुझे तेरे प्राण भी नहीं छोड़ने देगी।

(नेपथ्य में गाना)

परम प्रिय देश हमारा है।
भरत-भू का उजियारा है॥

विन्ध्याचल गिरि-शृङ्ग मनोहर, झरते झर झर झरने।
वीर बुन्देलों की नस नस में, अमृत वीर रस भरने॥
जगत में जय-जयकारा है।
भरत-भू का उजियारा है॥

शस्य-श्यामला धरा उर्वरा, सुमन सुमन से खिलते।
प्रात-वायु के मुक्त झकोरों में हिल मिल कर मिलते॥
जगत शोभा में हारा है।
भरत-भू का उजियारा है॥

चेतो चेतो वीर धीर धर अपनी रक्षा कर लो
स्वतन्त्रता के महा यज्ञ में आहुति दे यश भर लो।
जगत सब तुम पर वारा है।
भरत भू का उजियारा है॥

(गाना धीरे-धीरे क्षीण होता चला जाता है)

शुभ—बुन्देलखण्ड, प्यारे पितृ देश-तेरा जल-अन्न मेरे रक्त में ऊष्मा उत्पन्न करता है। तेरी मिट्टी से ही मेरे शरीर के ये स्नायु, ये पेशियाँ बनी हैं। पर ये आज विवश हैं। आज यह पितृद्रोह करने के लिए प्रस्तुत हैं। अहः ग्लानि, घृणा, मैं तो मर नहीं सकता। पर, ए! पाप-नाशन वज्र तू ही मेरा अन्त क्यों नहीं कर देता, ए! विन्ध्य के उच्च शिखर! आ, मेरे पामर शरीर को चूर चूर कर डाल। अहः मुझे कोई देश-द्रोह के पातक से बचाले।

(हीरादेवी का प्रवेश)

हीरा—वीर शुभकरण !

शुभ—माया, छलना-चली जाओ यहाँ से। अहः अरे कभी तो शुभकरण को शुभकरण रह लेने दिया करो। क्यों-क्यों, क्या इस विश्राम-दायिनी रात्रि में भी तुम्हारा शिकंजा ढीला नहीं हो सकता। बोलो-बोलो-बोलो, क्या एक क्षण के लिए भी तुम मुझे मुक्त होकर नहीं विचरने दे सकतीं।

हीरा—इतना दुख क्यों है, शुभकरण ?

शुभ—दुख क्यों है ? तुम पूछती हो हीरादेवी ! झूठ या सच, मेरे हृदय में बन्धु-द्रोह की आग लगा कर फिर पूछती हो दुख क्यों है ? जाओ, भला इसी में है, हीरादेवी, तुम चली जाओ, और इस समय मुझे कुछ क्षण के लिए अकेला छोड़ जाओ।

हीरा—असम्भव, शुभकरण-अपनी प्रतिज्ञा याद करो। कायरों की तरह कायरता मत दिखाओ।

शुभ—ठीक है—हीरादेवी—इस प्रतिज्ञा ने ही तो मुझे कायर बना दिया है। मैं अपनी प्रतिज्ञा से टल नहीं सकता। याद रक्खो हीरादेवी ! वह वीर की प्रतिज्ञा है, वीर-क्षण में की गई है, उसे आज का कायर शुभकरण नहीं तोड़ सकता। वह प्रतिज्ञा अम्बरीष के सुदर्शन की तरह भयानक रूप से ताण्डव करती हुई, अग्निमण्डल की तरह नाचती हुई शुभकरण के पीछे पीछे लगी फिरती है।

हीरा—हः हः—ठीक है, फिर भी तुम उसे भूल जाते हो !

शुभ—हः हः—आपको कैसे विदित हुआ कि मैं भूल जाता हूँ ?

हीरा—प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या आवश्यकता है ? क्या आज की विन्ध्यवासिनी देवी वाली घटना भुलाई जा सकती है। दलपति, तुम्हारे शत्रु चम्पतराय के पुत्र छत्रसाल का साथ दे और तुम चुप बैठे रहो—वह रणदूलहखाँ को गिरफ्तार करले और तुम एक शब्द भी न कहो—यह सब क्या है ?

शुभ—फिर मर्माघात ! यह सब क्या है ? हीरादेवी इस प्रकार प्रश्न न कर सीधे ही कहा करो तो ठीक है। मैं बताऊँ यह सब क्या है ? यह सब एक भयङ्कर विडम्बना है ! यह सब एक भारी तूफान को ठीकरी से दबाना है, यह अपने कुल और कुटुम्बियों के शवदाह की भस्म को अपने शरीर पर मलना है, यह अपने कुल की मर्यादा का पर्दा फाड़कर अट्टहास करना है ! उँह, यह सब क्या है ? पर नहीं—

[कुछ शान्त होता है, हृदय को दबाता है]

तुम ठीक कहती हो, दलपति छत्रसाल का साथ दे—दलपति बुन्देलों की वीरता का आदर्श पालन करे—वह देश की स्वतन्त्रता को अपहरण करने वाले का मर्दन करे और धर्म की रक्षा करे, और, मैं चुप रहूँ। जिस कृत्य को सुन कर कोई पिता फूलकर मोर की तरह नाचने लगे, गर्व से सिर उठा दे—ऐसे वीर-कृत्य

को सुनकर मैं चुप बैठा रहूँ—धिक्कार है । तुमने ठीक कहा हीरादेवी—

हीरा—शुभकरण—अपनी प्रतिज्ञा—बस ।

शुभ—इतना भय हीरादेवी—हः हः हः इतना भय । मुझे मेरी प्रतिज्ञा खूब याद है, तब भी याद थी और अब भी याद है—दलपति, दलपति !

[एकदम दलपति का प्रवेश, हाथ में नंगी तलवार लिए]

दल—क्या है, पिताजी, कौन है ?

शुभ—कैसा वीर है ! संसार का कोई भी पिता ऐसे सुपुत्र पर अभिमान कर सकता है ?

दल—पिताजी, आज्ञा कीजिए—इस अर्द्ध-रात्रि में ऐसा क्या संकट आ पड़ा—

शुभ—बेटे ।

दल—पिताजी ।

शुभ—आओ ! बेटे—मैं तुम्हें थोड़ी देर के लिए अपने हृदय से लगालूँ ।

दल—पूज्य, यह क्या हो रहा है ।

शुभ—मत पूछो—बेटे—आ—थोड़ी देर के लिए

[दलपति को छाती से चिपटा लेता है]

हीरा—शुभकरण ।

शुभ—हीरादेवी—चुप—

[प्यार से दलपति के सिर पर हाथ फेरता है]

पुत्र क्या वस्तु है ! हीरादेवी, तुम जानती हो ?

हृदय में एक अलौकिक शान्ति है। सारा कुहराम शान्त है!

हीरा—शुभकरण—प्रति…………

शुभ—भाग्य—ए नियति-नटी की दूती! तू थोड़ी देर को भी पिता-पुत्र का मेल नहीं देख सकती।

[बाहुपाश शिथिल हो जाते हैं, दलपति अलग खड़ा हो जाता है]

शुभ—वत्स,

दल—पूज्य!

शुभ—कितना धन्य हूँ मैं, तुमसा वीर पुत्र पाकर। बेटे तुझ से देश का बड़ा कल्याण हो सकता है। जाओ, मेरा मकान छोड़ जाओ। तुम्हारा पिता, उसे अब पिता मत कहना, जाओ, वह पातकी है। उसका साथ छोड़ जाओ। देखो, मैं देशद्रोही हूँ, बन्धुओं को नाश करने की प्रतिज्ञा किये हुए हूँ। तुम जैसे निर्मल, पवित्र, प्रेम-मूर्ति पर मेरा अधिकार नहीं। चले जाओ,

दल—पिताजी!

शुभ—ज्यादा नहीं, बेटे, बेटे, दिल का बाँध टूट जायगा। ज्यादा नहीं, तुम भी मोह छोड़ो। जाओ, देश पर अपनी वीरता निछावर करो। अभी चले जाओ। चम्पतराय मेरा शत्रु है, छत्रसाल मेरा शत्रु है, देश का भला चाहने वाला प्रत्येक मेरा शत्रु है। और दलपति उनका साथी होने के कारण तू भी मेरा शत्रु है, जा अभी घर से निकल जा—

दल—अभी,

शुभ—अभी, इसी समय। यदि मैं देश का शत्रु हूँ तो तू देश का मित्र बन, शायद इससे पाप का कुछ परिहार हो सके। जा—

दल—जो आज्ञा, पिताजी, ईश्वर मुझे बल दे, जिस प्रकार राम ने दशरथ की, भीष्म ने शान्तनु की आज्ञा पालन की उसी प्रकार मैं भी आपकी आज्ञा पालन करने में समर्थ हो सकूँ—मैं भी अपने देश और धर्म की रक्षा में कुछ काम आ सकूँ, यह चलते समय मुझे आशीर्वाद दीजिये। पिताजी, देशद्रोही होकर भी आप यदि मेरे सामने आवें तो मेरा हृदय कातर न हो, यह बरदान दीजिए। अन्त में पिताजी, पिताजी, इन चरणों की रज प्रदान कीजिये। मैं अपने व्रत में सफल हो सकूँ।

(रज लेता है)

पिताजी, जाता हूँ, हृदय कातर होता है। आपके प्रेमपूर्ण वक्ष का अब आलिंगन न कर सकूँगा। आपके इन चरणों का स्पर्श अब मुझे न मिल सकेगा। पिता रहते पिताहीन की तरह, पिता की ममतामयी आँख से दूर घूमा करूँगा। किसकी छाती फुलाने के लिए मैं कृत्य करूँगा, पर ईश्वर और देश आज से मेरे लिये सब कुछ है। जाता हूँ, पिता, नमस्कार।

[प्रस्थान]

शुभ—[आँखें मूँदकर बैठा जाता है, कुछ देर बाद उठता है] गया, सिंह के शावक की तरह उछाल भरता गया। मेरी लाज की तरह गया—चला—गया—बेटे—बिना—संसार मेरे लिये सूना है—फिर भी मुझे प्रतिज्ञा के लिये जीना है—चम्पतराय—अब सावधान रहो। अब प्रतिज्ञा में आज पूर्णाहुति हो गई। आज सर्वस्व न्यौछावर हो गया। हीरादेवी! अब तो सन्तुष्ट हो।

[हीरादेवी की ओर क्रूर दृष्टि से देखता है—हीरादेवी काँपती है]

पटाक्षेप

स्थान—मार्ग

(दलपति का गाते हुए प्रवेश)

न ये धन है कुछ न ये तन है कुछ, जब मन ही उस पर निसार है।
जो रमा हुआ मेरी रग में है, वह देश औ' देश का प्यार है ॥

उसकी लाली आँखों में छारही
वह उषा में झांक दिखा रही—
वह उसी का रंग जगत् में है, औ' उसी का सब में बिहार है॥

तू भी चलले इठला के ऐ पवन !
तू भी ताली चटकाले ऐ सुमन, !
तू भी गाले कोकिल ! हो मुक्त मन आयी अब बसन्ती बिहार है ॥

दल—मेरा हृदय आज ही स्वतन्त्रता का स्वर्गीय आनन्द अनुभव कर रहा है । मैं आज उन्मुक्त पवन की तरह कभी बसन्त में इठलाता हुआ मन्द मन्द गति से अठखेलियाँ कर सकता हूँ। कभी प्रचण्ड पवन की तरह हू-हू करता हुआ उद्दण्डों की जड़ उखाड़ सकता हूँ। पिता ने मुझे

देश व्रत पर न्यौछावर कर दिया। मैं भी स्वाहा की भाँति स्वतन्त्रता देवी को संतुष्ट करूँगा और पिता को नहीं तो इस पितृ देश को बरदान का कारण बनूँगा। पिताजी आपको प्रणाम् है। आपका आशीर्वाद मेरे साथ रहे मैं आपका यश जहाँ जाऊँ वहीं फैलाऊँ। ए मातृभूमि ! ये उदय होते हुए सूर्य साक्षी हैं, ये अनन्त और व्यापक महाकाश साक्षी है। तेरी स्वतन्त्रता ही मेरा ध्येय है। मुझे कोई सहायक मिले या न मिले, मुझे अपने प्राणों की आहुति ही क्यों न देनी पड़े, परन्तु मैं अपने ध्येय से नहीं हटूँगा। यदि काल का भी सामना करना पड़े तब भी करूँगा। सूर्यदेव ! आप मुझे ज्योति दें। वह ज्योति दें जिसमें कभी निराशा का अन्धकार पास न फटक सके। वह ज्योति दें जिसमे मुझे मेरे ध्येय का मार्ग सुस्पष्ट दीखता रहे—आप मुझे निरन्तर स्फूर्ति और जीवन प्रदान करते रहें—आपको नमस्कार है—

[**सूर्य को झुक कर प्रणाम करता है। सामने से स्वामी प्राणनाथ प्रभु आकर खड़े हो जाते हैं। सूर्य के प्रकाश से उनका ललाट प्रकाशित है।**]

प्राण—कल्याण हो वत्स—

दल—कैसा शुभ आशीर्वाद है—धन्य देव—

[**आँख खोलता है। प्राणनाथ प्रभु को देखकर उन्हें फिर प्रणाम करता है—**]

प्राण—वत्स ! तुम धन्य हो—इस भूमि को तुम जैसे नवयुवकों की आवश्यकता है। यह भूमि तुम में ही अपने भावी

कल्याण की झांकी देखना चाहती है। उठो, वीर व्रती, म्यान से अपनी तलवार निकालो।

[दलपति उठ कर तलवार निकालता है—]

हाँ, यह तुम्हारी शक्ति है—पर इसका दुरुपयोग मत करना। रक्त बहाना तुम्हारे लिये कहीं शौक़ की वस्तु न होजाय, हिंसा कहीं तुम्हारा व्यसन न होजाय—इसका ध्यान रखना। संसार में केवल जाति एक है—वह मनुष्य जाति है, बस—और किसी जाति का बन्धन स्वीकार करके इस संसार के झंझट को और भी मत बढ़ाना—न्याय—और धर्म के लिये ही यदि किसी का विरोध करना पड़े तो करना—केवल जातीय विद्वेष से नहीं—बस यही कुछ बातें हैं, इन्हें अपने सामने रक्खो—और जब तक भूमि स्वतन्त्र न होजाय, अन्याय का प्रतिकार न होजाय—शांति की नींद मत सोओ। तुममें वह तेज मौजूद है जिससे सूर्य उदय होकर तपता है। तुम्हें निराशा कभी छू नहीं सकती तुम अपने व्रत में सफल होगे। वह देखो—उधर क्षितिज पर सूर्य उदय हो रहा है, यह तुम्हारे पास स्वतंत्रता का प्रकाश लेकर आया है—आओ-आओ—वीर—आओ—छत्रसाल से इसी मंगल-प्रभात में भेंट करो।

[प्रस्थान]

दल—भव्य सन्देश—अमृत प्रोत्साहन—अनन्त उत्साह—महान आशीर्वाद सब एक साथ। चलूँ जीवन-सूर्य उदय होगया—

[पीछे प्रस्थान]

पटाक्षेप

स्थान-जयसरोवर

[विजया और विमल]

विमल— हम क्या हैं ? इसको कौन बता सकता है ?
विजया—क्यों आये जग में, कौन बता सकता है ?
विमल— हम बूँद लहर से पृथक उछल कर छलके
विजया—हम तारा वीचि-विलास भूल कर झलके—
दोनों— हम छलके-झलके कौन बता सकता है ?
विमल— हम क्या हैं ? इसको कौन बता सकता है ?
हम खिले पार्श्व के पुष्प सुरभि से महके—
विजया—हम ओस बुन्द बन मृदुल सुमन पर ढुलके—
दोनों— महके या ढुलके कौन बता सकता है ?
विमल— हम क्या हैं ? इसको कौन बता सकता है ?
रवि, राकापति, तारा में हमीं प्रकाशित
विजया—हम में इनका ही तेज स-ओज विभासित
दोनों— हम या हम में ? यह कौन बता सकता है ?
विमल— हम क्या हैं ? इसको कौन बता सकता है ?
हम ज्ञान, विश्व का भेद समझने आये

विजया—या एक पहेली नयी दिखाने आये
दोनों— हम स्वतः ज्ञान या एक पहेली कौन बता सकता है?
विमल— हम क्या हैं? इसको कौन बता सकता है?
विजया—हम शूल बने, क्या जगत कंटकित करने
विमल— हम फूल बने, क्या मद-सौरभ से भरने—
दोनों— भरने या झरने कौन बता सकता है?
विजया—क्यों आये जग में? कौन बता सकता है?
हम सरिता जग की तृषा शान्त करने को
विमल— या मार्ग-रोध, बन बाढ़ प्रलय करने को
दोनों— हम सृष्टि-प्रलय क्या, कौन बता सकता है?
विजया—क्यों आये जग में? कौन बता सकता है?
विमल— हम क्या हैं? इसको कौन बता सकता है?
दोनों— 'क्यों' और 'क्या' में क्या, कौन बता सकता है?

[छत्रसाल का प्रवेश]

छत्र—बस-बस करो। विश्व-सौन्दर्य की युगल मूर्तियो, इन पहेलियों को छोड़ो। द्विविधा का गान कायरता का प्रसारक है, संसार की गति का अवरोधक है, वह बैठे-ठालों का प्रलाप है—आओ-गाओ मेरे साथ—

गाना

हम वीर-वीर का दर्प दिखाने आये
मद-मत्सर-ममता-मोह मिटाने आये
हम एक आन में अनय मिटा सकते हैं।
हम क्या हैं, क्यों हैं, हमी बता सकते हैं।

हम जग-जीवन की ज्योति प्रकाश करेंगे
हम अन्धकार का विकट विनाश करेंगे
हम सूर्य, सूर्य-सा तेज दिपा सकते हैं—
हम क्या हैं, क्यों हैं, हमी बता सकते हैं।
हम अट्टहास, ताण्डव हैं, नाट्य करेंगे-
दुर्वृत्त और दुर्गुण संहार करेंगे—
हम भव्य भाव से सृष्टि भरा सकते हैं।
हम क्या हैं, क्यों हैं, हमीं बता सकते हैं।

विजया—वीर यह तुम्हारा गान है। तुम्हारे वीर-कण्ठ से, सिंह की घन गम्भीर ध्वनि के समान विभो! पर कह हम इसे कैसे गा सकते हैं?

छत्र०—गा सकती हो, विजया? तुम्हीं तो विश्व की वास्तविक शक्ति हो। यदि कहीं तुम जान लो कि कोमल कमनीय आवरण में विश्व-विस्फोटक तेज छिपा हुआ है; यदि कहीं जानलो कि तुम्हारे अन्दर विन्ध्यवासिनी देवी की—ज्वालादेवी की सहस्रमुखी शिखा प्रज्वलित है—तुम्हें कहीं अपनी वास्तविक शक्ति का पता चलजाय तो एक दम विश्व भर में दिव्यता का प्रसार हो जाय—जागो-भारत नारियो—जागो, भीषण सुकुमारियो-तुम शान्ति और प्रलय दोनों हो—तुम में सब है—अपनी इस भूमि की दलित दशा को देखकर अब तो जागो—वीर बनो और वीर भावों को जाग्रत करो—

विजया—हम क्या करें, छत्रसाल?

छत्रसाल—विजये ! यह भी क्या मुझसे पूछना होगा। बस एक वार आँख उठा कर देश की ओर देखो—और उसके हित के लिए जो मिल जाय वही करने लग जाओ। आज ही निश्चय करलो। विजये ! मैं तो जाता हूँ, कुछ दिन के लिए मुझे दिल्ली जाना है, पर तुम शिथिल न होना।

विजया—(वीर दर्प से) निश्चय ही–छत्रसाल ! तुम्हारा प्रिय आदर्श मैं ग्रहण करती हूँ। मैं कर्तव्यशील बनूँगी। तुम जाओ।

[छत्रसाल का प्रस्थान]

विमल—एकदम वीर—एकदम मोहक—विजया ! कैसा आकर्षण है। सूर्य और पृथ्वी के आकर्षण से भी कहीं बढ़कर। इन्हें तो अपने हृदय से लगालो !

विजया—विमल ! क्या स्त्रियों की सी बातें कर रहे हो। मैं तो छत्रसाल की बातें सुनकर वीर-भाव से रोमाञ्चित हो जाती हूँ और तुम यह प्रलाप करने लगते हो। चलो देश के लिए कुछ करें।

विमल—विजया ! विजया !! तुम क्या जानो ! मेरे हृदय में तो भगवान् ने स्त्री-भाव भर दिया है। मैं तो केवल प्रेम कर सकता हूँ।

विजया—प्रेम—प्रेम—प्रेम का अर्थ समझते हो विमलदेव ! निष्क्रिय निश्चेष्ट प्रेम, प्रेम नहीं, प्रेम का भूत है। मोह है। वह नाश करने वाला है। जिसे प्रेम करते हो—

उसके हो जाओ, उसके मार्ग को अपना मार्ग बनालो, उसके ध्येय को अपना ध्येय बनालो। उसके विचारों के सहायक बनो—उसकी उन्नति के अवतारक बनो—तो प्रेम है। प्रेम के नाते ही कुछ करो, विमलदेव !

विमल—विजया—मेरी माता—[कहते कहते रुक जाती है]

विजया—तुम्हारी माता हीरादेवी ! मैं ख़ूब जानती हूँ। उनकी क्रूर बुद्धि ही देश का सब से अधिक अहित कर रही है। कहीं तुम उसका प्रायश्चित कर सको ! मैं, विमल ! छत्रसाल के लिये सब कुछ कर सकती हूँ। मेरे पिता ढाँड़ेर के राजा क्या कुछ कम छत्रसाल के शत्रु हैं। पर नहीं, मैं उसका प्रायश्चित करूँगी—देखूँगी कर सकती हूँ या नहीं।

[प्रस्थान]

विमल—कोई नहीं जानता, मैं क्या हूँ ? मेरा वेष और मेरा हृदय साथ-साथ नहीं चल रहे, पर नहीं इस कमज़ोरी से काम नहीं चलेगा। सोचना चाहिए, विजया का साथ दे सकती—नहीं—दे सकता हूँ या नहीं। माता की क्रूर दृष्टि से कैसे बचूँ ?

[प्रस्थान]

—पट्टोत्तोलन—

रौशनआरा बेग़म का महल

रौशन—रौशनआरा की शान और आन का इस दुनिया में और कौन है ? आज .खुद शाहनशाह आलमगीर किसके इशारे पर नाचता है। किस क़ुदरत ने औरंगज़ेब को फ़क़ीर से तख़्तनशीन किया ? मेरी क़ुदरत ने। दुनिया इसे क्या जानेगी और कौन क़ुदरत उस आलमगीर के सितारे को ग़रूब कर देगी। इसे कौन जानेगा। कोई है—

[बिजली का प्रवेश]

प्यारी बिजली—जा—कुछ नाच-गाने का इन्तज़ाम कर—

[बिजली का इठलाते हुए प्रस्थान]

इस जहान में लोग कहते हैं, कोई .खुदा है। कैसी मज़ाक की चीज़ है। अगर कोई .खुदा है तो वह आदमी का गुलाम है, वह एक मिट्टी का ढेला है। आदमी को वह रोक नहीं सकता। यह फ़िज़ूल ख़याल डरपोक, नामर्द बे अक़्ल और नासमझ मख़लूक़ात का है। रौशनआरा ने चाहा आस्मान में तूफ़ान खड़ा कर दिया, सूरज और चाँद टकराकर चकनाचूर हो गये। .खुदा न .खुदा

की दुम! यह कैसा नापाक ख़्याल है–मैंने चाहा एक सितारे को आसमान में सूरज की जगह बैठा दिया, बस अकेली मैं हूँ।

[नर्त्तकियों का प्रवेश]

नाच-गान

छनननन छम छम छमाछम
नाचोरी मधुर-सी तान–गान से—छनननन छम०
आन शान से,
अजब अनोखी चाल
इठिला, मुसिका,
दुनिया होय निहाल
झूमैं घूमैं मद्य के रंग में, बनकर मस्त निदान,
गान से—छनननन छम छम।

रौशनआरा—जाओ—[नर्तकियों का प्रस्थान] बिजली-बिजली!

[बिजली का प्रवेश]

रौशन—हकीम को बुलाओ—

[बिजली का प्रस्थान]

आज बस काम ख़त्म हो जाना चाहिए। और ज़्यादा नहीं। ऐसा लगता है कुछ हकीम ढील ढाल कर रहा है। औरंगज़ेब, अब तू नहीं बच सकता। भाई-बहिन यह कोई रिश्ता नहीं, रिश्ता-नाता सभी तो मतलब की चीज़ हैं। यह क़ुदरती क़ानून के बिलकुल बरक्स है। कहाँ है ख़ुदा की क़ुदरत में यह रिश्ता। चिड़िया-चिड़िया सब

बराबर–उनमें न कोई भाई न बहिन, न बाप न बेटा। बस मेरा मतलब सबसे ऊपर। आलमगीर समझता है मैं उसकी बहिन हूँ–बेवकूफ है–क्या मैं दारा की बहिन न थी? दुनिया में भाई-बहिन ऐसा कोई रिश्ता क्यों हो? बस—

[बिजली का प्रवेश]

बिजली—प्यारी बेगम, हकीम आगया—

रौशन—बुलाओ—

[हकीम का प्रवेश]

हकीम साहिब! आपने अभी तक अपना वायदा पूरा नहीं किया—

हकीम—जी, मैं–हुज़ूर में गुज़ारिश करता हूँ।

रौशन—हकीम साहब, क्या आप रौशनआरा को नहीं जानते–

हकीम—(काँप कर) सल्तनते मुग़लिया को घुमाने वाली बेग़म को मैं बख़ूबी जानता हूँ पर फ़िदवी की गुज़ारिश सुनली जाय। आपके आखिर भाई ···

रौशन—मैं आपसे नसीहत नहीं सुनना चाहती। रौशनआरा सब जानती है।

हकीम—कुछ खुदा···

रौशन—खुदा! अहमकों को चीज़ है ख़ुदा–एक लफ्ज़ में बताओ क्या देर है?

हकीम—बेग़म साहिबा,क्या बतलाना हीहोगा? सुनिये,देर ही देर है।

रौशन—(चीख़ कर) क्या माने? क्या तुमने मुझे धोखा दिया—

हकीम—आप जो समझें-मैं शाहनशाह को ज़हर नहीं दे सका-मेरी कमजोरी—

रौशन—फ़रेब (पैर पटककर) दग़ा-हकीम साहब! मौत तुम्हारे सर पर है।

हकीम—जी, समझ रहा हूँ—

रौशन—जानते हो, किससे बातें कर रहे हो—

हकीम—इंसानी शैतान से, औरत की शक्ल में मौत से—

रौशन—(दाँत पीस कर) हकीम, यह मजाल! बिजली, ख्वाजा रहमत को भेज! दोज़खी कुत्ते, समझले, दुनिया की कोई भी ताक़त अब तुझे नहीं बचा सकती!

हकीम—बेगम रौशनआरा—अन्धी मत बनो, याद रक्खो तुमसे भी ऊपर कोई एक ताक़त है, मेरे मरने से वह नहीं मर सकती। तुम्हारा गुनाह तुम्हें खाजायगा, अब भी सँभल सकती हो, बेगम साहिबा—

रौशन—चुप-चुप—ज़ुबान मत चला।

हकीम—मौत से बढ़कर भारी दुनिया में दूसरी कौनसी चीज़ है—आज मुझे उसका डर नहीं—मुझे कौन चुप कर सकता है—याद रख, ऐ दुनिया के रंग में अन्धी बेगम! याद रख, तेरे यह ज़ुल्म तुझ पर पड़ेंगे और एक दिन तुझे नौ-नौ आँसू रुलायेंगे।

रौशन—मैं कुछ नहीं सुनना चाहती—फ़ातिमा-फ़ातिमा—

[फ़ातिमा का प्रवेश]

इसके मुँह में कपड़ा ठूँस दो-बन्द करदो इसकी बोलती—

[फ़ातिमा कई साथियों के साथ उसके मुँह में कपड़े ठूँस देती है—और एक कपड़े से मुँह बांध देती है]

अब बुला अपने ख़ुदा को-

[ख़्वाजा रहमत का प्रवेश]

रहमत ! इसे लेजाओ—और बोटी बोटी अलग कर डालो ! जाओ—

[रहमत का हकीम के साथ प्रस्थान]

मूर्खों ने .ख़ुदा, अल्लाह, ईसुर, भगवान—कैसे अनोखे नाम रख छोड़े हैं—झूठा डर दिखाने को, बिजली ! बिजली !

[बिजली का प्रवेश]

प्यारी बिजली—इस हकीम ने सब चौपट कर दिया—

बिजली—ऐं ! क्या इसने अपना काम नहीं किया ?

रौशन—नहीं किया ! पर इससे क्या ! आज आख़िरी दिन है। आज रौशन .ख़ुद अपना काम पूरा करेगी—

[बड़ा भीषण रूप धारण करलेती है। बिजली डर जाती है।]

घबड़ाओ मत, बिजली, जो भी रुकावट डालेगा उसे कुचल दूँगी। रौंद दूँगी।

[फ़ातिमा का प्रवेश]

क्या है ?

फ़ातिमा—ढाँड़ेर के कश्कुकीराय हज़ूर में हाज़िर होना चाहते हैं—

रौशन—उँह ! अच्छा भेजदो [शीशे के सामने अपने को सँभाल कर]

अच्छा, बिजली जाओ, रात को तैयार रहना—

[बिजली का प्रस्थान]

[कंचुकीराय का प्रवेश]

कंचुकी—मैंने तो कहा था न, फ़ौरन, देखो न, फ़ौरन बुलाया—क़द्र ऐसे को जाती है--बेगम साहिबा का इन्तज़ाम है, कहीं ख़ामी थोड़े ही पड़ सकती है—अहा कैसा रौब है—मैंने तो कहा था न, ऐसी ग़रीब परवरिश

[बहुत झुक कर प्रणाम करता है]

मैंने तो कहा था न, सच बेगम साहिबा चारों ओर आपके इन्तज़ाम की धूम है। वाक़यी, आप सच मानिए। लो आपको यक़ीन नहीं होता। यह आपकी ऐन इनकिसारी है। यक़ीन मानिए बेगम साहिबा—जो भी रास्ते में मिला—उसी ने आपकी रिआया परवरी की—बुलन्द तारीफ़ की! मैंने तो कहा था न—

रौशन—राजा साहब!

कंचुक—जी—जी—मैंने तो कहा था न—क्या हुक्म है सरकार?

रौशन—आख़िर आपको कुछ कहना है—मुझे ज़्यादा वक़्त नहीं—

कंचुकी—सो तो होगा ही—मैंने तो कहा था न—भला इतनी बड़ी सल्तनत! फ़ुरसत कहाँ है! क्यों? बेगम साहिबा, पूछलूँ, रात को भी भारी काम—

रौशन—सीधे अपना मतलब कहिये—बस—

[कुछ दृढ़ स्वर]

कंचुकी—जी ग़लती हुई--आप नाराज़ तो नहीं हुई--क़िस्सा मुख्तसर यह है कि रणदूलहख़ाँ को छत्रसाल-चम्पतराय ने गिरफ्तार कर लिया--रणदूलहख़ाँ ने मुझे भेजा है-एक कटार दी थी—उसी के—

रौशन—कटार-कटार ! कहाँ है, देखूँ-

कंचुकी—[सकपका कर] जी--जी--जी···

रौशन—जी क्या, कटार दिखलाइए—

कंचुकी—साहिबा, कटार तो छत्रसाल ने छीन ली—

रौशन—उस लड़के ने छीन ली,

[फ़ातिमा का प्रवेश]

फ़ातिमा-यह राजा साहिब कुछ जाल रच कर आए हैं। रणदूलहख़ाँ सिपहसालार कहीं छोकरोंके चक्कर में आसकता है ? जेलखाने में इनकी ख़िदमत का इन्तज़ाम करो-जब तक असली भेद न मालूम हो वहीं रक्खो-

[फ़ातिमा और कंचुकीराय का प्रस्थान]

रौशन के साथ फ़रेब नहीं होसकता-चलूँ-समय होगया—

[प्रस्थान]

प टा क्षे प

दिल्ली-मार्ग

[चम्पतराय, छत्रसाल तथा दलपति का प्रवेश]

चम्पत—देखो, यही दिल्ली है। यहीं इन्द्रप्रस्थ में कभी पाण्डवों की राजधानी थी। वही दिल्ली आज मुग़लों के आधीन है। जिस तख्त पर कभी अकबर बैठा था, उसी पर अब औरंगज़ेब विराजमान है-पर अब वह श्री नहीं रही-

छत्र०—क्यों-पिताजी ! यहाँ आप ठहरेंगे कहाँ ?

दलपति—महाराज जयसिंह के यहाँ।

दलपति—जयसिंह तो वही न, जो आमेर के राजा हैं ?

चम्पत—हाँ।

[प्रस्थान]

पटाक्षेप

–यमुना तट–

रात्रि

[बदरुन्निसा का प्रवेश]

बद०—यमुने ! तू कलकल छलछल करती हुई, प्रमोद क्रीड़ाओं में मग्न बही चली जारही है। आशंका, अविश्वास, बन्धुद्रोह से तेरे हृदय में न कुछ तूफ़ान है–न मलिनता। तुझे क्या है, मेरे हृदय में कैसा ही मन्थन क्यों न हो। मुझे चिढ़ाने के लिये बार-बार तट पर आकर लौट जाती है। तेरे अन्दर भी दया नहीं। तेरे हृदय में भी सहानुभूति नहीं। क्या सारा संसार रौशनआरा की चटसार में पढ़ा है? कैसा कठोर हृदय है? रौशनआरा—कहाँ चला गया तेरे हृदय का वह गुण जिससे मनुष्य मनुष्य बनता है। जिससे स्त्री की शोभा है। हमारे इस हिन्दोस्तान में भाई और बहिन के प्रेम से बढ़कर दूसरी कौनसी वस्तु है–पर तू उसी का तिरस्कार कर रही है–हृदय में इतनी निठुरता कहाँ से आयी।

[कुछ चुप हो जाती है]

आज यह रात्रि भी रौशनआरा के हृदय की तरह महाकाली महाभयावनी है। भगवन्–भगवन्–धर्म का ऐसा निरादर, तुम्हारी ऐसी फजीहत–क्या संसार से सभी मानवी सुन्दर गुणों का लोप हो जाना चाहता है ? पिताजी–धर्म पूत पिता जी ! जिनका बाल-बाल इसलाम धर्म की पवित्र भावना उद्घोषित करता है–वही आज एक नापाक औरत के हाथों, स्वार्थ की वेदी पर बलि चढ़ा दिये जायँगे। और तुम यों ही देखते रह जाओगे।

[चुप हो जाती है]

पिताजी तुम जा रहे हो–जाओ। जहाँ बहिन भाई को भाई न कह सके वहाँ तुम्हारी पवित्र धर्म-भीरु आत्मा का न रहना ही ठीक है। जाओ–तुमसे पहले मैं चलती हूँ। वहाँ उस तेजमय लोक में जहाँ प्रेम ही प्रेम है। जहाँ दुःख नहीं, दाह और स्वार्थ का अन्धकार नहीं, वहाँ चलती हूँ। रहे, अकेली रौशनआरा, पिशाचिनी रहे। और इस सारे संसार को पिशाच बनादे।

अहः यमुने, तेरा हृदय कितना विशाल है। न तुझे किसी से परहेज, न किसी से घृणा। तू अपनी मधुरवंशी बजाती हुई कलकल करती चली जाती है। आज इस ईश्वर-शून्य संसार से तू ही मुझे मुक्ति दे सकती है–यमुने ! मुझे स्थान दे–ले।

[कूदना चाहती है—छत्रसाल झपटकर उसका हाथ पकड़ लेता है]

छत्र०—ठहरो—

बद०—न, मुझे जाने दो, इस भयानक संसार से मुझे चली जाने दो। तुम कोई हो, मुझ पर रहम करो।

छत्र०—बहिन, आत्मघात पाप है। जिस ईश्वर ने तुम्हें बनाया है, उसके साथ विश्वासघात है।

बद०—[रुकती हुई] कौन हो तुम—मुझे बहिन कहने वाले! ईश्वर की दुहाई क्यों देते हो? इस दुनियाँ में ईश्वर कहाँ रहा है। बहिन भाई का खून पीने को जीभ लपलपाती खड़ी हो और वज्र न गिरे! ईश्वर फिर कहाँ है?

छत्र०—बहिन—क्या बात? इस सृष्टि में ऐसा भी है? तुम क्या कह रही हो? तुम्हें क्या दुख है—तुम संसार से इतनी हताश क्यों हो?

बद०—तुमने मुझसे बहिन कहा?

छत्र०—हाँ, क्षत्रियों के लिये सारी स्त्री जाति दो रूपों में आती है, माता अथवा बहिन—बस, वही स्वाभाविक सम्बन्ध उसका सृष्टि की सारी जाति से है। तुम मेरी बहिन हो।

बद०—तो तुम मेरे भाई हो। मैं तुम्हारा नाम-धाम नहीं जानती फिर भी तुम्हारी बात में कुछ ऐसा आकर्षण है कि मुझे विश्वास करना पड़ता है। तुम मेरे भाई हो।

छत्र०—बहिन।

बद०—भाई।

छत्र०—बहिन, अब अपना परिचय दो। और बताओ—तुम इतनी दुखी क्यों हो? क्षत्रिय की बहिन, भाई के रहते कभी

संकट नहीं उठा सकती। तुम निश्चय समझो तुम्हारा शत्रु कुशल नींद नहीं सो सकता।

बद०—भाई-मैं हतभाग्य शाहनशाह औरङ्गजेब की पुत्री हूँ।

छत्र०—औरङ्गजेब की पुत्री-बदरुन्निसा ! तुम मेरी बहिन ! आखिर तुम्हें क्या दुख ?

बद०—तुम कौन हो भाई ? तुम भी तो बताओ—

छत्र०—मैं--महेवा के राजा चम्पतराय का पुत्र छत्रसाल—

बद०—वीर छत्रसाल ! वही छत्रसाल जिसने आलमगीर औरङ्गजेब की नाक में दम कर रक्खा है---वही छत्रसाल मेरा भाई !

छत्र—बहिन, जाने दो—वह तो स्वत्व और अधिकार की बात है, उससे दुखी मत हो। यह सब होने पर भी छत्रसाल तुम्हारा भाई है। तुम अपना संकट बताओ।

बद०—भाई-मेरे पिता की बहिन रौशनआरा मेरे पिता के ख़ून की प्यासी हो रही है। उसने विष का प्रयोग कराना चाहा पर असफल हुई। अब वह आज मध्य रात्रि को ख़ुद अपने हाथ से अपने भाई का सिर धड़ से अलग कर देगी—अहो ! कैसी विडम्बना है ! मुझे संसार से घृणा होगई है। क्या सारा संसार ऐसे ही हिंस्र पशुओं से भरा है—भाई ! मेरी यह याचना है-यदि तुम बचा सको तो बचाओ मेरे पिता को--पर वह तुम्हारे शत्रु—

छत्र०—बहिन! शत्रुता का नाता राजनैतिक नाता है। वह नैतिकता का पतन है। और बहिन का नाता दिव्य नैतिक नाता है।

क्षत्रिय के लिये नैतिकता सब से बढ़ कर है। बहिन तुम्हारे हित के लिये छत्रसाल अपनी शत्रुता भूल जायगा। छत्रसाल किसी के प्राणों का ग्राहक नहीं वह तो केवल स्वतन्त्रता का पुजारी है। उस स्वतन्त्रता का—बहिन, जहाँ सभी मनुष्य मनुष्य हैं—जहाँ राजा और प्रजा में संघर्ष नहीं, वरन् प्रेम और सहयोग है। राजा प्रजा का, प्रजा राजा का। जहाँ दमन और अत्याचार नहीं। जहाँ धर्म के अन्धविश्वास बाधक नहीं। जहाँ मुसलमान होते हुए भी तुम मेरी बहिन, जहाँ हिंदू होते हुए भी मैं तुम्हारा भाई। बस यही स्वतन्त्रता मैं चाहता हूँ। और इस मानवीय अधिकार के लिए संघर्ष जीवन है। मैं—बहिन निश्चिंत रहो, ठीक समय पर तुम्हारे पिता की रक्षा करूँगा। मैं धन्य समझूँगा यदि बहिन के कुछ काम आ सका—

[प्रस्थान]

दू०—कैसी वीर मूर्ति है। यदि हिन्दू स्त्रियाँ अपने भाई पर अभिमान करती हैं तो आश्चर्य क्या? एक ओर सगी बहिन रौशनआरा अपने भाई का खून पीने को तैयार—एक ओर नाम बोला भाई छत्रसाल नाम बोली बहिन के लिए अपने शत्रु की प्राण-रक्षा के लिये तैयार—धन्य ईश्वर तेरी लीला! तू कैसे किसी की रक्षा करता है—यह कुछ समझ में आरहा है—धन्य है—

पटाक्षेप [प्रस्थान]

औरङ्गजेब का शयन-मन्दिर

[औरंगजेब सो रहा है धीरे धीरे रौशनआरा का प्रवेश]

रौशन—आज यह काली रात औरङ्गज़ेब की मौत के राज़ को हमेशा के लिए अपनी काली चादर में ढक रखे। अब तो एक मिनट में औरङ्गज़ेब का काम तमाम हो जायगा। बेवकूफ़ हकीम, रौशनआरा को इतना कमज़ोर समझ रखा था। अपनी जान और खो दी। [तलवार तौलती हुई] औरंगजेब जाओ, इस दुनिया से कूच कर जाओ। जिसे रौशनआरा नहीं चाहती वह एक लहमा भी इस दुनिया में नहीं रह सकता। [तलवार चलाना चाहती है, रुक कर] हैं ! कौन है—.खुदा का नाम कौन लेता है—खुदा कुछ नहीं। देखें, .खुदा औरंगज़ेब को कैसे बचाता है—सोओ-.खुर्राटे लेकर सोओ—ऐसे सोओ कि फिर सवेरा ही न हो—

[तलवार उठाकर मारना चाहती है। रुक जाती है]

यह क्या, दिल बैठता क्यों है ? यह मेरा भाई है—भाई, ऐसी कोई चीज़ इस दुनिया में नहीं। रौशनआरा पोच नहीं बनेगी—औरंग को अब कोई नहीं बचा सकता—

[तलवार मारती है—छत्रसाल एकदम प्रवेश करके उसका हाथ पकड़ लेता है]

छत्र०—मारने वाले से बचाने वाला बढ़ कर है। रौशनआरा ! ज़रा समझो। इस संसार में तुम्हारा नहीं ईश्वर का शासन है—औरंगज़ेब की तो बात क्या तुम ख़ुद अपने को नहीं मार सकतीं—

रौशन—छोड़ दो—कौन हो—अह:

[औरङ्ग़ेब जग पड़ता है, उठकर]

औरंग०—ऐं—यह क्या ?

[चित्रवत्]

प टा क्षे प

औरंगज़ेब का दरबार

[औरंगज़ेब का छत्रसाल और चम्पतराय के साथ प्रवेश]

औरंग०—(बैठकर) आज मैं शायद आपके इस जशन को न देख सकता—आज शायद आप लोग मेरा मातम मनाते होते। मेरे ऊपर जो मौत का पञ्जा आज रात को पड़ा था उससे इस वीर बुन्देले सरदार चम्पतराय के लड़के छत्रसाल ने मुझे बचाया। मेरा बाल-बाल इसके अहसान से दबा हुआ है। चम्पतराय तुम बड़े खुशक़िस्मत हो। वीर छत्रसाल! माँगो जो तुम्हें माँगना हो। तुमने आज औरंगज़ेब को अज़सरे नौ ज़िन्दगी बख़्शी है।

छत्र०—शाहंशाह आलमगीर! मैंने केवल अपना कर्त्तव्य किया। अन्यायी के हाथों से प्राणीमात्र के प्राणों की रक्षा करना हम क्षत्रियों का पावन धर्म है। क्षमा करें। आपने हमें यह आदर प्रदान किया, यही बहुत है। क्षत्रियों को माँगने की आदत नहीं होती।

औरंग०—नहीं छत्रसाल, मुझे भी तो कुछ करने दो। माँगो आज माँगो—

छत्र०—आपका आग्रह है शाहंशाह, तो छत्रसाल एक चीज माँगता है—उसके जीवन में वही एक वस्तु है। क्या आप उसे देंगे जहाँपनाह।

औरंग०—छत्रसाल तुम्हारी खातिर मुझे दिलोजाँ से मंजूर है, ऐसी दुनिया में कोई शै नहीं जिसके देने में मुझे दरेग़ हो सके। तुम माँगो तो।

छत्र०—जहाँपनाह! यदि इतनी कृपा है तो बुन्देलखण्ड को स्वतन्त्रता दीजिये। बस—

(औरंगजे़ब आश्चर्य से देखता है, फिर चिन्तित हो जाता है)

छत्रसाल,—तुम्हारी हुब्बुलवतनी काबिले तारीफ़ है। पर अभी बुन्देलखण्ड इतनी तरक़्क़ी नहीं कर पाया—कुछ समझ से काम लो। कुछ और माँगो—

चम्पत—बस—छत्रसाल—[छत्रसाल को रोकता हुआ औरंगजे़ब से]

शाहंशाह! हम भिखारी नहीं। हमने अपना अधिकार ही माँगा है—वह अधिकार जिसे आपने हरण कर लिया है। वही हमें मिल जाना चाहिए। आप यदि अपनी बात से हटना चाहें, खुशी से हट जायँ, पर वीर बुन्देलों की बात एक होती है। बुन्देलखण्ड स्वतन्त्रता चाहता है, और कुछ नहीं—यदि दे सकते हैं तो दें—

[चुप होकर औरंगजे़ब की ओर देखता है—]

न सही, यह कोई आशा के ज्यादा विरुद्ध नहीं। चलो छत्रसाल! इस प्रकार का अपमान नहीं सह सकते—

छत्र०—शाहंशाह, आपसे प्रार्थना की गई। यदि आप प्रसन्नता से नहीं दे रहे हैं, तो आप देखेंगे इन्हीं बाहुओं के बल से बुन्देले अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त करेंगे। वह चेत गये हैं, उन्हें आप अधिक धोखे में नहीं डाल सकते।

औरंग०—इतनी बेअदबी। जानते हो छत्रसाल! किससे बातें कर रहे हो—

छत्र०—खूब जानता हूँ, कह कर मुकर जाने वाले से, धर्म को मनमाना रूप देकर उसे बदनाम करने वाले से, हिन्दू मुसलमानों में कलह का बीज बोकर भारत के भविष्य को सदा के लिए गन्दा कर जाने वाले से, बातें कर रहा हूँ।

चम्पत०—बेटे!

छत्र०—क्षत्रिय सचाई से नहीं हट सकता। दुनिया की सारी शान-शौकत का रौब भी उसे स्पष्टवादिता से नहीं रोक सकता। मैं जाता हूँ औरंगजेब, अगर ताक़त हो तो रोक लो—

[प्रस्थान करना चाहता है]

प टा क्षे प

पहला अंक समाप्त

[रौशनआरा बेग़म का महल]

रौशन—रौशन ! रौशन ! आज तुझे मात हो गयी। क्या अब भी तू सर उठाकर चल सकेगी ! क्या अब भी तू अपने बड़प्पन की डींग मार सकेगी ! छत्रसाल—उस कल के बच्चे ने तेरी सारी शान मिट्टी में मिला दी।

[अफ़सोस में सिर नीचा करके बैठ जाती है]

उफ़—उफ़—मैं कहीं की भी न रही—(भारी साँस लेती है शीशे की ओर जाकर भय से पीछे क़दम रखती हुई, शीशे की ओर घूरती हुई) यह कौन ! यह कौन ! मेरी ही सी यह शक्ल कौन है ! आज—आह...रौशनआरा, तेरी शक्ल ही तुझ पर आज हँस रही है—क्यों—आज रौशनआरा का इरादा नाकाम हो गया—नहीं, मैं अपनी हँसी नहीं बर्दाश्त कर सकती। (शीशे में ज़ोर से लात मारती है—शीशा झनझना कर चूर-चूर हो जाता है रौशन-आरा का अट्टहास) हः हः हः, और हँसी उड़ा मेरी, और उड़ा ! छत्रसाल—छत्रसाल—तू मेरे जिगर में काँटे की तरह गड़ गया है। तू मेरी ज़िन्दगी में तूफ़ान बन गया है। आह, दुनिया हँसेगी—दुनिया। रौशन-आरा कुछ भी न कर सकी—

[चुप होकर आकाश की ओर ताकने लगती है]

चाँद कैसा खिलखिला कर हँस रहा है-मुझी पर हँस रहा है। आज यह रोज का चाँद नहीं जो रौशन-आरा की सूरत देख कर ही मुरझा जाता था, आज यह वह चाँद नहीं! रौशनआरा इतनी गई गुजरी हो गयी। ये सभी ख़ुदा के हिमायती आज मुंह बना बना कर मेरी ओर ताक रहे हैं। ख़ुदा-ख़ुदा! जा! मैं तुझे ऐसी आसान फ़तह पर खुशी न होने दूंगी। रौशनआरा ने इस मक्कार दुनिया को ख़ूब देखा है। उसने अपने इशारे से-अपने हुक्म से जब चाहा तब सूरज को तुलू किया जब चाहा तब ग़ुरुब किया। जरासी उँगली हिलाने पर तूफ़ान उठा दिया—वही रौशनआरा-यों लोगों को अपने ऊपर न हँसने देगी। ख़ुदा! आज तक मैं तेरी नाक में नकेल डाले रही-और आज भी तेरी सारी कारस्तानी मिट्टी में मिला दूंगी। तू मुझे मुसीबत में डालना चाहता है और फिर मेरी हँसी उड़ाना चाहता है। पर यह नहीं होगा-रौशन की अगर अपनी दुनिया नहीं रहेगी तो वह इस दुनिया में रहेगी भी नहीं। बस।

[तलवार निकाल कर अपने वक्ष पर रखना चाहती है]

रौशनआरा की रूहेली—आ, तू मेरे दिलसे लगजा। दुनिया जानले रौशनआरा जिस आन और शान से आई, उसी अदा से इठलाती हुई चली गई। शुरू से आखिर तक वह शराब के शरूर की तरह बराबर लाल बनी रही—दुनिया कहे कि रौशन के

ऊपर किसी को आँख उठाने की हिम्मत न हुई—

[अपने वक्ष पर रख लेती है]

एक लहमा और-बस, यह रोशनी आसमान के पुंछल तारे की तरह एकदम निकल कर फौरन छुप जायेगी—जब तक वह चली हुई कोई रोक न सके—बस !

[तलवार पर जोर देती है—औरंगजेब का प्रवेश

औरंग—रौशनआरा ! [कठोर स्वर में]

[रौशनआरा की कटार हाथ से छूट कर जमीन पर गिर पड़ती है]

रौशनआरा ! अह: इलाही की कुदरत को मिटाना चाहती है—रौशनआरा ! अच्छा मैं चुप खड़ा हूँ—मार, मार ले अपने तलवार ही मार ले। देखूँ मार सकती है—

रौशन०—[थर थर काँपती है] कौ··न,···शै· ता··न··

औरंग०—अह:, यह शैतान होती है, नापाक और बदख्याल लोगों का। रौशनआरा, क्या तू शैतान को मानती है ! हैं—यह ताज्जुब है। आँखें खोल कर देख, मैं तेरा भाई औरंगजेब हूँ। कितना और, खुदाने जिसे जन्नत बनाया, जिसे बहिश्त बनाया उसे तू दोजख क्यों बना रही है ? क्यों ? क्यों इसलाम के नाम को बदनाम करती है ? मक्कार,

रौशन—[लौट कर] औरंगजेब ! आज तुम्हें भी इतनी हिम्मत हो गयी। मक्कार कहते हो. कितना कहते हो ! जानते हो औरंगजेब रौशनआरा को ! बोलो—किसने तुम्हें आज आलमगीर बना रखा है ! शर्म करो—औरंगजेब, पर यह दिनों की गरदिश है। मैं यह देखना चाहती थी कि जिसे मैंने इस आलम

के तख्त पर बैठाया है—उसे मैं मिट्टी में मिला सकती हूँ या नहीं। मैंने एक खिलौना बनाया, मैं उसे बिगाड़ना चाहती थी। क्या बुरा था, औरंगजेब ? बता क्या बुरा था ? मुझे मक्कार बताता है। मेरी उँगलियों के खिलौने, आज तू मेरे सिर पर सवार होने चला है। आज एकदम तेरी हालत में यह तबदीली। अफ़सोस !

औरंग०—[क्रोध में आकर तलवार रौशन की ओर बढ़ाता है] एक बार में सर और धड़ अलग हो सकते हैं। [हाथ चलाता है, पर रुक कर] ऐं, नहीं। पर तू मेरी बहिन है।

[बदरुन्निसा का प्रवेश]

बद०—अब्बा ! यह आपकी बहिन हैं—मेरी खाला हैं। आप इन्हें माफ़ कीजिये।

औरङ्ग०—अच्छा बेटी ! माफ़ किया।

बद०—अब्बा—

औरङ्ग०—बेटी, क्या और कुछ कहना है—

बद०—हाँ अब्बा, बुन्देलखण्ड को खुदमुख्तार करदो अब्बा !

औरङ्ग०—बेटी यह कौनसा वक्त था ऐसी बात करने का ?

बद०—अब्बा—छत्रसाल ने आपकी जान बचाई।

औरङ्ग०—बेटी ! पर—सल्तनत तो अकेले औरंगजेब की नहीं। औरंगजेब रहे या न रहे, पर सल्तनत फिर भी रहती। औरंगजेब में यह ताक़त नहीं कि सल्तनत को कम कर सके।

बद०—अब्बा—तो आप नहीं करेंगे ? नहीं कर सकेंगे ?

औरंग०—नहीं कर सकूँगा, बेटी !

बद०—अच्छा, अच्छा, तो आज बदरुन्निसा इन महलों को छोड़ जायगी—जहाँ अमन नहीं, जहाँ सल्तनत का मतलब ग़रीबों का ख़ून चूस कर अपने ख़ज़ाने को भरना और फिर उसे ख़ून बहाने के लिए ख़र्च करना हो, अब्बाजान वहाँ बदरुन्निसा नहीं रह सकती—अब्बाहुज़ूर की इस वसीय अमलदारी में वह कहीं ऐसी जगह जायगी जहाँ आदमियों में आदमी के लिये दर्द होगा। यह देखेगी कि आदमी ग़ुलामी से निकल कर अपनी आदमियत को समझ सके। जाती हूँ, अब्बाजान !

[प्रस्थान, औरंगज़ेब बदरुन्निसा की ओर बढ़ता है, रौशन औरङ्गज़ेब की ओर बढ़ती है।]

प टा क्षे प

[ओड़छे का दीवानखाना]

[बुन्देलखण्ड के सभी राजा एकत्रित हैं। पहाड़सिंह, हीरादेवी और शुभकरण मुख्य पात्रों में से हैं।]

हीरा—बुन्देलखण्ड के वीर राजकुमारो! आप मुझे क्षमा करेंगे यदि मैं यह बतलाऊँ कि आज आपको यहाँ एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रश्न पर विचार करने के लिये कष्ट दिया गया है। क्या हम लोगों में स्वाभिमान नहीं रहा? क्या हम लोगों को नसों में वीर-रक्त नहीं? फिर हमें अपमानित क्यों किया जाता है? मेरे हाथ में आप यह पत्र देख रहे हैं?

कालिञ्जराधिपति—यह तो महेवा के राजा चम्पतराय का पत्र है—

हीरा—निस्सन्देह! इस पत्र को आपने पढ़ा होगा—

दूसरा राजा—पढ़ा है, खूब पढ़ा है। पढ़ कर नसों में वीर-रक्त दौड़ने लगता है। बुन्देलखण्ड को हम लोग परतन्त्र न होने देंगे।

हीरा—बिलकुल ठीक। मैं समझती हूँ, कि हम बुन्देलों में वीरों की कमी नहीं—जो जाति स्वतंत्र होने के लिये अपना

बलिदान कर देना चाहती है, वह धन्य है! आप लोगों का ऐसा विचार धन्य है! ठीक, आप परतंत्र होना नहीं चाहते ?

सब—निस्सन्देह।

हीरा—आप परतंत्र होना नहीं चाहते ? कितना पवित्र विचार है आप लोगों का! आप सब चम्पतराय का साथ देंगे ? ठहरिये–सुन लीजिये–आप लोगों ने इस पत्र को पढ़ा है ? फिर इसके कुछ शब्दों पर विचार कीजिये। और, परतंत्र नहीं होना चाहते यह तो ठीक, पर क्या आप अपमानित होना चाहते हैं ?

सब—हरगिज नहीं–

हीरा—इस पत्र में लिखा है–'बुन्देलखण्ड की रक्षा के लिये सभी राजकुमार आवें–अपनी सेनाओं को सुशिक्षित बना कर उन्हें साथ लावें। स्वतंत्रता के इस महायज्ञ में जो आहुति नहीं देगा उसे गौ-ब्राह्मण-हत्या का पाप लगेगा।'

सुना आप लोगों ने! इन शब्दों को सुनकर भी यदि आपका स्वाभिमानी हृदय न तिलमिलाये, यदि आपकी स्वतंत्रता की भावना न व्यथित हो उठे तो धिक्कार है आपकी समझ को। चम्पतराय हम जैसा ही एक राजा है, उसे शाहंशाह औरंगजेब की तरह यह आज्ञा निकालने का क्या अधिकार है ? आप परतंत्र नहीं होना चाहते ? चम्पतराय की इस अहंकार से भरी आज्ञा को आप चुपचाप सुन सकते हैं! फिर उसका ईश्वरीय

दावा—'पाप लगेगा'। चम्पतराय—मामूली से महेवा प्रदेश का एक शासक! आप जैसे बड़े-बड़े वीरों को कहता है—पाप लगेगा—जैसे धर्मराज हो! स्वार्थी है चम्पतराय! आप सब लोग जायँ—और प्रसन्नता पूर्वक स्वतंत्रता के नाम पर कपटी चम्पतराय की स्वार्थ लिप्सा के अधीन हो जायँ। औरंगजेब की बजाय—सारे हिन्दुस्तान पर शासन करने वाले बुलन्द इक़बाल न्यायी सम्राट को छोड़ कर एक छोटे से प्रदेश के मामूली राजा के गुलाम हो जायँ—अपने क्षत्रियत्व को भूल जायँ। पर ओड़छा-ओड़छा ऐसा कायर नहीं—ओड़छा अपने स्वाभिमान को नहीं छोड़ सकता—जिससे बराबरी का नाता—उसके आधीन हुआ जाय! क्यों मान्य कालिंजराधिपति जी?

कालिं०—बेशक-हम लोगों का अपमान हुआ है। चम्पतराय अपना स्वार्थ-सिद्ध करना चाहता है। हम उसकी महत्त्वाकांक्षा को कुचल देंगे।

शुभकरण—हीरादेवी की बात पर आपने क्या विचार किया है?

कालिं—हम चम्पतराय का विरोध करेंगे—

शुभ—आप लोगों में अकेले भी यह शक्ति है कि उसका विरोध कर सकें। पर, नीति कहती है कि शत्रु के शत्रु से मित्रता करो। सब औरंगजेब की सहायता करके चम्पतराय का दर्प चूर्ण करदो—फिर अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करलो।

सब—ठीक! हम सब तैयार हैं।

पहाड़सिंह—मेरे विचार में सब का नेतृत्व शुभकरण के हाथ

में हो। शुभकरण सा वीर सेनापति हमारे गर्व का कारण है।

सब—बिलकुल ठीक—

हीरादेवी—तो शुभकरण सेनापति बनाये गये। हमें विश्वास है कि हमारी जय होगी—

[किशुन झाँकता है]

पहाड़—कौन झाँक रहा है ?

[सब चौकन्ने होते हैं। किशुन का प्रवेश]

हीरा—अच्छा, किशुन ! तुम तो दिल्ली गये थे ? तुम्हारे राजासाहब कंचुकीरायजी अभी उस काम को करके नहीं लौटे?

किशुन—कुछ न पूछिये—

हीरा—क्यों ? क्या कुछ नया समाचार है ?

किशुन—सब नये समाचार हैं। राजा साहब को गिरफ्तार कर लिया—

हीरा—(आश्चर्य से) राजासाहब को गिरफ्तार कर लिया ! रौशनआरा ने कर लिया ! आखिर क्यों ?

किशुन—क्यों का जवाब मुश्किल है ! केवल इतना सुना है कि वे गिरफ्तार हो गए-और—

हीरा—और क्या ?

किशुन—और, छत्रसाल ने शाहंशाह औरंगज़ेब के प्राण बचाए। शाहंशाह ने खुश होकर पंचहज़ारी मनसब दिया।

हीरा—ऐं ! क्या कह रहा है ? छत्रसाल दिल्ली में !

किशुन—जी, मैं ने अपनी आँखों से देखा। औरंगजेब ने भरे दरबार में छत्रसाल का अहसान स्वीकार कर लिया—

शुभकरण—छत्रसाल ने ! और यहाँ यह ढोंग ! सबको औरंगजेब के खिलाफ भड़काने का प्रयत्न किया—ओफ़—क्यों ? क्या फिर छत्रसाल ने वह मनसब कर स्वीकार कर लिया ?

किशुन—नहीं, वे उसे लात मार कर चले आए। पर औरंगजेब उनसे बहुत खुश प्रतीत होता है।

[हीरादेवी चिंतित हो जाती है]

एक—अच्छा !

दूसरा—ऐं !

तीसरा—आखिर यह हुआ क्या ?

चौथा—बड़ा मक्कार है चम्पतराय !

हीरा—(कुछ प्रसन्न होते हुए) अच्छा, वह कहाँ हैं अब ?

किशुन—अब थोड़ी देर में ओड़छा होकर ही निकलने वाले हैं।

हीरा—अच्छा-अच्छा, यह बात है, जिसने शाहंशाह के प्राण बचाये हैं, ओड़छा उनका सम्मान करेगा। क्यों राजासाहब ?

पहाड़—तुम्हारा विचार ठीक ही है। तुम जो कहती हो ठीक ही कहती हो।

हीरा—अच्छा तो अब आप लोग विश्राम करें, मैं चम्पतराय के स्वागत का प्रबन्ध करूँ।

[धीरे-धीरे सब का प्रस्थान]

स्थान—मार्ग

[विजया का गाते हुए प्रवेश]

गाना—

प्रेम-भाव की मंजुल लहरी, लहरादें जग-अम्बर में ।
उसकी सकरुण मूर्ति बनाकर, पूजें मानस-मन्दिर में ।
घन-विद्युत-सा कल कलाप हो, गरज और चमकाहट में ।
मिल कर दोनों ही जल बरसें, सरसैं सरिता औ सर में ।
सुरभि और सुन्दरता बनलें, जाग्रत हों बन माला में ।
सबको मुग्ध लुभालें, भरदें, पावनता जग-अम्बर में ॥

विजया—कैसा मन उचट रहा है। यह बुन्देलखण्ड आज चारों ओर ऊसर सा लग रहा। सबके सब निश्चेष्ट, किसी को मार खाने को ताक रहे हों। ओड़छे में यह समारोह मनाया गया। छत्रसाल और चम्पतराय का कितने धूमधाम के साथ स्वागत हुआ। पर मुझे उसमें कहीं रस, कहीं हृदय न दीखा—

[विमल का प्रवेश]

विमल—हृदय कहीं हृदयहीन को दीख सकता है ।

विजया—विमलदेव ! तुम आ गये। कुछ सोचा है ?

विमल—क्या ? मैं तो यही सोचता हूँ—मैं क्या हूँ ?

विजया—तुम क्या हो ? इसे सोचना थोड़े दिनों के लिए छोड़ दो। कुछ प्रबन्ध करो—कल हमारे देश के वीर-रत्न, अपने सारे स्वार्थ को देश की रक्षा के यज्ञ में आहुति देने वाले चम्पतराय की मृत्यु तुम्हारी माँ के षडयन्त्र से होना निश्चय है। क्यों ? विमल—क्या तुम कुछ सहायता कर सकते हो ?

विमल—क्या करना होगा विजया ?

विजया—बस, आज रात को मुझे चम्पतराय के शयन-मन्दिर में पहुँचाना—

विमल—विजया ! तुम निश्चिन्त रहो। यह कोई बड़ी बात नहीं। उन वीर-रत्न की प्राण-रक्षा के लिए मैं सब कुछ कर सकता हूँ। मैंने विचार कर लिया है—मैं इसके अतिरिक्त और भी देश का काम करूँगा।

[दोनों का प्रस्थान]

प टा क्षे प

स्थान–ओड़छा

[चम्पतराय का शयन-मन्दिर]

[चम्पतराय और छत्रसाल सो रहे हैं]

[विजया का प्रवेश]

वेजया—वीर भी सोया करते हैं ? इनकी शय्या बाणों की अनी और तलवार की धार है। यह वीर छत्रसाल है। कैसा मुख है, सोते हुए भी हृदय की दृढ़ वीरता मुख पर सेब-की लाली की तरह झलमला रही है। ओठ मानों अभी कुछ मीठी बात बोलना चाहते हैं। विमल ने ठीक ही कहा था, यह मूर्ति हृदय से लगा लेने लायक है–यह वीर, सो रहा है, इसके हृदय में क्या है ? यह कैसा ऊपर-नीचे हो रहा है, वीर के हृदय का प्रेम–वीरतामय होरहा है। प्रेम के विना कभी वीरता हो सकती है ? प्रेम—पर नहीं–जब तक देश स्वतन्त्र नहीं होता प्रेम विलास कहलायगा, बहके मत हृदय–ठहर—

[वहाँ से झपट कर चम्पराय के पास पहुँचती है]

यह वीर है। भुजाऐं कितनी प्रवल, वक्ष कैसा

विशाल-मानो पहाड़ के पहाड़ इसमें समाए हों। अहः हीरादेवी ऐसे व्यक्ति के साथ तू छल करना चाहती है। हीरादेवी! आखिर तू स्त्री है-तुझमें वीर पुरुष को समझने की शक्ति कहाँ? [पास पहुँच कर] जगा दूँ— बिना जगाए काम नहीं चल सकता—

[पाये में ढक्का देती है]

चम्पत—[उठकर] कौन? देवी-तुम कौन हो? इस रात्रि में इस अन्धकार में देवाकाश की सुरभित तारिका-सी तुम कौन हो?

विजया—तुम सोते हो वीर, तुम्हारी वीरता तुम्हें सो लेने देती है? तुम्हारा रक्त क्या कभी इतना शान्त हो जाता है कि तुम सो सको? वीर, जिस दिन सो जायँगे—

चम्पत—कौन-विजया!-तू सच्ची वीरबाला है। तू विन्ध्यवासिनी-देवी का अवतार है-इस रात्रि में यहाँ क्यों आई बेटी?

विजया—बुन्देलखण्ड के सूर्य! केतु का चक्कर पास आ पहुँचा है। तुम्हारे ग्रास की तय्यारियाँ हो चुकी हैं।

चम्पत—क्या? क्या बात है, विजया?

विजया—हीरादेवी कल तुम्हें विष खिलायेंगी। बड़े-बड़े विषधरों के मुँह से निकलवाकर ताजा विष कल तुम्हारे भोजन में मिला दिया जायगा।

चम्पत—ऐसा? विजया! क्या सच कहती है?

विजया—बिलकुल सच!

चम्पत—तो क्या यह सारा स्वागत-सत्कार इसी लिए था, क्या

इतना उत्साह, इतना चाव इसी लिए था-- ?

विजया--इसीलिए-

चम्पत--इसलिए-अच्छा यही सही। सम्मान पूर्वक विष खाकर प्राण त्यागना स्वीकार है।

विजया—क्या ? स्वीकार है ... फिर यह देश--यह जाति—यह ! क्या तुम्हारे साथ यह भी जहर खाले ? क्या दलपति और विजया के मान का ध्यान नहीं ?

चम्पत—तो जीवित रहूँगा—सब देख लूँगा--पर विजया—विश्वास नहीं होता—हीरादेवी इतना छल कर सकती है। पहाड़सिंह इतने नीच हो सकते हैं--जिन के लिये मैंने सब कुछ किया—पर नहीं, इसे याद करके क्या होगा ? यकीन नहीं होता--विष भोजन में मिलाया जायगा ? विजया झूठ कहती हो क्या ?

[शुभकरण का प्रवेश]

शुभ--विजया झूँठ नहीं कहती। मैं साक्षी हूँ चम्पतराय !

चम्पत--तुम--शुभकरण--मेरे मित्र--

शुभ--दुत, मैं अब तुम्हारा मित्र नहीं--चम्पतराय ! तुम्हारा भीषण शत्रु हूँ—पर इससे क्या मैं झूँठ बोल सकता हूँ ? क्या समझते हो चम्पतराय-क्या मुझ पर विश्वास नहीं।

चम्पत—शुभकरण ! तुम मेरे शत्रु हो। हा-यह क्या ? नहीं-मैं तुम पर अविश्वास नहीं कर सकता ? तुम वीर हो--वीर कभी झूँठ नहीं बोल सकता-तो मुझे विष दिया जायगा ?

शुभ—निश्चय—

चम्पत—तो क्या शुभकरण तुम भी मुझे इसकी सूचना देने आये थे—

शुभ—हाँ ! तुम्हें हीरादेवी के हाथों से बचाने के लिए ताकि तुम मेरी इस तलवार की पिपासा शान्त कर सको। मैं अपने शिकार को यों नहीं मरने दे सकता।

चम्पत—तो फिर आओ क्यों न दो हाथ हो जायँ ! यहीं, इसी समय।

शुभ—मैं कायरों की लड़ाई नहीं लड़ता। चम्पतराय ! मैदान में जहाँ सूरज, वृक्ष, पक्षी सभी साक्षी होंगे, वहाँ मैं अपने शत्रु का वध करूँगा—जाता हूँ। मैं और तुम कभी मित्र थे—पर आज चम्पतराय ! मैं तुम्हारे ख़ून का प्यासा हूँ—जाता हूँ—तुम्हें देखकर ख़ून आँखों में उतरने लगता है।

[प्रस्थान]

चम्पत—जाओ—शुभकरण ! तुम चम्पतराय से शत्रुता रख कर क्या सुख की नींद सो सकते हो ! देश की स्वतंत्रता की पुकार में हाथ फैलाकर मैंने तुमसे सहायता माँगी, तुम आड़े वक्त में पीछे हट गये, पर नहीं कोई चिन्ता नहीं, चम्पतराय तुम्हारी ख़ुशामद नहीं करेगा। वह अपने बाहुओं के बल को भली भाँति जानता है। जहाँ १०० वहाँ एक सौ एक सही—जाओ, पाप करना चाहते हो तो जाओ—

विजया—वीर राजन्—शुभकरण को रुष्ट क्यों कर दिया—

चम्पत०—क्यों कर दिया ? मैं पूछता हूँ—इसने मेरा साथ क्यों छोड़ दिया ? मेरा साथ न सही—अपना धर्म क्यों छोड़ दिया ? विजया मुझे भरोसा है अपनी भुजाओं का—कोई न हो, प्राण रहते मैं देश के लिए लड़ूँगा—

विजया—सारा बुन्देलखण्ड आपका शत्रु है। हीरादेवी ने सबको आपके विरुद्ध भड़का दिया है—

चम्पत०—हूँ-कोई चिन्ता नहीं-विजया। छत्रसाल भी चाहे मुझे छोड़ जाय पर चम्पत अपने ध्येय से नहीं हट सकेगा, वह किसी की चिन्ता नहीं करेगा। उफ़-हाँ विजया-तुम्हारा मैं बड़ा कृतज्ञ हूँ। तुमने मेरा प्रमाद मिटाया। बोलो मैं तुम्हारे लिए कुछ कर सकता हूँ। मेरे लायक कुछ हो तो बताना। याद रख-वीर का रोम रोम कृतज्ञता से दबा रहता है। बस यही एक वीर को दबा सकता है—

विजया—क्या आप एक काम कर सकते हैं ?

चम्पत०—क्या ? तू जो कहेगी वह करूँगा।

विजया—रणदूलहखाँ को मुक्त कर दीजिये।

चम्पत०—रणदूलहखाँ को—रणदूलहखाँ को—विजया क्या कहती है ? क्या तू भी छल करने आई है—ओफ़—यह दुनिया क्या होती जारही है— !

विजया—मेरे पिता—मेरे पिता रोशनआरा की क़ैद में हैं [रोने लगती है] उन्हें मुक्त करा दीजिए। पिता-पिता ! वे

कुछ भी हों, देश-द्रोही–विश्वासघातक–पर मेरे पिता–म्लेच्छों की क़ैद में सुनकर मैं रो पड़ती हूँ। इसीलिए–बस–इसीलिए मैं रणदूलहखाँ को छोड़ने की प्रार्थना कर रही थी।

चम्पत०—बेटी–दुखी मत हो। मैं रणदूलहखाँ को छोड़ दूँगा। मैं देश को मुक्त करूँगा। उस देश का पुत्र देशद्रोही होते हुए भी शत्रु की क़ैद में न रह सकेगा। जा, विजया जा। प्रसन्न होकर जा। तेरे प्रसन्न मुख पर वीर ज्योति झलकती है—

विजया—मैं कृतार्थ हुई—आपसे यही आशा थी—

[प्रस्थान]

चम्पत०—अपने साथी शत्रु हुए जा रहे हैं। कोई अपना ही नहीं दीख पड़ता। पर नहीं साहस नहीं छोड़ूँगा। भगवन्–तुम बल हो–तुम्हीं शक्ति हो—

[छत्रसाल को जगा कर] बेटे !

छत्रसाल—क्या है पिताजी ? आप कुछ व्यग्र क्यों हैं ?

चम्पत०—कुछ नहीं—आओ बेटे ! ज़रा भगवान से प्रार्थना कर लें—सम्मिलित प्रार्थना, बल धैर्य और स्फूर्ति प्रदान करती है। कल से ही तो महायज्ञ शुरू होगा–आओ—

[दोनों घुटने टेक कर प्रार्थना करने लगते हैं]

हमें बल दीजै हे भगवान !
उमड़ घुमड़ काले बादल अब आते घिरे निदान।
शक्ति-स्रोत ! निज शक्ति-तेज से करो हमें बलवान्॥

वह हुंकार भरो इस स्वर में सुन काँपे अभिमान—
गिरि-संकट भी धसक धरा में क्षण में बनें समान ॥
वीर भाव से भरा रहे यह हृदय सदा सज्ञान ।
देश-जाति-जीवन पर हो सब मान-शान बलिदान ॥

[प टा क्षे प]

स्थान–मार्ग

[दलपतिराय का प्रवेश]

दल०—निश्चय हो गया। विना युद्ध काम नहीं चलने का। संसार युद्धमय है। संघर्ष बस संघर्ष—विना इसके जीवन शिथिल और मृतःप्राय है। इसी जीवन की दीक्षा क्षत्रिय लिए होते हैं। वे जीवन चाहते हैं, युद्ध चाहते हैं। कमज़ोर विनय करता है, मिन्नत करता है, वीर अपनी बाँकी आन से आन की आन में काम चला लेता है। औरंगज़ेब समझता है बुन्देलों में वीर-रक्त नहीं—मूर्ख औरंगज़ेब ! कह कर मुकर गया, माँग पेश की, अस्वीकार कर दी। यह चालाकी। मैं पहले ही जानता था। अपमान, घोर अपमान। अहः दलपति इस अपमान को नहीं सह सकता था। अगर मुझे यहाँ सैनिक शिक्षित करने के लिए न भेज दिया गया होता तो औरंगज़ेब का सर वहीं भरे दरबार में धड़ से अलग कर देता। कहकर मुकर जाना—पाप—और छत्रसाल का अपमान—खैर

[एक चर का भागते हुए प्रवेश]

चर—कुमार—कुमार !

दल—क्या है, दूत ! क्या समाचार है ?

दूत—समाचार—बहुत बुरा समाचार है !

दल—क्या, कहो दूत !

दूत—क्या कहूँ, कुमार ! ओड़छा के राजा पहाड़सिंह मर गए।

दल—ऐं, मर गए ! कैसे मर गए ? कब मर गए ?

दूत—आज मरे अभी दोपहर को, और ज़हर खा कर मर गए।

दल—ज़हर खाकर—क्यों ? पूरा हाल बताओ—

दूत—हीरादेवी ने वीर महाराजा चम्पतराय को मारने के लिये उनके खाने में ज़हर मिला दिया था—

दल—अच्छा ! उस नीच ने—, कहीं उन्होंने वह खाना खा तो नहीं लिया—

दूत—नहीं। वह खाना सोने के थाल में महाराजाजी के सामने परोसा गया।

दल—परोसा गया-जल्दी बताओ, दूत तुम क्या कह रहे हो ? कैसी अशुभ खबर सुनाने आये हो—

दूत—पर।

दल—पर क्या ?

दूत—पर महाराज ने कहा-जब तक बुन्देलखण्ड स्वतन्त्र नहीं होता मैं सोने के थाल में खाना नहीं खा सकता।

दल—वह खाना विष का था न ?

दूत—हाँ ! तो उन्होंने हठ करके पहाड़सिंह से वह थाल बदल लिया।

दल—थाल बदल लिया, खूब ! यह अच्छा किया। ओफ़ ! भगवान कितना न्यायकारी है। तो वह विष मिला भोजन पहाड़सिंह खा गये होंगे।

दूत—जी !

दल—उफ़, ज़िन्दगी कैसी हल्की चीज़ है, दूत ! देखते हो, यह जड़ वस्तुएें भी उसे ज़रा देर में नष्ट कर देती हैं। हीरा देवी ! फिर तू क्यों इतना कर रही है ? तेंने समझा होगा कि चम्पतराय को विष देकर बुन्देलखण्ड में वीरों का बीज नष्ट हो जायगा।

दूत—कुमार ! एक और समाचार है—

दल—क्या।

दूत—महाराज चम्पतराय और कुमार छत्रसाल महेवा पहुँच चुके हैं। उन्होंने रणदूलहखाँ को छोड़ दिया है।

दल—रणदूलहखाँ को छोड़ दिया-बड़ी भारी ग़लती की। शत्रु-पक्ष को इस समय कमज़ोर करना चाहिये अथवा बलवान् ! उँह, यह भी क्या उल्टी बात कर डाली। लो, यह तो छत्रसाल और रणदूलहखाँ इधर ही को चले आ रहे हैं—[छत्रसाल और रणदूलह का प्रवेश]

छत्रसाल—जाइए-रणदूलहखाँ साहब-अपने शाहंशाह की जाकर क़दमबोसी कीजिए और शुक्र मानिए ख़ुदा का कि आप छूट गये। अब इधर आने का नाम न लीजिए। हम बुन्देले बर्रों की तरह तुम्हारी नाक में दम कर देंगे।

कह दीजियेगा अपने आक़ा से कि क्षत्रिय अपमान नहीं सह सकता। जिस माँग को आपने ठुकरा दिया है- वही अब अग्निशिखा बनकर तुम्हारे आतंक को भस्म कर देगी। समझे!

रण—छत्रसाल! तुम बड़े बहादुर हो। तुम क्यों झगड़ा मोल लेते हो! चलो अभी शाहंशाह से तुम्हारा मेल करा दूँ। तुम जो कहोगे वही कर दिया जायगा।

दल—वाह सिपहसालारजी, क्यों न? बधिया शायद आपके ही बांधे बँधती है?

छत्र—दलपति?

दल—क्यों छत्रसाल? रणदूलहखाँ को छोड़ दिया-

छत्र—हाँ देखते हो न, पिताजी की आज्ञा थी। रणदूलहखाँ! देखते हो बुन्देलों की निर्भीकता—जाओ—इस बार यदि आये तो फिर तुम्हारी ख़ैर नहीं। दलपति—

दल—छत्रसाल, शत्रु के साथ उपकार! देश को क्यों संकट में डालना चाहते हो!

छत्र—दलपति! क्षुब्ध मत हो! जिन भुजाओं ने एक बार रणदूलहखाँ की सेना को परास्त किया, वह दूसरी बार भी कर सकती हैं। इन पर भरोसा करो, वीर। भय मत करो। इन गीदड़ों से डरते हो—जाओ रणदूलहखाँ—

[रणदूलहखाँ का दाँत पीसते हुऐ प्रस्थान]

दल—हः हः हः दाँत पीस रहे हैं, खाँ साहब, बोलती तो बन्द है।

छत्र—पीसो, रणदूलह, तुम केवल दांत ही पीस सकते हो।

भुजाओं में तुम्हारे फड़क कहाँ। अच्छा दलपति ! चलो- अब देर ठीक नहीं। सम्भवतः कल से ही युद्ध आरम्भ होगा। हीरादेवी बुरी तरह चिढ़ गयी है। उसका एक वार खाली गया, उसकी चाल उसी के लिये घातक सिद्ध हुयी। चलो, अब शीघ्र ही, परामर्श करके नीति निश्चित करनी है—

दल—चलो—

[प्रस्थान]

प टा क्षे प

[हीरादेवी का कक्ष—कुछ विधवा का-सा वेश]

हीरा—कोई है— [एक सेवक का प्रवेश]

जाओ, सागराधिपति शुभकरण को बुलाओ—[प्रस्थान]

मृत्यु, पति की मृत्यु पर आँसू बहाऊँ—कायरों की तरह बैठकर अपना सिर दोनों हाथों से ठोकूँ ! नियति ! सौत ! मैं यह नहीं करने की। चम्पतराय बच गए, पर इससे तुम अधिक देर प्रसन्न नहीं रह सकते। संसार समझता होगा, पति-मृत्यु से मैं शान्त हो जाऊँगी—पर नहीं—मृत्यु तो होनी ही थी—हः हः हः

[विमल का प्रवेश]

विमल—कैसा मलिन अट्टहास है ? मा, तुम हँसती हो—

हीरा—क्यों ? विमल ! क्या मैं हँस नहीं जानती ?

विमल—तुम हँस जानती हो—माँ ! आश्चर्य ! हँसी तो इन पुष्पों में है—ये अपनी हँसी से संसार के कण-कण को प्रफुल्लित और सुवासित कर देते हैं। हँसी इन तारिकाओं के पास है, माँ ! जो रात के भयानक अन्धकार को खिला देती हैं। हँसी इन सरिता की लहरियों के

पास है जो अपनी चंचल गति से कूल को कलकलमय कर देती हैं। हँसी, माँ, इन पक्षियों के पास है जो प्रफुल्ल पादप पर बैठ कर—कभी अनन्त में पर फड़-फड़ा कर अपनी मधुर चहचहाहट से दिशाओं में रस उँडेल देती है। माँ! तुम ऐसा क्यों नहीं हँसती? तुम्हारी हँसी—

हीरा—चुप! कहाँ से यह व्यर्थ की बातें करना सीख गया है? जीवन में इस कविता से काम नहीं चलने का, कल से युद्ध होना है और तू आज इस प्रकार की बातें करता फिर रहा है।

विमल—युद्ध–माँ! युद्ध और हँसी में कितना अन्तर है! युद्ध छोड़कर संसार थोड़ी देर हँस ही क्यों नहीं लिया करता, माँ? हँसने में हृदय कैसा प्रफुल्ल—कैसा मृदुल हो जाता है—

हीरा—कुलाँगार! चला जा यहाँ से—

विमल—माँ—यदि तुम यह युद्ध न करो—

हीरा—क्या औरतों की-सी बातें करता है। अभी तक, इतनी शिक्षा देने पर भी शऊर न आया—

विमल—माँ--क्रोध मत करो—माँ यदि तुम यह युद्ध न करो, यदि इस प्रकार ख़ून न बहाओ—तो माँ! क्या सृष्टि का काम रुक जायगा—तो क्या फिर तुम मेरी माँ न रहोगी, तो क्या फिर तुम स्त्री न रहोगी। माँ—तुम स्त्री होकर यह क्या करा रही हो?

हीरा—मैं कहती हूँ चुप होजा ! ज्यादा बात करके मेरे क्रोध को मत बढ़ा। विमल ! अभी से तेरा यह हाल है। तू इन्हीं हाथों ओड़छे के राज्य को सँभालेगा—

विमल—माँ ! दुनिया को और धोखा क्यों देती हो ? तुम स्त्री होकर पुरुषों का सा-न-राक्षसों का सा कठोर हृदय बना सकती हो—पर विमल—विमला में वह शक्ति नहीं माँ ! मुझे मुक्त करदो—पुरुष का यह वेश मुझे बड़ा भारी लगता है—पुरुषों की सी बोली तो अब मेरे हृदय पर एक एक हथौड़े की तरह पड़ती है। माँ-तभी मैं हँस नहीं सकता—माँ ! तभी मैं······

हीरा—विमलदेव [घूरती हुई] होश से बातें करो। तुम को इस वेश की रक्षा करनी होगी। इस समय तुम अभी और इसी वेश में रहो—

विमल—अब असम्भव है। मैं क्या करूँ ? अब मैं इसकी रक्षा नहीं कर सकती—नहीं कर सकती—

हीरा—नहीं कर सकती—क्यों नहीं कर सकती ?

विमल—नहीं कर सकती !

हीरा—अच्छा ! विमल ! इस वेश के साथ तेरा भी अन्त है—स्वीकार है ?

विमल—[सामने जाकर छाती सामने करके] स्वीकार है, कर दो इसका अन्त। मैं यह बन्धन नहीं सह सकती। मैं यह बनावट नहीं रख सकती। मैं जो हूँ वही रहना

चाहती हूँ—माँ! यदि इससे तुम्हारे स्वार्थ को ठेस लगती हो—तो लो—मैं तय्यार हूँ—

हीरा—हूँ—तैयार है—दुष्ट—तो ले-जा—पहाड़सिंह के पास जा-

[तलवार मारना चाहती है, शुभ करण का प्रवेश]

शुभ—[हाथ पकड़ कर] हीरादेवी! यह क्या? दुग्ध फेन-से इस अबोध मृदुल बालक पर तुम तलवार चला रही हो। तुम्हारा क्रोध इतना दुष्ट है—उफ़! [आँखें दीप्त हो उठती हैं] कैसा दुर्भाग्य है! शुभकरण—और हीरादेवी का भी साथ हो सकता है? [हाथ छोड़ देता है, हीरादेवी के हाथ से तलवार गिर पड़ती है]

[विमल उठ खड़ा होता है]

शुभ—विमल—जाओ यहाँ से—[हीरादेवी की ओर से आँखें फेरे हुए] बोलो हीरादेवी! बोलो इस समय मुझे क्यों बुलाया? मैं अधिक तुम्हारे पास नहीं ठहर सकता—तुम्हारे पास आने से जैसे मेरा शरीर जलने लगता है—उफ़!

हीरा—हः हः हः शुभकरण—इतने पोच बनते हो। वीर होकर—विमल के साहस की परीक्षा ले रही थी मैं—हः हः हः शुभकरण! मुझे इतना नीच समझते हो?

शुभ—[हीरा की ओर दृष्टि करता हुआ] हूँ—कैसी भोली सी है तुम्हारी हँसी—हीरादेवी! [फिर मुँह फेर लेता है] तुम अपना मतलब कहो—

हीरा—प्रतिज्ञानुसार शुभकरण! कल चम्पतराय पर चढ़ाई कर दो। महाराज की मृत्यु हो गयी, इसकी चिंता मत करो। उनकी अर्द्धाङ्गिनी होने के नाते मेरा यह कर्तव्य है कि उनके कार्य को पूरा करूँ। कल लड़ाई पर जाओगे? शुभकरण!

शुभ—बस, या और कुछ! उफ़—वीरों के लिये युद्ध-धर्म है, पर हीरादेवी! तुम्हारी सलाह के कारण वह पाप की तरह मेरे सामने खड़ा है। पर करूँगा—शुभकरण कायर में वह साहस कहाँ कि निषेध कर सके—जाता हूँ— [प्रस्थान]

हीरा—हः हः हः कैसी जल रही है वह आग—धू-धू-करके—चलूँ—स्वाहा का उच्चारण मुझे ही करना है—

[प्रस्थान]

प टा क्षे प

रण-भूमि

[दलपति का युद्ध। वेश में प्रवेश, साथ ही नेपथ्य में शंख-ध्वनि]

दल—हो गया—आक्रमण हो गया। यह शत्रु-पक्ष की शंख-ध्वनि है।

[चम्पतराय का प्रवेश]

चम्पत—सेनापति दलपति-वह देखते हो। कालिञ्जराधिपति की सेना ने कूँच कर दिया है। तुम्हारा क्या विधान है?

दल—महाराज! आप यहाँ सैन्य-सञ्चालन कीजिए। मैं दुर्ग-रक्षा के लिए जाता हूँ।

चम्पत—अच्छा! सेना सब ठीक है?

दल—ठीक तो सब है—पर कम है। पर इससे उत्साह हमारा उनसे बढ़कर है। आप निश्चिन्त रहें।

[चम्पतराय का प्रस्थान]

[शंख फूँककर]

दुर्ग की रक्षा प्रधान है। शुभकरण सेनापति चुने गये थे, पर आज तो कालिञ्जराधिपति सञ्चालन कर रहे हैं। इस में भेद है?

[ताली बजाता है—एक चर का प्रवेश]

तुम शीघ्र जाओ। शुभकरण की गतिविधि की सूचना मुझे प्रतिक्षण पर दो—

[चर का प्रस्थान]

[फिर शंख फूँकता है-साथ ही रण-वाद्य बजता है। मार्चिङ्ग करते हुए सेना का प्रवेश]

गीत

वीर बुन्देलो, वीर बुन्देलो-जीवन का यश भर लो—
झटपट उठकर मातृभूमि के हित का साधन कर लो—
कटि कस असिधर, धनु-शर धारो
भुजबल अरि दल यश विस्तारो—

मारो, मारो, देश-शत्रु को, या फिर उस पर मर लो—

[सेना ठहरती है]

दल—नायक! अपने दल को चार टुकड़ियों में बाँटो। एक को दुर्ग के कमजोर स्थलों की रक्षा के लिए नियुक्त कर दो। एक को दुर्ग के बाहर सेना का सामना करने के लिए छोड़ो। एक को दुर्ग से दो मील उत्तर की ओर नियुक्त करो और चौथे को पूर्व की ओर। बस, जाओ—युद्ध छिड़ गया है। वीरो! अपनी माँ का दूध मत लजाना। जाओ मेरे वीरो!

[नायक सेना लेकर जाता है। सेना मार्चिङ्ग गीत गाती चली जाती है। रण-वाद्य निरन्तर बज रहा है]

दल—मचल रही है-शक्ति ! भवानी ! आज अपना ताण्डव दिखाने के लिये मचल रही है। देश-द्रोहियों के रक्त के लिये लपलपा रही है। चलूँ—

[प्रस्थान]

[रण-वाद्य निरन्तर बज रहा है। तलवार की झन झनकार निरन्तर सुनाई पड़ रही है, कालिञ्जराधिपति का प्रवेश]

कालि०—उफ़-चम्पतराय की कठिन मार। इस बुढ़ापे में-इतनी भयंकर—

[चम्पत का प्रवेश]

चम्पत—क्यों-महाराज- रणक्षेत्र छोड़कर भाग आये। धिक्कार है—क्यों क्षत्रियत्व को लज्जित करते हो कालिञ्जराधिपति ! निकालो-शस्त्र युद्ध करो [कालिञ्जराधिपति से युद्ध-दोनों का लड़ते हुए प्रस्थान]

[चार-पाँच सैनिकों से लड़ते हुए छत्रसाल का प्रवेश]

छत्र—(तलवार चलाता हुआ) लो सम्हालो, (एक मरता है) अरे फूँस के पुञ्जो-कुछ साहस भी है या लड़ने ही चल दिये। [शेष से लड़ते-लड़ते प्रस्थान]

[छत्रसाल का प्रवेश]

छत्र—सब मैदान छोड़कर भाग गये-कायर—

[दुर्ग के गिरने की आवाज़ होती है]

छत्रसाल—ऐं ! यह क्या ? क्या हमारा दुर्ग गिरा दिया गया-ओफ़—

[एक चर का प्रवेश]

क्या समाचार है ? दूत !

चर—बहुत बुरा--कुमार ! शुभकरण ने हमारा दुर्ग अपने हाथ में कर लिया। दलपति को शुभकरण ने चाल से दूसरी ओर युद्ध में लगा दिया था।

छत्र----और ?

चर---और यह भी खबर लगी है कि रणदूलहखाँ और कंचुकी राय एक बड़ी भारी सेना लेकर बुन्देलखण्ड पर चढ़ आए हैं। वे भी शुभकरण की सहायता करेंगे।

छत्र---यह बात ! अच्छा--मैं चलूँ।

[प टा क्षे प]

[विन्ध्याचल का एक भाग—बदरुन्निसा एक कुटी बना रही है]

ये बुन्देलों की भूमि बनी मनहारी—
मेरी कुटिया भी वहीं शान्ति-सुखकारी—
गिरि-शिखर कहीं तारों से बातें करते—
झरने झर-झर उल्लास वनों में भरते—

पक्षी कलरव कल कलियों की चटकारी—
मेरी कुटिया भी वहीं शान्ति-सुखकारी।

भयंकर युद्ध—भीषण संघर्ष-संसार ने कैसा उलटा अर्थ लगा रक्खा है ? इस अनन्त आकाश में ये इतने तारे बिखरे पड़े हैं—यदि ये भी जीवन का अर्थ विरोध प्रतिरोध-और युद्ध समझने लगें तो क्या होगा—उफ़-इसकी कल्पना ही कितनी भयंकर है। [कुटी बन चुकती है] बन गयी, दिल्ली और आगरा के स्फटिक गगन चुम्बी प्रासादों से कहीं भव्य, कहीं मनोहर, कहीं उपयोगी—यह मेरे नये जीवन की भूमिका बन गयी—

गाना

संतप्त ताप से व्यथित अनाचारों से—
झुलसे, मुरझाए हुए दलित प्यारों से—

बन गई कुटी यह सबको मंगलकारी,

इन बुन्देलों का हृदय कभी घबड़ाता नहीं इस भयंकर मारधाड़ से—रोज लड़ाई, रोज खून, रोज मृत्यु—कभी तो ये लोग अपना कुछ मनोरञ्जन कर लिया करें; ये कभी क्या आकाश की ओर नहीं निहारते, क्या कभी यह झरनों और शिखरों की अनोखी छटा पर मुग्ध नहीं होते ? कैसा आश्चर्य है ? [कुछ पादपों को कुटी के ओर पास लगाते हुए—]

गाना

तुम फूलो पादप भरो सुरभि जग भर में—
छल छोड़ सुमन सुन्दर लो अपने कर में—
कोकिल कल गाने लगी कुहू किलकारी—
(सफ़ाई करने में लगती हुई) मैं यहाँ अपना स्वर्ग बनाऊँगी—

[चम्पतराय का प्रवेश]

चम्पत०—अहः ! यहाँ कुछ शान्ति प्रतीत होती है। यह स्थल कैसा तपोवन सा पवित्र, नन्दन कानन सा सुरभित और वृज-कुञ्ज-सा मुखरित है। शान्ति--पर नहीं। मैं शान्ति कहाँ पा सकता हूँ ? सारा बुन्देलखण्ड और एक चम्पतराय—उस पर भी छल ! भगवन् ! अब क्षत्रियों में भी नीचता आ गयी। छल से महेवा पर अधिकार किया—आज मैं कहीं—मेरी स्त्री बच्चे कहीं। मातृ-भूमि ! यह चम्पतराय आज निस्सहाय जीवित है। इसकी भुजाएँ हैं—उनमें बल है—पर वह तुझे मुक्त नहीं कर सकता—धिक्कार है।

बद०—(पास आकर) शान्त होओ वीर—स्वतन्त्रता रक्त बहाने से नहीं मिलती—आओ, थोड़ी देर इस कुटी में विश्राम करो—मेरा आतिथ्य स्वीकार करो—

चम्पत०—बाले ! चम्पतराय के जीवन में विश्राम नहीं। सूर्य उदय होकर सन्ध्या को विश्राम करने चले जाते हैं, पर चम्पतराय को विश्राम कहाँ ? देश की ये बेड़ियाँ, देश का यह दलन उससे नहीं देखा जाता—हृदय में भयंकर तूफान उठ खड़ा होता है। वह तुम्हारे शान्त सन्देश को सुनना चाहता है, पर नहीं सुन सकता। बाले ! आज मेरा दुर्ग मेरे हाथ से चला गया। कल जो राजा था वह कंगाल हो गया। इसका दुःख नहीं, दुःख यह है, बिना दुर्ग के मातृ-भूमि के उद्धार का यज्ञ असम्भव है।

[दलपति का प्रवेश]

दल०—असम्भव-असम्भव कुछ नहीं पूज्य ! प्राणनाथ प्रभु का आशीर्वाद मेरे पास है। हम में वह तेज है जो सूर्य में है। हम निराश नहीं होंगे। हमारा शरीर हमारा दुर्ग है। हमारी भुजाएँ हमारे सैनिक हैं। आज से महेवा का एक-एक वीर एक-एक दृढ़ दुर्ग है। पूज्य, आप दुखी न हों !

चम्पत०—तुम्हारी आशाओं का स्वर्ग, दलपति ! सचमुच तुम्हारे योग्य है। तुम सच्चे वीर हो। पर वीर, मेरे हृदय में

महा भयंकर असन्तोष उत्पन्न हो गया है। मुझे ऐसा दीख रहा है—मैं बुन्देलखण्ड को स्वतन्त्र न देख सकूँगा—

[छत्रसाल का प्रवेश]

छत्र—तो इसमें दुखी होने की क्या बात है, पिताजी? आपने जीवन भर बुन्देलखण्ड के हित के लिये महा त्याग किया-यह क्या कम सन्तोष की बात है? आप क्यों असन्तुष्ट हों। अभी से ऐसी बातें क्यों?

दल—मुझे यह बात पसन्द नहीं—

बद—क्यों भाई? क्या ऐसा कोई उपाय नहीं—कि युद्ध न हो और काम बन जाय?

छत्र—[बद० को देखकर] क्या? बहिन बदरुन्निसा! तुम यहाँ कहाँ? वे मुलायम गद्दे तकिये, वे ऐशो-आराम की चीजें-उन सबको छोड़ आयीं क्या?

[नेपथ्य में 'अल्लाहो अकबर'। एक दूत का प्रवेश]

दूत—महाराज? रणदूलहखाँ, आप और छत्रसाल की तलाश में इधर ही चला आ रहा है। आप सावधान रहें।

दल—रणदूलह।

दूत—जी—

दल—छत्रसाल!

छत्र—दलपति-शिकार फिर आगया। इस बार ऐसा मज़ा चखाऊँ कि याद रक्खे। आ! पामर, कायर तेरी सारी सेना के लिये अकेला छत्रसाल ही बहुत है।

[आवेश में प्रस्थान]

दल—ठहरो छत्रसाल ! मैं भी चलता हूँ। पूज्य आप सावधान रहें।

चम्पत—वीर दलपति—चिन्तित मत हो। मेरे हृदय में दुःख है इसके यह अर्थ नहीं कि मेरी वीरता सो गई है। जब तक यह प्यारी करवाल कर में है, महेबा का राजकुल पीठ नहीं दिखा सकता—छल दूसरी बात है। तुम जाओ मैं सावधान हूँ—

[दलपति का प्रस्थान]

हः हः हः रणदूलहखाँ ! साम्राज्य की सारी सेना को, एक छोटे से बुन्देलखण्ड को छीनने के लिये, लेकर आया है, वाह !

[नेपथ्य में—'कहाँ है कायर चम्पतराय']

यह मर्माघात—आ कौन है। चम्पतरायकी कायरता देख-पीठ पीछे गाली देने वाले ठहर-तेरी शामत आगई है—

[दूसरी ओर प्रस्थान]

बद—ख़ून के प्यासे हैं—कैसा रमणीक स्थल है, इसे ये थोड़ी देर भी नहीं देखते, थोड़ी देर के लिये भी प्रकृति के इस मधुर, मनोरम आश्चर्यमय जगत को नहीं देखते। क्या होगया है इनको ? खुदा। अल्लाह ! जहाँ देखो वह यही आग, यही हाय—यही पुकार—भइया छत्रसाल कैसे उदार हैं ? उन्हें भी क्या होगया है—मैं कैसे समझाऊँ

[खून से लथपथ लड़खड़ाते हुए चम्पतराय का प्रवेश]

चम्पत—अहः—मुझे वृद्ध समझा था! पामरो, तुम सौ थे तो क्या हुआ, भाग गये। चम्पतराय की तलवार और देखोगे—नीचों ने भाले घुसेड़े मेरी देह में। अरे-[शरीर को देख कर] अरे ये तो बहुत बड़े घाव हो गये। अरे! यहाँ भी—अरे—कायरों ने पीछे भी वार किये हैं—ओफ़! बड़ा ख़ून निकल रहा है। यह क्या, सिर चकराता क्यों है?

बद—[पास आकर शुश्रूषा करती है] अहः! इतने घाव, एक मनुष्य इतने घावों को खाकर भी लड़ सकता है, जीवित रह सकता है। अल्लाह! मनुष्य में से इस राक्षसी प्रवृत्ति का अन्त कब होगा?

[शुश्रूषा करती है]

[शुभकरण का प्रवेश]

शुभ—इधर ही तो आया था-इधर ही। मैं देखूँगा उसकी वीरता। सौ मुग़लों को मारकर वीर बनता है-चम्पतराय—

चम्पत—[आँखें खोल देता है] आह! नहीं—कौन शुभकरण! आओ-जब तक मेरी नसों में रक्त की एक भी बूँद है-अः-मैं युद्ध से नहीं हटूँगा-तुम ललकार रहे हो, आओ

[तलवार उठाता है, पर बाँह नहीं उठती]

बेटी! [बदरुन्निसा से] बेटी! जरा मुझे बैठा दे, बैठा दे, बेटी, मरते हुए भी मैं शुभकरण को दिखा देना चाहता हूँ—[रुक जाता है] हूँ कि मैं-क्या-हूँ।

शुभ—चम्पत की आवाज़ सुनकर। अरे! यह क्या? यह क्या? तुम्हारी यह दशा!

चम्पत—ठहर आ—

[आवेश में एकदम खड़ा होता है, तलवार उठाता है, फिर एकदम गिर पड़ता है, बदरुन्निसा सम्हालती है]

शुभ—यह क्या? यह क्या? अरे यह क्या होगया—मेरा वीर मित्र—मेरा भयंकर शत्रु-पर यह क्या होगया?

चम्पत—[होश में आकर] वीर शुभकरण, कहीं तुम ज़रा पहले आजाते—मेरी भी मन में रहगई। देखते तो सही, हम

[दलपति का प्रवेश। चम्पत को धराशायी देखकर]

मित्र साथ साथ खेले हुए, कैसे आपस में एक दूसरे से शत्रुता निवाह सकते हैं-पर अब साफ-शुभकरण मेरे सामने मेरा अन्त स्पष्ट है वीर—

दल—[अत्यन्त क्रोध में] क्या महेवा का मणि—बुन्देलखण्ड का एक मात्र वीर आज आहत हो गया। किसने ऐसा किया—किसके सिर पर आज मौत सवार है [शुभकरण को देखकर] ठीक—समझ गया। आपने पिताजी, आपने, तो आइए—सम्हालिये, दलपति का—अपने पुत्र का—नमस्कार स्वरूप वार स्वीकार कीजिये। छोड़ नहीं सकता—देश के शत्रु को छोड़ नहीं सकता।

[शुभकरण चुप खड़ा है, दलपति आगे बढ़ता है]

चम्पत—भूलो मत दलपति-क्या पाप करने जा रहे हो? वीर पिता

के ऊपर हाथ मत उठाओ, तुम्हारे पिता ने मेरा अहित नहीं किया-ठहरो-

दल—[रुक जाता है] अहः ।

[अपने को सँभाल कर]

[चम्पतराय को देखता है]

चम्पत—[दलपति की ओर देखकर] बेटे ! थोड़ी देर के लिये युद्ध का उन्माद छोड़दो । अब मैं बच नहीं सकता-वीर !

शुभ—

[रोने लगता है]

चम्पत—रोते हो-शुभकरण—क्या बचपन के वे मधुर क्षण याद आरहे हैं ? अहः कैसा था वह जीवन ! पर शुभकरण ! मैं मरते समय तुमसे पूछता हूँ-ठीक बताना, मैंने ऐसा क्या अपराध किया था कि तुम मेरे शत्रु बन गये शुभकरण !

शुभ—[सावधान होकर, उग्र होकर] चम्पतराय ! तुमने याद दिलादी-अह: वह बात जब मुझे याद आजाती है तो तुम्हारा मुख मुझे घृणित प्रतीत होता है—आँखों में ख़ून उतरने लगता है, उफ़ तुम क्या होगये !

चम्पत—वीर शुभकरण ! अब अधिक क्षण नहीं, शीघ्र बताओ मेरे किस कृत्य ने तुम्हारे हृदय पर ऐसी ठेस पहुँचायी-

शुभ—मैं बतलाऊँ । मैं-तुम्हारा पाप तुम्हारे सामने रक्खूँ—क्या तुम पापाचारी नहीं--क्या ? मेरी बहिन ललिता—

चम्पत—बस शुभकरण-बस—मैं मर रहा हूँ—इसलिये चाहे जो कुछ मत बको। मैं इस संसार को छोड़ रहा हूँ। इससे मुझे अब विशेष मोह अथवा ईर्ष्या नहीं। मैं अभिमानी हो सकता हूँ-मैं उद्दण्ड होसकता हूँ—पर शुभकरण मैं चरित्र भ्रष्ट नहीं। अह: आज यह भी सुनना पड़ा। जीभ खींच लेता जो मेरे अन्दर कुछ बल होता। अह: पानी—पा—

[बदरुन्निसा पानी पिलाती है, मुँह से खून गिरता है]

शुभकरण! मेरे हृदय पर हाथ रखो-लाओ—

[शुभकरण चुप चाप अपना हाथ बढ़ा देता है]

देखो-मेरे हृदय की गति देखो-इस वीर रक्त में क्या तुम कभी पाप पा सकते हो-सत्य बोलो-शुभकरण! तुम वीर हो—तुम वीर को पहचानते हो—

शुभ—आह। आह—मेरा संसार! छल-धोखा-मेरा मित्र-वीर-वीर! मैं ठग लिया गया-ओह-[रूप रौद्र हो जाता है] अच्छा-आह-कैसी नारकीय पीड़ा है? प्यारे मित्र-मित्र-मुझे क्षमा करो! आह-शुभकरण को नरक में भी जगह नहीं—मित्र!

[स्तब्ध रह जाता है।]

चम्पत—प्रिय-शान्त हो-यह समय दुखित होने का नहीं-भूल जाओ विगत को—जरा छत्रसाल को बुलाओ-

[बदरुन्निसा जाती है, छत्रसाल को बुला लाती है]

बेटे मैं जाता हूँ—

छत्र—पिता—पि······

चम्पत—वीर के पुत्र हो छत्रसाल। मृत्यु का महत्व समझो। वह रोने की चीज़ नहीं। देखो बुन्देलखण्ड तुम्हारी ओर देख रहा है-पर आपस में यदि तुम मेल करा सको तो—आह! पानी—[बदरुन्निसा पानी पिलाती है] भाई शुभकरण-मैं जाता हूँ। दलपति और छत्रसाल तुम्हारे [चुप हो जाता है] उससे बढ़कर यह देश! रक्षा कर सको तो करना-मैं तुम्हारा शत्रु-या मित्र—

शुभ—भाई—मित्र-चम्पत—अब अधिक नहीं—

[प्राणनाथ प्रभु का प्रवेश]

प्राण—स्वर्ग लाभ करो वत्स! चम्पतराय—निश्चिन्त रहो-बुन्देलखण्ड को स्वतन्त्रा मिलना अवश्यम्भावी है। तुम्हारा कार्य अधूरा न रहेगा। जाओ, शान्ति पूर्वक अनन्त निद्रा में मग्न हो जाओ—

[प्राणनाथ प्रभु आशीर्वाद को हाथ उठाते हैं, चम्पतराय हाथ जोड़ते हैं। छत्रसाल-दलपति इधर-उधर बैठे हुए हैं। शुभकरण दोनों हाथों से अपना मुहँ ढँक लेते हैं-बदरुन्निसा स्तब्ध कुटी का एक कोना पकड़े खड़ी है। अन्धकार- फिर एक तेज धीरे-धीरे आकाश को जाता है।]

(फिर एक साथ) मातृभूमि के पुजारी की जय—

प टा क्षे प

—दूसरा अंक समाप्त—

*

अंक ३] [दृश्य १

[हीरादेवी, कंचुकीराय]

हीरा—हः हः राजासाहब ! कैसा मजा रहा। अभिमानी चम्पतराय—हः हः बुन्देलखण्ड को स्वतन्त्र बनाने का छल खड़ा करने वाले चम्पतराय—हः हः राजा साहब कैसा मजा रहा। आज हीरादेवी ओड़छा और महेवा दोनों राज्यों की रानी है—राजा साहब—

कंचुकी—हः हः मैंने तो कहा था न, तुमने खूब ही सोचा था, हीरादेवी जी ! रोशनआरा से मैंने वह वह बातें कहीं कि बस, वह वह बातें कहीं—मान ही गयी। पहले तो मैंने दूर ही से एक लम्बा आदाब बजाया—हः हः हीरादेवी जी, देखा आपने—बस, इन बड़े आदमियों को ज़रा लम्बा सलाम झुकाया नहीं कि ये हाथ में आये। फिर तो मेरी वह खातिर हुई कि बस—मैंने तो कहा था न—बस।

हीरा—ठीक राजा साहब—आज कितनी प्रसन्नता का दिन है—आज मेरा अभीष्ट पूरा हुआ। छत्रसाल—उँह, छत्रसाल किस खेत की मूली है—राजा साहब—अब उसे मैं भिनगे

की तरह एक चुटकी में मसल दूँगी—ह: ह: ह: कैसा मज़ा रहा।

कंचुकी—बड़ा मज़ा रहा—मैंने तो कहा था न—हीरादेवी जी, बड़ी ख़ातिर हुई। ऐसे ऐसे भोजन—बस कुछ पूछो मत—एक बात है हीरादेवी जी! इन बड़े लोगों के सामने ज़रा रो दीजिए—बस सारी नाराजी काफ़ूर हो जायगी—ज़रा एक बात पर वह नाराज़ हुई—मैं रो दिया—पर हीरादेवी जी! बला की ख़ूबसूरत है—क्या बताऊँ—बड़ी मौज़ रही—ये तो बड़े भाग्य से मिलता है—सब कोई थोड़े जा सकता है—समझी हीरादेवी जी!

हीरा—राजा साहब! अब क्या विचार है! एक आम सभा की जाय—और क्यों न मैं ही राजमुकुट धारण करूँ। मैं समझती हूँ सभी राजा इसे स्वीकार करेंगे?

कंचुकी—राजमुकुट—वाह क्या बात सोची है! सच रानीजी! मुकुट जो रोशनआरा पर फबता था वह शहंशाह पर नहीं फबता था—बस कुछ पूछो मत—मैंने तो कहा था न कि ख़ूब रहेगा—पर आज कुछ—इस आनन्द के समय रौनक का इन्तजाम भी होना चाहिए—

हीरा—वाह—यह ख़ूब कही—कोई है—

[एक नौकर का प्रवेश]

देखो राजनर्तकों को भेजो—

[नौकर का प्रस्थान]

कंचुकी—मौज तो कर जानते हैं वे ही—मैंने तो कहा था न—

हिः हिः हिः हीरादेवी जी ! बड़े बड़े आला से आला नाच गाने देखने को मिलते थे। जन्नत हो रही है दिल्ली—रानीजी ! वाह—ऐसे नाच यहाँ वाले क्या जाने—सच मैंने तो कहा था न—

[नर्तकों का प्रवेश]

झमक चमक दमक सखी ! खिल जाती लाली—
खिल जाती लाली
अजब निराली—
उपवन सुमनों में खिली
रवि की किरणों में मिली
तितली के पर में पली
इन्द्रधनुष वाली—
—अजब निराली—

[अस्त-व्यस्त वेष में शुभकरण का प्रवेश]

शुभ—बन्द करो—हृदय के रुद्र ताण्डव की प्रतिहिंसास्थली में यह प्रमोद—मेरे हृदय में चिता जलाकर यह आनन्द —(नर्तक भाग जाते हैं। कंचुकीराय भड़ भड़ा कर आसन से लुढ़क जाते हैं)-कहाँ है हीरादेवी (हीरादेवी की ओर घूरता हुआ) ही-रा-दे-वी—

हीरा—उँह, शुभकरण ! आज इस उत्सव के दिन तुमने यह क्या बखेड़ा कर दिया ?

शुभ—बखेड़ा—मैंने—अहः हीरादेवी बता; किसने मेरे मनोरम जीवन के देव-स्पृह-स्वर्ग को छिन्न-भिन्न कर डाला—बता

किसने मेरे पारिजात से कुसुमित क्षत्रियत्व को अपने अपावन क्रूर हाथों से मसल डाला—बता किसने मेरे हृदय में झूँठी बन्धु-द्रोह की आग लगाकर मेरे—महत्वाकांक्षी उदार हृदय में बखेड़ा कर दिया—हीरादेवी—सच बता, मैंने तेरा क्या बिगाड़ा था ?

हीरा—मेरा—शुभकरण ! कुछ भी तो नहीं—

शुभ—कुछ भी नहीं—कुछ भी नहीं—फिर तूने मेरे जीवन को यह नरक-कुण्ड क्यों बना दिया ? आह—तू क्या जानती है—मेरे अन्तर की सभी पवित्र भावनाएँ एक एक करके उस कुण्ड में आहुति हो गयीं—मेरा हृदय—मेरा हृदय धुएँ और अन्धकार से काला हो गया है—आह—मेरा खोया हुआ क्षत्रियत्व—

हीरा—शुभकरण ! आज तुम्हें क्या हो गया ? तुम्हारा शत्रु चम्पतराय आज धूल में मिल गया, प्रसन्न होना चाहिये—

शुभ—प्रसन्न होना चाहिये—प्रसन्न—हीरादेवी (ज़ोर से पैर पटकता है। कंचुकीराय, फिर गिर पड़ते हैं—वहाँ से डरते हुए भाग जाते हैं) शुभकरण ! प्रसन्न होगा—शुभकरण को छोड़ कर और दूसरा कौन प्रसन्न हो सकता है !! अहः मित्र, चम्पतराय—मित्र (हीरादेवी की ओर) हीरादेवी—चम्पतराय को मेरा शत्रु बताती है। सच बता—तूने झूँठ ही चम्पतराय के चरित्र पर लाञ्छन क्यों लगाया—हीरादेवी क्या वह सच था ?

हीरा—(सकपका कर) औ-र-और क्या झूँठ था ? क्या आज

फिर बताना पड़ेगा-कि तुम्हारी बहिन ललिता ने आत्मघात क्यों किया ?

शुभ—छिः, क्यों हीरादेवी, अब भी तू शुभकरण को झाँसा दे रही है—नीच स्त्री-एक वीर के चरित्र पर लाञ्छन लगाती है। अपना स्वार्थ-सिद्ध करने के लिए—चम्पतराय-अहः मित्र मैंने मूर्खता की—तुम्हारे जैसे पवित्र चरित्रशील पर अविश्वास—मैं घोर पापी हूँ—अहः मेरा प्रायश्चित!!!—पर जीवन क्या कभी—कभी अब शान्ति पा सकता है ?—दुनिया स्वार्थ के लिए इतना भी छल कर सकती है ? (तलवार हीरा की ओर बढ़ाते हुए) बता-बता-ललिता की मृत्यु के रहस्य को बता—

हीरा—मैं पहले ही बता चुकी—वही चम्पतराय—

शुभ—चुप—फिर वही—तू समझले—आज यदि ब्रह्मा भी आकर मुझे इस बात का विश्वास दिलाए तो भी मैं एक न मानूँगा। मैं चम्पतराय को जानता हूँ हीरादेवी ! वह वीर है—और वह कभी झूँठ नहीं बोल सकता—

हीरा—छले गये हो—शुभकरण—

शुभ—अब भी तू अपना जादू नहीं हटाना चाहती, क्यों, हीरादेवी। अब शुभकरण वह नहीं रहा, आज वह सचमुच शुभकरण है—

हीरा—यदि मेरी बात नहीं मानते, तो वह देखिये-उधर प्रति दिन ललिता की प्रेतात्मा आया करती है, उससे पूछ लो--वस-

[शुभकरण दूसरी ओर देखता है]

शुभ—अच्छा, देखूँ—

[शुभकरण ध्यान पूर्वक उधर देख रहा है, हीरादेवी दबे पाँव वहाँ से खिसक जाती है]

शुभ—(देर तक ध्यान से देखने के बाद) कहाँ, हीरादेवी—इधर तो कुछ भी नहीं दीखता ? कहाँ है, ललिता की प्रेतात्मा । —(उत्तर न पाकर) हीरादेवी ! (कमरे में देखकर) हीरा देवी ! फिर छल, अब मुझे विश्वास हो गया । हीरा-देवी कितना भयंकर छल किया तुमने ? आह—मुझे क्या हो गया था-मैंने अपने मित्र के चरित्र पर दोष स्वीकार ही क्यों किया-भगवन—मेरी बुद्धि कैसी मारी गई थी—आह-दलपति-वह मेरा प्यारा हृदय-वह वीर- उसे मैंने घर से निकाल दिया-और इस तलवार से मैंने अपने ही भाइयों के सिर काटे । भवानी कृपाण-अहः हमारे पास तू अन्याय का प्रतिकार करने के लिये-पाशविक बल का प्रतिरोध करने के लिये है । स्वतः अत्याचार करने के लिये नहीं । मैंने तुझ से पाप कमाया-तुझे मैं छू भी नहीं सकता । पापी शुभकरण ! (तलवार जमीन पर रख देता है) भवानी-इस हतभाग्य-मन्दमति-के हाथों में आकर तुम्हारा भी मुँह काला हुआ—अहः मैं मित्रद्रोही भ्रातृ-घातक हूँ-मैंने माता का अपमान किया-मुझसा निर्लज्ज पापी दुनिया में कौन है-हः हः हः (रोता है, हाथों से आँखें मूँद लेता है) भगवान्-मैंने यह क्या किया ? आग-नरक की आग-(विकल होकर भागता है) चम्पतराय-

तुम मुझे कितना प्यार करते थे—(सँभल कर) पर नहीं मैं ऐसी कायरता नहीं दिखाऊँगा—नहीं—जाओ—नरक की व्यथा जाओ—(तलवार उठाकर मस्तक से लगाता है) ठीक— बुन्देली ! मा—मैं तेरा बहुत अपमान कर चुका। जिस शुभकरण ने तेरा मुँह काला किया है—वही शुभकरण तेरा मुख उज्ज्वल करेगा। मित्र !! तुम्हारे शब्द मेरे कान में हैं—मैं देश का व्रती हूँ। शुभकरण आज प्रतिज्ञा करता है—अपने पापों के प्रायश्चित स्वरूप उस समय तक सुख की नींद नहीं सोऊँगा—जब तक देश स्वतन्त्र नहीं होता। चम्पत-राय ! तुम स्वर्ग से देखो—तुम्हारा भूला मित्र किस प्रकार अपनी भूल ठीक करता है। चलूँ छत्रसाल से मिलूँ। हीरादेवी—ऊँह कैसा घृणित नाम है ! कृत्या !!!

[प्रस्थान]

प टा क्षे प

स्थान-मार्ग

[प्राणनाथ प्रभु, छत्रसाल, दलपति]

प्राण—वत्स, वीर चम्पतराय का काम अधूरा पड़ा हुआ है। देखते हो उसकी पूर्ति, वीर पुत्र की तरह तुम्हें करनी है।

छत्र—पूज्य गुरो-आपका आशीर्वाद होना चाहिए-

प्राण—वत्स, मेरा आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ है-देखो, इस समय राजनीति की दीक्षा के लिए तुम महाराष्ट्र वीर शिवाजी से भेंट करो-

छत्र—जो आज्ञा-

प्राण—देखो दलपति-देश में फूट है। हम और तुम इस फूट को दूर करने का यत्न करेंगे।

दल—मैं तैयार हूँ-

[बदरुन्निसा का प्रवेश]

बद—प्रभो--और मैं भी कोशिश करूँगी।

छत्र—कौन-बदरुन्निसा-बहिन-

बद—भाई-

प्राण—छत्रसाल! यह कौन? ओस-बुन्द के समान स्वर्गीय पवित्रता की धवल-मूर्ति, यह कौन है? यह तो—

छत्र—गुरो ! यह शाहंशाह औरंगजेब की पुत्री बदरुन्निसा मेरी धर्म-भगिनी है।

प्राण—बेटी, तुम-तुम इस भयानक प्रदेश में अपने उन भव्य प्रासादों को छोड़कर क्यों चली आईं ?

बद—क्यों चली आई ? वहाँ मुझे अच्छा ही न लगा-वहाँ जैसे मेरा कोई न हो-सब मुझे अपने शत्रु दिखाई पड़े। वहाँ मेरी कोई बात सुनने वाला तक नहीं। यहाँ मैंने अपने भाई छत्रसाल को देखा। इस भाई ने मेरी ज़रासी बात सुनकर अपनी जान होम देने की तत्परता दिखाई। इसी भाई के ध्येय की पूर्ति में योग देने के लिये मैं यहाँ चली आई-और इसीलिये मैं आपके साथ इस बुन्देलखंड में पारस्परिक प्रेम का सन्देश लेकर घूमना चाहती हूँ।

प्राण—धन्य-बेटी धन्य-एक तू है ! और एक हीरादेवी है ! तू सचमुच हमारी है। तेरे हृदय में मानवीयता का पूर्ण विकास दीखता है-बेटी !

छत्र—बहिन ! इतना त्याग ! बहिन!जा, तू अपने महलों में जा, तेरा भाई तेरे इस उपकार से बहुत दब गया है। उसके लिए और अधिक कष्ट मत सह-मैं क्षत्रिय होकर बहिन को कष्ट दूं-न !

बद—भाई मुझे कष्ट होगा तब, जब तुम मुझे मेरा काम न करने दोगे। यह जङ्गल और पहाड़ मुझे मेरे आशायश भरे महलों से कहीं अच्छे लगते हैं भाई ! मेरी कुटी-अहः—वह मुझे स्वर्ग सी प्रतीत होती है। भाई !

मुझे मत रोको—मैं प्रेम का प्रसार करूँगी-और खून को रोकूँगी। बस मुझे खून बहानाबुरा लगता है-भाई! मुझे ऐसी आज्ञा मत दो जिसे मैं न कर सकूँ। जब तक बुन्देलखण्ड स्वतन्त्र नहीं होता—मैं यहाँ से नहीं जाऊँगी—

प्राण—अच्छा बेटी! सभी बुन्देले तुम्हारे कृतज्ञ रहेंगे। जाओ, तुम मातृ-शक्ति की मूर्ति स्त्रियों में देश-प्रेम—और मानवीय प्रेम जाग्रत करो। तुम्हारी शक्ति हमें प्रोत्साहन दे—आओ-हम तुम्हारा हृदय से स्वागत करते हैं—

[शुभकरण का प्रवेश]

शुभ—[प्राणनाथ प्रभु को] भगवन् प्रणाम!

प्राण—आशीर्वाद-वीर तुम्हारी तलवार न्याय और देश-हित के लिए उठे।

दल—पिताजी प्रणाम—मुझे चरणों की रज दीजिए-आज मैं धन्य हूँ—कि फिर आपको पा सका हूँ।

शुभ—वीर बेटे-तुम पर मैं न्यौछावर हूँ। पर अभी प्रसन्नता का समय नहीं। मैं तुम्हारा सच्चा पिता उस दिन हो सकूँगा जिस दिन देश को स्वतन्त्र करने में समर्थ हो सकूँगा।

[चर का प्रवेश—प्रणाम करता है]

छत्र—क्या बात है—

चर—महाराज! सूचना मिली है कि दिल्ली का हुक्म पाकर ग्वालियर से फिदाईखाँ, बड़ी भारी फौज के साथ बुन्देलखण्ड को पद-दलित करने के लिए आ रहा है—

जिससे चम्पतराय की तरह किसी और को आगे सिर उठाने का साहस न हो।

शुभ—कोई बात नहीं। तुम जाओ, समाचार देते रहो। प्रभो, मुझे आज्ञा दीजिए, मैं सेना की तैयारियाँ करूँ।

प्राण—ठीक है—तब तक छत्रसाल शिवाजी से मिलकर आजाते हैं। तुम्हारे आजाने से अब हमें कोई भय नहीं। जाओ, छत्रसाल, देर मत करो—

छत्र—जो आज्ञा।

[प्रणाम करके प्रस्थान]

प्राण—शुभकरण-तुम जाओ-तुम भी अपने काम में लगो। इस बार यदि स्वतंत्र न हो सके तो फिर बुन्देलों का साहस भग्न हो जायगा-जाओ। पूरा उद्योग करो—

शुभ—जो आज्ञा-

[प्रणाम करके प्रस्थान]

प्राण—बदरुन्निसा-तुम कितनी छोटी हो-फिर भी तुम्हारा यह साहस। चलो, भारत की बालिकायें तुमसे शिक्षा ग्रहण करें। चलो-दलपति-चलो-आज इस मंगल प्रभात में मंगलकार्य आरम्भ करें।

[प्रस्थान]

पटाक्षेप

रणदूलहखाँ का पड़ाव

[रणदूलह—साक़ी—कंचुकीराय]

रण०—साक़ी—एक पैमाना और—वाह क्या चीज़ है ? दुनिया बदलने लगी। मौजों की सवा चलने लगी—किसी ने क्या ख़ूब कहा है—

"ग़म गलत सारे जहाँ का एक पैमाने में है ।"

जो मज़ा इसमें है-वह और कहाँ ? एक छोटा-सा प्याला और यह जादू-वाह रे ख़ुदा की क़ुदरत-वा-राजा साहब ! आप भी लीजिये।

कंचुकी—मुआफ़ फ़रमाइये—

रण०—(बड़ी घनिष्ठता से हाथ जाँघ पर रखता हुआ) अरे—यार, क्या बातें करते हो—क्या मज़हब से डरते हो। लो, अरे यार, एक तो लो। इन्सान सबसे बड़ा है—मज़हब इन्सान के लिए है-है न-इन्सान थोड़े ही मज़हब के लिए है-साक़ी-दो-एक राजा को। तुम ख़ातिर करना नहीं जानते—

[साक़ी हाथ बढ़ाता है। राजा साहब झिझकते हैं। रणादूलह अपने हाथ से प्याला उनके मुँह पर रखकर—]

हमारे कहने से-राजा साहब-एक—

कंचुकी—जी—यह—

रण—अजी-आप भी क्या कहते हैं। वाह-अभी देखिये कैसी मौज आती है—

[कंचुकीराय विवश होकर पी लेते हैं]

राजा साहब ! वाह—क्या चीज़ है—रंगत—रंगत— दिमाग़ कितना तेज़ हो जाता है—ग़ज़ब का—

कंचुकी—(मुँह बनाते हुए) जी. आप तो, मैंने तो कहा था न, आप बड़े ख़ातिरदान हैं-जी-मैं आपका—

रण—वह बन्दर—बन्दर—

कंचुकी—कौन ?

रण—अरे वही वही बन्दर ? बहुत उछल कूद मचाता है—ओ क्या नाम है उसका ? राजा साहब—क्यों—क्या नाम ?

कंचुकी—वह—हनुमान—

रण—ऊँ, कहाँ का पकड़ा—हनूमान नहीं—वह बन्दर— जिसका नाम—छन्दर—अरे! यहीं का—

कंचुकी—अच्छा-वह छत्रसाल-

रण—हाँ, हाँ वही छतरसाल-वह जो अजायबघर में रखने लायक है-राजा साहब-आपके यहाँ आप ही एक आदमी हैं या और भी-

कंचुकी—[मतलब न समझता हुआ]-आदमी !

रण—हाँ राजा साहब-मुझे तो सारे बुन्देलखण्ड में बस आप पसन्द आये। पर आप भी ख़ूब-क्या भूत बने थे। अमः साक़ी एक और-(एक और प्याली पीता है) अरे! कोई है! गाने वाले को बुलाओ-

शराब और गाना—बस-दुनिया इन दो गोलों में बंटी है-

कंचुकी—क्या कही है-मैंने तो कहा था न खाँ साहब, आप जुगराफ़िया तो ख़ूब जानते हैं-आपको तो—

(गाने वाले का प्रवेश)

रण—वाह! आइये क्या अदा है-कोई बाँकी चीज़ सुनाइए—हाँ-मौक़े की-

[गाने वाला कोर्निस करके गाने लगता है]

रण—(झूमते हुए) वाह!

कंचुकी—क्या कही है-वल्लाह!

रण—ख़ूब!

[गाने वाले का प्रस्थान]

राजासाहब! आपके कोई लड़का-वाला तो है नहीं

कंचुकी—एक लड़की है-बस—

रण—बड़ी ख़ूबसूरत होगी वह लड़की तो आपकी-

कंचुकी—क्या कहते हैं-आप? हम-

रण—आह! यार! आप समझे भो। मैं तो पूछ रहा हूँ। आप के कोई लड़का नहीं। तो फिर आप अपना राज्य मुझे क्यों नहीं दे देते राजासाहब! बुन्देलखण्ड मुझे पसन्द

है। मैं यहीं रहना चाहता हूँ। आप मुझे अपना राज्य दे दीजिये। अब आप बहुत बुड्ढे होगए।

कंचुकी—(सकपकाता हुआ) जी-ज़रा कुछ-सोच-

रण—सोच—क्या ? खुदा की कसम राजा साहब, आपको कोई तकलीफ़ न होने दूँगा—खुदा की कसम। आप कहेंगे तो आपकी लड़की की शादी शाही खान्दान में करा दूँगा। बोलिए राजा साहब! इस समय मेरी तबियत बहुत खुश है—

कंचुकी—फिर जबाब दूँगा—अभी—आपकी खातिर में तो कोई कमी नहीं—

रण—यही—बस यही कमी राजा साहब, आप मुझे बस अपना राज्य देदीजिए। फिर देखूँगा—उस बन्दर को, अगर आप नहीं देंगे तो जबरदस्ती—अच्छा जाइए—सोच लीजिए—

कंचुकी—जो हुक्म।

[आदाब करके जल्दी से प्रस्थान]

रण—यह राजा भी क्या बौड़म है ? देखूँगा। मगर ढांढेर हाथ सहज ही आगया तो बुन्देलखण्ड मेरा है। पर छत्रसाल—उँह फिर तो उसे कुचल दूँगा। पर वह बन्दर है बड़ा शैतान—कोई बात नहीं—सब देख लूँगा। यह हिन्दू—सब ऐसे ही हैं। फिर मैं सारे बुन्देलखण्ड का राजा हो जाऊँगा—खूब—वाह—मेरा दिमाग़ भी कैसा काम करता है।

[मसनद के सहारे बैठता है]

प टा क्षे प

[बदरुन्निसा का एक गांव के बच्चों के साथ]

बद—आओ—तुम्हें गाना सुनाऊँ—तुम भी गाना—

[गाती है]

जगत में घर की फूट बुरी—

सब— जगत में घर की फूट बुरी—

बद— घर की फूटहिं ते बिनसानी सुबरन लंक पुरी—

सब— घर की फूटहि ते बिनसानी सुबरन लंकपुरी—

बद— जगत में घर की फूट बुरी—

सब— जगत में घर की फूट बुरी—

बद— फूटो घर रितयौ ही दीखै, टूटी नाहिं जुरी

सब— फूटौ घर रितयौ ही दीखै, टूटी नाहिं जुरी

बद + सब— जगत में घर की फूट बुरी

बद— छोड़ो फूट मिलौ आपस में, उन्नति प्रेम-धुरी—

सब— छोड़ो फूट मिलौ आपस में, उन्नति प्रेम-धुरी—

बद + सब— जगत में घर की फूट बुरी—

प टा क्षे प

स्थान मार्ग

[छत्रसाल—महाराज मिर्ज़ा जयसिंह]

छत्र—महाराज ! यह बुन्देलखण्ड है। यहाँ की भूमि ही हमारे हृदयों का परिचय दे सकती है। हमारे हृदयों की महत्वाकांक्षाएँ विंध्य गिरि के शिखरों की तरह आकाश में तारों से बातें करती हैं—और वे अचल तथा अटल हैं। भूतल में बुन्देलों को निश्चय से कोई डिगा सके यह असम्भव है। साथ ही हमारे हृदय में बुन्देलखण्ड के इन झाड़-झंखाड़ों की तरह हरित कोमलता है—जहाँ उदारता और शीतलता लहलहाती रहती है। बुन्देलों को अपनी भूमि पर गर्व है—और वे उसे स्वतंत्र करने के लिए औरंगज़ेब का भय नहीं करते।

जयसिंह—यह तो ठीक है, वीर छत्रसाल। पर मैं तुम्हारे पिता के मित्र के नाते तुम्हें यह सलाह देना चाहता था कि शाहंशाह औरंगज़ेब तुम्हारे उपकार को मानता है—वह तुम्हारी बड़ी इज्जत करेगा—क्यों न एक बार दिल्ली चले चलो। इस बार जो देवगढ़-विजय में तुमने दिल्ली

साम्राज्य की सहायता की है—यह दूसरा भारी उपकार है।

छत्र—हः हः क्षमा कीजिये! आप मेरे पिता के तुल्य हैं। मैं आपको बहुत मानता हूँ पर निश्चय जानिये, यदि इस अवस्था में पिता जी भी दिल्ली जाकर औरंगज़ेब से सम्मानित होने का परामर्श देते तो छत्रसाल उनका विरोध करता। मदान्ध औरंगजेब! बुन्देलों को छोटा और तुच्छ समझने वाला! राजासाहब! मैंने एकबार माँग कर देख लिया बस दुबारा नहीं। अब तो जब तक यह स्वाँग हाथ में है छत्रसाल किसी से माँगेगा नहीं।

जय—वीर तुम्हारी वीरता के सभी कायल हैं, पर फिर भी सोचो सारा बुन्देलखण्ड यदि मिलकर खड़ा हो जाय तो औरंग-ज़ेब की सैना की बराबरी नहीं कर सकता—

छत्र—राजासाहब यह मर्माघात कर रहे हैं। बताइये-आपने बुन्देलखण्ड का क्या देखा, जो उसके वीरों का इस प्रकार अपमान करते हैं। बुन्देले—माफ कीजिये—आमेर के राजपूत नहीं जो पदलिप्सा में जाति-द्रोह कर अन्याय और अत्याचार का साधन बनें और अपने वीरत्व को कलंकित करें। बुन्देले मरना जानते हैं, यदि मार न सकेंगे तो मर जायेंगे—पर—पर क्षमा कीजिये आप लोगों की तरह दुम न हिलाएंगे।

जय—[क्रोध पूर्वक] यह बात

छत्र—हाँ, यह बात! औरंगजेब की सेना। [काँपते हुए] कहाँ गई उसकी शक्ति जब देवगढ़ पर आक्रमण किया

शक्ति शिवाजी के सामने क्या छू-मन्तर हो जाती है, या उसकी सेना की तलवारों में जंग लग जाती है ?

जय—हूँ-

छत्र—क्षमा कीजिए-आपने मेरे मर्माघात किया तब इतनी बात कही। थोड़े में बस इतना ही कि मैं अब दिल्ली नहीं जाऊँगा। वीरों का और मक्कारों का मेल नहीं हो सकता, राजा साहब! हाँ, क्या क्रुद्ध हो गये ? पर मैं क्या करूँ।

जय—छत्रसाल! तुम्हारा मेरे ऊपर उपकार है। देवगढ़ में तुम्हारी सहायता से ही विजय हो सकी-यह उपकार का बोझ मुझे रोक रहा है-नहीं······

छत्र—नहीं-तो-खैर, उसे भी कह लीजिए राजासाहब! मैं आपकी सलाह का बड़ा कृतज्ञ हूँ। पर बुन्देले सच बात को कहने में कभी भय नहीं करते और उन्हें इसी का बल है-

जय—तो मैं जाता हूँ-सावधान !

[प्रस्थान]

छत्र—खूब सावधान हूँ। अब बुन्देलखण्ड का कोई बाल बाँका नहीं कर सकता।

[विजया का प्रवेश]

विजया—वीर-अहः आज तुम कैसे भव्य प्रतीत होते हो। तेज-मंडित मुख-

छत्र—आओ विजये! तुम बुन्देलखण्ड की विजय की तरह मेरा स्वागत करने आगयीं-तुम्हारा नाम ही विजया है-

विजया—वीर, विजय तो तुम्हारी पद-सेविनी है-पर इस समय

इन प्रशंसा-प्रशस्तियों का काम नहीं। तुम्हें चलकर उद्धार करना है-

छत्र—उसके लिए तो मैं इतनी शीघ्र आया ही हूँ। पर क्या कोई विशेष समाचार है, जिसके कारण तुम्हें इतनी व्यग्रता है, विजये! तुम्हारा वीर मुखमण्डल व्यग्र होना अच्छा नहीं लगता।

विजया—वीर-हाँ एक बड़ा भारी संकट उपस्थित है। बुन्देलखण्ड को दो दिल्ली की सेनाओं ने घेर रक्खा है। एक रण-दूलहखाँ के अधीन ढाँड़ेर में पड़ी हुई है।

छत्र—रणदूलहखाँ! उसे बड़ा चस्का लग गया है। कायर इतना विमर्दित होने पर भी वहीं पड़ा है-अच्छा—

विजया—और दूसरी सेना फिदाईखाँ के अधीन ओड़छा में पड़ी हुई है।

छत्र—यह बात! कोई चिन्ता नहीं।

विजया—नहीं-मेरे पिताजी ने यह निश्चय कर लिया है कि वे अपना राज्य रणदूलहखाँ को सौंप देंगे।

छत्र—हा! हतभाग्य बुन्देलखण्ड! विजया! तुम्हारे पिताजी की बुद्धि न जाने भगवान ने ऐसी क्यों करदी?

विजया—वीर! वे मेरे पिता हैं-मैं उनसे कुछ कह नहीं सकती। पर आप उद्धार कर सकते हैं। रणदूलहखाँ और फिदाईखाँ के परास्त होजाने पर ही बुन्देलखण्ड स्वतन्त्र है-ओड़छा और ढाँड़ेर यही दो राज्य केवल विघ्न खड़ा कर रहे हैं।

[विमल का प्रवेश]

विमल—और यदि समय पर उनका दमन न हुआ तो फिर ठीक नहीं।

छत्र—विमल ! इसका क्या अर्थ ?

विमल—इसका अर्थ यही है कि ओड़छा में फिर सभी राजाओं को आमंत्रित किया गया है। प्राणनाथ प्रभु के उद्योग से यद्यपि सभी राजा देखने में आपका साथ देने के लिए तत्पर हैं-पर न जाने (माँ) वहाँ क्या चाल चले ?

छत्र—किञ्चित भी भय मत करो। वह सर्वशक्तिमान् सब भला करेंगे। बस केवल स्वतन्त्रता का सूर्योदय होना शेष है। बुन्देलखण्ड का अन्तर-विरोध दूर हो गया—बस यह स्वतन्त्रता है—फिर औरंगजेब क्या, विजया ! सारी दैवी-शक्तियाँ मिलकर भी बुन्देलखण्ड को परतंत्र नहीं बना सकतीं। बस अब देर नहीं। रणदूलह—और फ़िदाई—ये छत्रसाल की तलवार के सामने कुछ नहीं—

प टा क्षे प

एक मैदान

[नागरिक एकत्रित हैं। प्राणनाथ प्रभु खड़े हुए हैं—पास ही दलपति बैठे हैं]

प्राण—तुम लोग बुन्देलखण्ड की सन्तान हो। तुम वीर हो। तुम्हें अपनी वीरता का अभिमान होना चाहिए। जो जाति अपनी वीरता को भूल बैठती है, वह इस धरातल से विलुप्त हो जाती है। पर, बुन्देलो—वीरता भाई-भाई से लड़ मरने में नहीं। तुम मनुष्य हो, ईश्वर ने तुम्हें परस्पर प्रेम बढ़ाने के लिए, इस सृष्टि को स्वर्ग बनाने के लिए भेजा है। तुम चैतन्य हो जाओ। तुम यदि यह जान लो कि तुम में वह शक्ति विद्यमान है जिससे कलुष भस्म हो जाते हैं, तो फिर कल्याण हो जाय।

[रणदूलहखाँ का प्रवेश। साथ में दो-तीन सिपाही, मद्यपों की-सी हालत में]

रण—यह कौन बोल रहा है। मुँह बन्द करो—क्या मदरसा खोल रक्खा है—हः हः हः अरे यह स्वामी है—अहा हिन्दुओं का स्वामी है—हः हः हः

एक—कौन बोलता है—किसकी शामत आयी।

दूसरा—यह है—

तीसरा—आ तो सही!

चौथा—अब हम यह अपमान······

प्राण—वीरो—

एक—ठहरो—सुनो स्वामीजी कुछ कह रहे हैं।

प्राण—वीरो! शान्त रहो। इन मद्यपों की बातों पर ध्यान मत दो—

रण—अहः यह वही सुआमी है—जो बुन्देलखण्ड को भड़का रहा है। ख़ूब पाया है—चलो पकड़ो—मारो—

[बढ़कर प्राणनाथ के पास पहुँचते हैं, पर आत्म-तेज से विस्मित हो जाते हैं]

एक—अगर स्वामीजी का बाल भी छूआ तो, दुष्ट हम तुझे फाड़ खायेंगे, ठहर, ठहर—

[कुछ खड़े होते हैं]

प्राण—वीरो! शान्त—तुम निश्चय समझो—यह मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। तुम चुपचाप देखते रहो। कोई भी चूँ मत करो। ब्रह्मचारी का मद्यप कुछ नहीं कर सकता।

रण—मैं देखूँ तेरा भिरमचारी—आ तो सही—

[क़दम बढ़ाता है, रुक जाता है]

प्राण—हः हः बस, यही योद्धापन है।

रण—और फिर हँसता है? [हशमत ख़ाँ से] हशमतख़ाँ—मारो इसे—मेरा हुक्म है—

हशमत—[रहमत से] रहमतखाँ, खड़े देख रहे हो ! मारो काफ़िर को बढ़ो आगे—चलो—

रहमत—[करीम से] करीम—सुन रहे हो, क्यों ? हुक्म मानने में इतनी देर, मारो—

[करीम का प्रस्थान]

जाता है, अबे ओ करीम—

[बुलाने के बहाने वह भी चला जाता है]

प्राण—ह: ह: ह:

दलपति—अह: कितना दुख है ? आज इन वीरत्व शून्य मद्यपों ने हम सिंहों को बाँध रखा है, उफ़—हमारा इतना पतन।

रण—(हँसता है) अच्छा—आ—(तलवार निकालकर बढ़ता है) आ—

[फिर रुक कर]

प्राण—बस—ह: ह: ह:

रण—(क्रोध में दाँत मिसमिसाता है) ह: ह: हँसता है—हँसता है

[क्रोध में आँखें मूँद कर तलवार चलाना चाहता है–बदरुन्निसा आकर बीच में खड़ी हो जाती है]

बद—रणदूलहखाँ—

रण—ई—ई—

बद—मुझे जानते हो ?

रण—शाहज़ादी को कौन न जानता होगा। मैं आदाबअर्ज़ करता हूँ।

बद—जाओ—यहाँ से—एक निहत्थे पर हाथ चलाने में अपनी बहादुरी समझते हो—जाओ—

रण—जो हुक्म—

[प्रस्थान]

बद—(प्राणनाथ से) स्वामिन् ! एक आवश्यक कार्य है। यह सभा समाप्त कीजिए।

प्राण—वीरो ! तुम सभी सैनिक बनो। यही मेरा सन्देश है। दलपति तुम्हें शिक्षा प्रदान करेगा—तभी तुम अपना अभीष्ट पा सकते हो। बोलो, तैयार हो ?

सब—तैयार हैं—

प्राण—तो जाओ—दलपति ! इन्हें ले जाओ। इनका जीवन आज से सैनिक जीवन है।

दल—विन्ध्यवासिनी देवी की जय !

सब—जय !

दल—वीरो ! सब मेरे पीछे चले आओ।

[दलपति के साथ सब चले जाते हैं]

प्राण—क्या बात है—बेटी !

बद—स्वामीजी, कल ओड़छा में सभी बुन्देले राजा एकत्रित होंगे। वहाँ पहुँचना आवश्यक है। यदि हीरादेवी की चाल चल गयी तो हम लोगों का सारा उद्योग विफल हो जायगा। आयी स्वतंत्रता हाथ से निकल जायगी। ओड़छा और ढाँड़ेर के राज्य यदि हमारी ओर होगए तो बुन्देलखण्ड स्वतन्त्र है। मैं दिल्ली जारही हूँ—अभी—मुझे पिताजी ने बहुत सख्त याद किया है—मैं कितना चाहती हूँ कि बुन्देलखण्ड स्वतन्त्र हो जाय, प्रभो!

प्राण--जाओ बेटी, दिल्ली जाओ। यहाँ हम लोग अपनी करनी में कुछ कसर न छोड़ेंगे--जा--अपने पिता के प्रिय पार्श्व में जा।

[बदरुन्निसा का प्रस्थान]

[शुभकरण का प्रवेश]

शुभ--भगवन्, शुभकरण चरणों में प्रणाम करता है--

प्राण--आशीर्वाद वीर! क्या समाचार है? तुम्हारी सेना सब तैयार है?

शुभ--आपके आशीर्वाद से सब ठीक है। भगवन्! वह आग लग रही है कि फूँक मारते दावा की तरह शत्रु-राज्य को ध्वस्त करके फेंक दे। बुन्देले पूरे संगठित हैं। एक समाचार है--

प्राण--क्या?

शुभ--वीर छत्रसाल लौट आये हैं--वे सीधे ओड़छे की ओर चले गए हैं। आपके चरणों में प्रणाम कहा है और आपको उधर ही--

प्राण--ठीक--छत्रसाल आगया। अभी हम उधर ही चलने वाले थे।

[प्रस्थान]

—प टा क्षे प—

ओड़छे का दीवानखाना

[सभी राजा बैठे हैं। हीरादेवी राजमुकुट धारण किए हुए है। एक गद्दी पर फ़िदाईख़ाँ और दूसरी पर हीरादेवी]

हीरा—वीर बुन्देलो ! मैं आपकी बड़ी कृतज्ञ हूँ। आपने सदा मेरा साथ दिया है। आज भी जो नया संकट उपस्थित होता दिखाई पड़ता है उसमें आप हमारा साथ देंगे। और बड़े भाग्य की बात है कि शाहंशाह के प्रतिनिधि फ़िदाईख़ाँ साहब सिपहसालार सूबा ग्वालियर भी आज हमारे बीच में उपस्थित हैं--

कालिञ्जराधिपति—हम यह सब सुनने नहीं आये। हम पहले यह जानना चाहते हैं कि राजा पहाड़सिंह का यह मुकुट तुमने क्यों पहन रक्खा है ? तुम्हें इस पर क्या अधिकार था।

दूसरा—हमें ख़ूब याद है, मरते समय राजा पहाड़सिंह ने यह राज्य छत्रसाल को सौंपा था—

हीरा—ठहरिये ! मैं सब बताए देती हूँ—पहले—

तीसरा—पहले इसी बात का जवाब देना होगा। हम पहाड़सिंह की मृत्यु के बाद सिंहासन का यह अपमान नहीं सह सकते।

हीरा—सुनिये—विमलदेव के रहते किसी और को—

कालि--विमलदेव--क्या वह पहाड़सिंह का पुत्र है ?—

हीरा—हाँ—पुत्र है—

[विमला का स्त्री-वेश में प्रवेश]

विमला—हीरादेवी झूँठ कहती है। इसने मुझे अपनी स्वार्थ-लिप्सा की पूर्त्ति के लिए—पाप का घड़ा भरने के लिए मुझे पुरुष बना रक्खा है। हीरादेवी ! क्या अब भी तू कह सकती है कि मैं तेरा पुत्र हूँ।

हीरा—[काँपती हुई]-विमलदेव ! विमला—छल-धोखा-राजाओ ! आपको धोखा दिया जा रहा है—यह छत्रसाल ने कोई चाल रची है।

विमला—मेरी माँ का स्वाँग भरने वाली स्त्री, क्या अब भी तू मुझे अस्वाभाविक वेश में देख रही है। स्त्री होते हुए भी मुझ में शुभकरण का वीर-रक्त संचार कर रहा है—बोल—कहाँ है—विमलदेव ?

दूसरा राजा—बता ! हीरादेवी कहाँ है, विमलदेव ? छल—हम लोगों को छला—

फ़िदाईख़ाँ--ख़बरदार ! हल्ला मत करो ! हीरादेवी, तुम अपनी गद्दी पर बैठो। मैं तुम्हें ओड़छा की रानी बनाता हूँ—कौन है--किसमें साहस है जो इसका विरोध करे ?

[छत्रसाल का प्रवेश]

छत्र—यह साहस छत्रसाल में है। फ़िदाईख़ाँ ! क्या समझ रक्खा है—तुम ख़ुदाई पैग़म्बर हो जो बुन्देलखण्ड के

इतने राजाओं का अपमान करते हो। किसने तुमको इस गद्दी पर बिठाया। साधारण-क्षुद्र-सिपहसालार-- इन सोते वीरों पर शासन करना चाहते हो--[राजाओंसे] वीर बुन्देलो! क्या तुम्हें दिल्ली के अधीन रहना स्वीकार है—क्या तुम्हें कुत्ते की तरह दुम हिलाना स्वीकार है?

सब राजा--नहीं!

छत्र--क्या तुम अपने देश के दीनों और निरीहों को कुचलवा डालना चाहते हो? क्या तुम अपनी स्त्रियों की लज्जा को फाड़ फेंकना चाहते हो?

सब राजा—नहीं--कदापि नहीं!

छत्र—क्या तुम धर्म को दलित देख सकते हो? क्या न्याय और सत्य की हत्या तुम वीर होते हुए देख सकते हो?

सब राजा—नहीं—

छत्र—नहीं—तो फिर क्या तुम मेरा साथ दोगे?

कालिंग – देंगे—अवश्य देंगे –

छत्र--फ़िदाईख़ाँ--उतरो इस गद्दी पर से। उतरो।

[फ़िदाईख़ाँ काँपता हुआ उतर आता है]

तुमने राजपूतों का अपमान किया है। उन्हें लल-कारा है--अन्यायी! तुम उनके धर्म को कुचल कर, ओड़छा के चतुर्भुज के मन्दिर को तोड़कर उनके शासक बनना चाहते हो--मैं तुम्हें बन्दी बनाता हूँ--

[बन्दी बनाता है, फ़िदाईख़ाँ कांप रहा है। प्राणनाथ का प्रवेश]

प्राण--वीर छत्रसाल की जय!

सब राजा--जय !

छत्र—वीरो ! चलो, अब हमें कोई अधीन नहीं रख सकता। तुम्हारा बल बड़ा भारी है । चलो--ढाँड़ेर की रक्षा करनी है।

[सब का प्रस्थान—छत्रसाल फ़िदाई को बांधे पीछे पीछे चलता है]

हीरा--(पागल की तरह-तलवार उठाकर) जा, देखूँ कैसे जाता है ।

[तलवार छत्रसाल की पीठ पर मारना चाहती है—शुभकरण तीव्रता से प्रवेश करके उसका हाथ पकड़ लेता है । छत्रसाल ठहर जाता है]

शुभ—पापीयसी—बोल ! अब भी तू अपना पाप नहीं छोड़ती--

[एकटक शुभकरण की ओर देखती रहती है ।]

मायाविनी—अब तेरा जादू कहाँ गया ? छलने ! बता—तैंने मेरा मित्र खा लिया । चम्पतराय—आह ! वह आग अभी-अभी हृदय में कैसी धू धू करके जल रही है--खा लिया--डाकिनी--आह ! बच--आज बच--

[तलवार हीरादेवी की ओर बढ़ाता है । प्राणनाथ प्रभु का प्रवेश]

प्राण—वीर—शुभकरण—यह क्या—स्त्री पर आघात—

शुभ—स्वामिन—यह स्त्री नहीं—राक्षसी है। आह ! यह शूर्पणखाँ की तरह मलिन और ताड़का की तरह भयंकर है । इसे तो मैं जीवित नहीं—

प्राण—वीर ! कैसी बातें करते हो ? पापी का हृदय कमज़ोर होता है । उसकी आत्मा भयभीत रहती है । इसकी ओर तो

तुम ज़रा कठोर दृष्टि से देख दो-यही पर्याप्त है। क्यों अपने हाथ पाप के रंग में रँगते हो?

[प्रस्थान]

शुभ—[हीरादेवी को घूरता हुआ] जा-जा बिता अपने पापी जीवन को कहीं। ढोंग का ऐसा हाल! कितनी घृणित है तू-जा!

[धक्का देकर दूर कर देता है हीरादेवी चली जाती है।]

छत्र—वीर! आप शान्त हों-

शुभ—बेटे! शान्त—शुभकरण के जीवन में शान्त होना कहाँ? चम्पतराय! मित्र—(आकाश की ओर देखता है फिर छत्रसाल की ओर आकर्षित होकर) पर नहीं छत्रसाल—मैं अपने हृदय को दबाऊँगा। चलो। कहाँ? ठीक-ढाँड़ेर चलो, देर करने की आवश्यकता नहीं।

[सब का प्रस्थान]

[हीरादेवी का अस्त व्यस्त दशा में प्रवेश]

हीरा—कौन-कान है यह? भाग-ह: ह: ह:-भाग-भाग-अरे-छोड़! छोड़ मुझे-कौन है-तू-ऐसी तेज आँख-अरे-जली-भाग-पहाड़सिंह-हिः हिः हिः पहाड़-विमल-आ तुझे खाऊँ-शुभकरण-अः अः हीरादेवी-ई-तू-[चक्कर खाकर गिर पड़ती है। उठ खड़ी होती है] भाग-कहाँ जाऊँ-[सामने देखती है। एक भयंकर भूत दिखाई पड़ता है] ई-ई-ई-हीरादेवी-हीरादेवी-तू-खायगी मुझे [दूसरी ओर देखती है। एक दूसरी भयानक शकल दीखती है] ई-ई-[जोर से डकराती है] अ-मैं कौन हूँ-अरे-शुभकरण-खाया-बचाओ—अरे मुझे

बचाओ-[जिधर देखती है, उधर ही उसे भयानक शकलें दीखती हैं। चारों ओर से भय खाती हुई दौड़ती है] बचाओ, अरे मुझे बचाओ—मरी-शुभकरण—[बैठ जाती है] शुभकरण! अह: विमला—ह: ह: (रोती है, सिर के बाल नोचती है) अरे—अरे—यह क्या (पैर की ऐड़ी रगड़ती है) आग—आग—(भागती है) मुझे कौन बचायेगा। आह--आह--अरे—अरे किससे कहूँ—शुभकरण—हि: हि: हि: चम्पत—चम्पत—मरी—ई—

[सब भयंकर शकलें हीरादेवी की ओर बढ़ती हैं हीरादेवी थर-थर काँपती है। एक साथ बड़े जोर की हुँकार होती है। हीरादेवी गिर पड़ती है]

प टा क्षे प

[स्थान—दिल्ली, बदरुन्निसा का भवन]

बद—(गाती है)

मैं मधु-जीवन का मधुर बनाने आयी
मैं सुखद कल्पना, स्वर्ग-रश्मि शुभ लायी
मैं तप्त सूर्य से हिम-कण होकर बरसी ।
मैं अग्निशिखा में शीतल जल सी सरसी ॥
मैं मरुद्यान बन मरुस्थलों में भायी ।
मैं मधु-जीवन को मधुर बनाने आयी ॥
मैं जग-स्रष्टा की काव्य-कुशलता हुलसी ।
मैं वेद, अवस्ता, ईशु, मुहम्मद, तुलसी ॥
मैं सूखे जग में सरस मोद सी छायी ।
मैं मधु-जीवन को मधुर बनाने आयी ॥
बस मैंने हँस भर दिया जगत हँस बोला ।
मैंने सुन्दरता-रूप-राशि को खोला ॥
मुझसे ही जग ने सुख-सौरभ-श्री पायी ।
मैं मधु-जीवन को मधुर बनाने आयी ॥

[औरंगजेब का प्रवेश]

औ—पगली—बदरुन्न—

बद्—कौन—अब्बा ! मुझे क्यों बुला भेजा है? अब्बा ! बुन्देलखण्ड को स्वतन्त्रता के लिए पागल हृदय में मैंने एक शान्ति-कुटी बनायी है—वहाँ के मनोरम नन्दन तपोस्थल से मुझे यहाँ क्यों बुला भेजा ?

औरंग—बेटी ! दुनिया औरंगज़ेब को संगदिल समझती है—पर बेटी मैं भी इन्सान हूँ । मेरे दिल में जिस वक़्त तेरी मीठी याद हूक की तरह तड़प कर उठती थी—तो मैं ही जानता था ! बेटी ! तू शाहंशाह की लड़की होकर बनों जंगलों में ठोकर खाती फिरे इससे किस बाप के दिल में दर्द न होगा—

बद्—अब्बा—मुझे वहाँ बड़ा सुख था । वहाँ पशु-पत्ती तक मेरे साथी थे । वहाँ मैंने मनुष्य को मनुष्य पाया, छली कपटी नहीं—मुझे वहाँ बड़ा अच्छा लगता है ।

औरंग—बेटी—तू क्यों औरंगज़ेब के जिगर को रेगिस्तान बना रही है । न, अब मत जा, बेटी ! अब मत जा ।

बद्—अब्बा, मत रोकिए । इन महलों की ये दीवारें मुझे क़ैदखाना लगती हैं ।

औरंग—बेटी ! प्यारी बदरुन्न ! तू ऐसी क्यों होगयी, बेटी—तेरा बाप शाहंशाह आलमगीर—उसके लिए, उसके सुख के लिए एक हरा-भरा कोना था, बेटी, उसे भी तूने सुखा दिया—हा ! बेटी ! जा—मत जा—अब मत जा। बेटी ! तू यहीं कहीं अपनी कुटी बना ले, बेटी—तू नहीं जानती मैंने इतने दिन कैसे काटे हैं? महल मुझे

कैसे सुनसान—खौफ़नाक लगते रहे, तू जो कहेगी बेटी मैं करूँगा—पर तू मेरी जिन्दगी को, इस बुढ़ापे की जिन्दगी को एक बवाल मत बना बेटी !

बद—अब्बा ! अब्बा ! रोइए मत—अब्बा-अब्बा—मैं आपकी ख्वाहिश के खिलाफ़ अब नहीं जाऊँगी—पर—

औरङ्ग—पर क्या बेटी ?

बद—पर—अब्बा ! छत्रसाल मेरा भाई है—

औरंग—बेटी—उसे मनसब दे, रुतवा दे—

बद—न अब्बा ! अगर बुन्देलखण्ड स्वतन्त्र न होगा तो वह दुखी रहेगा—अब्बा ! मैं उसका दुख नहीं देख सकती-- अब्बा मैं ! उसे बहुत प्यार करती हूँ—

औरंग—बेटी ! (उसे प्यार से दुलराता है) बेटी ! यह बहुत ज्यादा है—पर खैर,

—प टा क्षे प—

स्थान ढाँड़ेर राज्य

[कंचुकीराय की राज सभा]

कंचुकी—तो मैंने यह निश्चय कर लिया है। मैं रणदूलहखाँ को अपने राज्य का कर्ता-धर्ता बनाऊँगा और मेरे बाद वही राज्य का मालिक होगा।

मंत्री—भगवन् आप गरीबपरवर हैं। आप ऐसा न करें। प्रजा को दुःख होगा।

कंचुकी—मंत्री, कैसी मूर्खता की बातें कर रहे हो। शाहंशाह औरंगजेब का ही, सिपहसालार—ऐसा योग्य आदमी, राज्य का सुप्रबन्ध करने वाला कहाँ मिलेगा ?

मंत्री—महाराज—छत्रसाल—

कंचुकी—(घबड़ा कर जोर से) अरे—मत लो इस दुष्ट का नाम। मेरे राज्य में जो कोई भी इसका नाम लेगा, वह जेल में ठूँस दिया जायगा। समझे मंत्री बस—मैंने निश्चय कर लिया है—निश्चय कर लिया है कि रणदूलहखाँ मेरे बाद ढाँड़ेर का राजा होगा—

[रणदूलहखाँ का प्रवेश]

रणदूलहखाँ—राजासाहब—

कंचुकी—(गद्दी से उतर कर) अहा आपने कष्ट किया। आइए। मैंने यह निश्चय किया है कि आप मेरे बाद यहाँ के राजा हों—

रणदूलहखाँ—राजासाहब मैं आपका बड़ा एहसानमन्द हूँ। पर मैं आपके एहसानों को कैसे चुका सकूँगा। आपके मरने के बाद क्या पता लगेगा कि मैं आपकी कितनी खातिर करना चाहता था। मैं चाहता हूँ—आप वृद्ध हो गये—मुझे अभी आप राजतिलक करदें। जिससे मैं आपकी खातिरदारी का कुछ तो मौका पा सकूँ।

कंचुकी—(सिटपिटा कर) जी-जी—मैंने तो कहा था न, जी, मुझे क्या उज्र है—हाँ, आप शाहंशाह के सिपहसालार हैं—आप जैसा ठीक समझें जो, मैंने तो—

रणदूलहखाँ—तो मँगाइए जल्दी सामान—

कंचुकी—जी—जो हुक्म, मैंने तो कहा था न, मैंने तो—मंत्री तिलक का सामान लाओ—

[मंत्री कुछ हिचकिचाता है]

कंचुकी—जल्दी उठो मंत्री—

रणदूलहखाँ—जल्दी करो, देर करोगे तो क़ैद कर दिये जाओगे—

[मंत्री सामान लाता है—उसे कंचुकीराय की ओर बढ़ाता है—
विजया का प्रवेश]

विजया—पिताजी, आप यह क्या अनर्थ कर रहे हैं। जब सारा बुन्देलखण्ड स्वतंत्रता का राग अलाप रहा है—आप

अपनी प्रजा को इस प्रकार बन्धन में डालना चाहते हैं। कुछ सोचिये—सारा बुन्देलखण्ड स्वतंत्र हो गया है। सब राजा मिल गये हैं—क्या आप ही देश-द्रोही, स्वतंत्रता द्रोही और प्रजा शत्रु कहलाना चाहते हैं—बोलिए आपने प्रजा से पूछा—

कंचुकी—ढीठ लड़की—चल यहाँ से—लज्जा हीन—प्रजा कोई खिलाफ़ नहीं।

प्रजा—हम सब खिलाफ़ हैं—हम कोई रणदूलहखाँ को राजा नहीं चाहते।

रणदूलहखाँ—कंचुकीराय—यह तुम्हारी लड़की है—इसने तुम्हारी प्रजा भड़का रक्खी है।

कंचुकी—जी, यह बात है—मैंने तो, विजया चली जाओ यहाँ से-

विजया—मैं—नहीं जा सकती। आप अपना निश्चय लौटाइए।

कंचुकी—नहीं जायगी क्यों? अच्छा मैं तुझे राज-विद्रोही समझता हूँ। कोई है? सिपाहियो इसे गिरफ्तार करलो।

एक सिपाही—हम देवी तुल्य राजपुत्री विजया को बन्दी नहीं बना सकते।

कंचुकी—अरे आज हो क्या गया है तुम लोगों को, देखते नहीं।

विजया—पिताजो, इस ज़ालिम को, इस कायर को आप अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहते हैं!

रणदूलहखाँ—हूँ राजासाहब आपके रहते मेरा अपमान! हशमत! पकड़ो इस दुष्ट लड़की को, ऐसी बात कहती है।

[हशमत बढ़ता है]

विजया—क्यों पिताजी आप मेरा अपमान सह सकते हैं। अपनी लड़की का।

कंचुकी—मेरी लड़की ऐसी नहीं।

रणदूलहखाँ—देर मत करो, पकड़ो इस पाजी को।

(हशमत कुछ भयभीत होते हुए आगे बढ़ता है)

विजया—हूँ ! हूँ !! (तलवार निकाल कर) म्लेच्छ मेरी नसों में वीर माता का रक्त है। आगे बढ़ा तो भूमि पर लोटने लगेगा।

रणदूलहखाँ—रहमत-हशमत। डरो मत-दोनों मिलकर पकड़ो—

[छत्रसाल का प्रवेश]

छत्रसाल—ठहर जाओ-ओ नृशंसो—

[कंचुकीराव और रणदूलहखाँ सकपका कर गद्दी से उतर पड़ते हैं]

एक असहाय स्त्री पर हाथ उठाते हो। अकेली लड़की पर-लज्जा नहीं आती। खाँ साहब मुझे गिरफ़्तार कीजिए-है किसी का साहस-कायरो। दलपति-बन्दी करो-इन आततायियों को—

[दलपति हशमत और रहमत को पकड़ता है]

मान्य शुभकरणजी-इन खाँ साहब को भी बन्दी बनाइए।

[शुभकरण गिरफ्तार कर लेता है]

सब प्रजा—वीर छत्रसाल की जय—

छत्रसाल—राजा साहब-सारे बुन्देलखण्ड ने स्वतंत्रता की ध्वजा फहरादी है। ओड़छा भी परतंत्रता के पंजे से मुक्त हो गया है-आप क्या चाहते हैं ?

कंचुकीराय—(कुछ सावधान होकर) वाह्-मैं तो यह चाहता ही था। मैंने तो कहा था न, मैं तो आपको अपना राज्य देनेकी सोच ही रहा था-तुम खूब वक्त पर आये।

(सब हंस पड़ते हैं)

छत्रसाल—राजासाहब-तो ठीक है। मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। वीरो बोलो स्वतंत्रता देवी की जय।

सब—स्वतंत्रता देवी की जय।

[प्राणनाथ का प्रवेश]

प्राणनाथ—वीर बुन्देलों की जय-

[सब स्वामी प्राणनाथ को प्रणाम करते हैं]

प्राणनाथ—अह: तुम कैसे वीर हो-छत्रसाल तू धन्य है। और दलपति शुभकरण तुम सभी धन्य हो। तुम्हारे उद्योग से सारा खण्ड एक होगया। एकना ही स्वतंत्रता है। यदि-अब औरंगजेब चाहे तब भी तुम्हें अपने अधीन नहीं कर सकता। संसार की कोई शक्ति किसी पर उसकी इच्छा के विरुद्ध शासन नहीं कर सकती-औरंगजेब तो क्या चीज है-

[बदरुन्निसा का प्रवेश]

बदरुन्निसा—उद्योग की विजय है। भाई-छत्रसाल--पुकारो तो सही अपने उसी सकरुण ममता पूर्ण शब्दों में मुझे बहिन कहकर पुकारो--भाई उस स्वर में पुकारो, जिस स्वर में तुमने उस दिव्य मंगल संध्या को मुझे पुकारा था—और मुझे पाप से उबारा था—

छत्रसाल—(कुछ आगे बढ़ कर) बहिन, मेरी प्यारी बहिन–अपने भाई के लिये–उसके स्वातंत्र्य यज्ञ के लिए पागल–मेरी बहिन–तू आज कैसी मधुर–दिव्य–उषा की भाँति अनुराग से छलछलाती हुई प्रतीत होती है–बहिन—

बदरुन्निसा—भाई–मेरे प्राणोपम भाई—लो यह सम्राट औरंगजेब का परवाना लो। उद्योग की विजय होती है।

सब—स्वतंत्रता देवी की जय—

छत्रसाल—बहिन—तुम्हारा उपकार सारा बुन्देलखण्ड मानेगा। तुम हमारे लिये मूर्तिमान स्वतंत्रता हो। बहिन तुम—

[छत्रसाल और बदरुन्निसा मिलते हैं]

शुभकरण—अहः आज स्वतंत्रता मिली—आज मित्र चम्पत! तेरा उद्देश्य पूरा हुआ—बेटा दलपति! तू मेरा बेटा हुआ।

(दलपति से मिलता है)

प्राणनाथ—आह–यह आनन्द उन्माद–यह क्या–यह देखो—देवी विंध्यवासिनी देवी कैसी प्रसन्न प्रतीत होती हैं।

[पर्दे की ओर इशारा करते हैं–पर्दा फटता है–देवी प्रकट होती हैं उनके दोनों ओर अप्सराएँ नाच रही हैं]

सब—विंध्यवासिनी देवी की जय।

देवी—वत्स-छत्र! स्वतंत्रता को वरमाला तुझे विजया और विमला ने पहनादी थी—उनकी माला से बुन्देलखण्ड का मुक्ति-यज्ञ आरम्भ हुआ था, उन्हें तू अपना। मुक्ति-यज्ञ समाप्त हुआ।

[विजया और विमला छत्रसाल से मिलती हैं]

सब—धन्य !

[तीव्र प्रकाश के साथ स्वर्ग में चम्पतराय प्रकट होते हैं और फूल बरसाते हैं।]

सब—स्वतंत्रता देवी की जय !

पटाक्षेप

अपने ढँग के अनूठे निबन्धों का संग्रह

साहित्य की झांकी

लेखक—प्रो० सत्येन्द्र एम० ए०,

पुस्तक में ७ आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह है। सभी निबन्ध विद्वत्तापूर्ण और विवेचनात्मक हैं। हिन्दी-साहित्य के विद्यार्थियों के लिये इसका पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। पुस्तक की महत्ता निम्न सम्मतियों से ही ज्ञात होती है :—

भारत—'पुस्तक के सभी निबन्ध गम्भीर अध्ययन एवं अनुशीलन का आभास देते हैं। लेखक के विचार प्रौढ़ हैं।'

प्रताप—'श्रीयुत सत्येन्द्र हिन्दी संसार के मौन साधक हैं।...इसमें कोई शक नहीं कि लेखक ने एक नये दृष्टिकोण से हिन्दी के विकास को देखने के लिये हिन्दी संसार के सामने सामग्री दी है।'

स्वराज्य—'......उनकी यह साहित्य-विवेचनात्मक पुस्तक हिन्दी साहित्य की विचारधारा समझने वालों के लिये मार्ग-दर्शक का काम देगी।'

इतनी महत्वपूर्ण पुस्तक का मूल्य केवल बारह आना।

मिलने का पता—

साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

हिन्दी-आलोचना-क्षेत्र में

नवीन दृष्टिकोण

गुप्तजी की कला

[लेखक—प्रो० सत्येन्द्र एम० ए०]

राष्ट्र के प्रतिनिधि कवि के विशाल मानसिक जीवन का ऊहापोह करना सरल कार्य नहीं है। मैथिलीशरणजी गुप्त का निर्माण आड़ी-टेढ़ी रेखाओं से हुआ है। लेखक के ही शब्दों में—

"उनका मानसिक जीवन संवेदना से परिप्लावित है। उसमें बवण्डर और क्रान्तियाँ हैं—जीवन की सरस मनोरमता के आगे आग के तूफान तक उठे हैं।......"

इस सब की रूप-रेखा से परिचित होने के लिए कवि की निर्माण सामग्री का विश्लेषण अपेक्षित है। साहित्य के गम्भीर विद्यार्थियों के लिए सत्समालोचना का यह ग्रंथ अत्यन्त आवश्यक है। इसमें कवि के प्रत्येक अंग पर उसकी प्रत्येक कृति पर नूतन-आधुनिक दृष्टि से प्रकाश डाला गया है। साहित्यिक पुस्तक होने के अतिरिक्त यह इन्टरमीडिएट, बी० ए०, तथा एम० ए० के विद्यार्थियों के लिये अत्यन्त उपादेय है। गुप्तजी जैसे महा कवि एवं महान कलाकार का विस्तृत एवं गम्भीर अध्ययन करते हुए इतनी विशद आलोचना अभी तक हिन्दी में किसी ने नहीं की। मूल्य केवल बारह आना।

मिलने का पता—

साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

विद्यार्थियों के लिए अमूल्य पुस्तक

हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास

लेखक—

हिन्दी के एक अनुभवी अध्यापक

इस छोटी सी पुस्तक में हिन्दी साहित्य के इतिहास सम्बन्धी सभी ज्ञातव्य बातें बड़े सरल और सुबोध ढंग से लिखी गई हैं। इसमें साहित्य सम्बन्धी प्रायः सभी वादों और भिन्न भिन्न आचार्यों के मतों का दिग्दर्शन कराया गया है। बी० ए०, मध्यमा और विशेष योग्यता के विद्यार्थियों के लिए बड़ी लाभदायक है।

इस एक पुस्तक के सहारे विद्यार्थी सरलता पूर्वक ऊपर लिखी कोई भी परीक्षा उत्तीर्ण कर सकता है। पुस्तक की वर्णन शैली बहुत रोचक और भाव पूर्ण है। हिन्दी में इतनी सुन्दर और इतनी छोटी इस विषय की दूसरी पुस्तक नहीं निकली।

सुदृढ़ जिल्द और सुन्दर छपाई की पुस्तक का मूल्य—एक रुपया मात्र।

मिलने का पता—

साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

हँसी का पिटारा रोते को हँसानेवाला

चिड़ियाघर

लेखक—

हास्य-रस के प्रसिद्ध लेखक

श्री पं० हरिशंकरजी शर्मा कविरत्न

ऐसा कौनसा हिन्दी-प्रेमी है जिसने चिड़ियाघर का नाम न सुना हो। प्रस्तुत पुस्तक का यह नवीन संस्करण है। मूल्य १) कुछ सम्मतियाँ भी देखिये :—

विशाल भारत—"श्री हरिशङ्करजी का चिड़ियाघर उच्च कोटि के हास्य का एक उत्तम ग्रन्थ है। चिड़ियाघर में उन्होंने नाना प्रकार के पंछी फाँस लिए हैं जो अपनी बोलियों से तुरन्त पहिचाने जा सकते हैं।"

केसरी—"इसके मज़ाक बड़े गम्भीर, बड़े चुभते हुए हैं और इसके व्यंग के कोड़े उन पर खूब पड़ते हैं जिन्हें व्यंग करके वे लिखे गए हैं।"

स्वतन्त्र—"चिड़ियाघर अपने ढंग की निराली चीज है। इससे मनोरंजन तो होता ही है पर कुवासना नहीं उत्पन्न होती। भाषा की दृष्टि से यह बड़े महत्व की चीज है। जिसे अच्छी भाषा सीखनी हो, वह अवश्य इसे पढ़े।"

मिलने का पता—

साहित्य-रत्न-भंडार, आगरा।

उपन्यास-साहित्य में खलबली मचा देने वाली

गज़ब की पुस्तक Eternal City का अनुवाद

अमरपुरी

अनुवादक—'सैनिक' के प्रतिभाशाली सम्पादक

साहित्य-रत्न पं० श्रीकृष्णदत्तजी पालीवाल

एम० ए०, एम० एल० ए०

हिन्दी में ऐसे उपन्यास प्रायः नहीं हैं। लेखक का यह उपन्यास उनकी अमर कृति है। हमारा आपसे अनुरोध है कि एकबार अवश्य पढ़िये। दो भागों का मूल्य केवल ४)

कुछ सम्मतियाँ:—

कविवर श्री मैथिलीशरणजी गुप्त—'अमरपुरी उपन्यास मैंने दो बार पढ़ा। पहली बार तो मेरी आँखों में पीड़ा थी परन्तु फिर भी मैं इसे छोड़ न सका। वास्तव में आपने बड़ी सुन्दर वस्तु हिन्दी साहित्य को भेंट की है।......अमरपुरी बहुत ही मनोरंजक और उदात्त भावों से परिपूर्ण है।......पुस्तक निश्चय ही इस योग्य है कि इसके अनेक संस्करण हों।'

श्री सियारामशरणजी गुप्त—'अमरपुरी उपन्यास मुझे बहुत ही रुचिकर प्रतीत हुआ है। बहुत थोड़े उपन्यास ऐसे होंगे, जिन्हें दो-दो बार पढ़ चुकने पर भी फिर से पढ़ने की मुझे लालसा हो। अमरपुरी ऐसे ही ग्रंथों में से है।'

आज ही आर्डर दीजिए—

मिलने का पता—साहित्य-रत्न-भंडार, आगरा।

साहित्यिक ग्रंथों का एकमात्र संग्रहालय

साहित्य-रत्न-भंडार, आगरा ।

किसी भी साहित्यिक पुस्तक के लिए यहाँ लिखिये ।

साहित्य-रत्न-भंडार के कुछ अन्य प्रकाशन—

१—**रसज्ञ-रंजन** (उत्कृष्ट गद्य लेख)—आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी कृत । कई परीक्षाओं में स्वीकृत । मूल्य ।।।)

२—**साहित्य-मीमांसा** (आलोचना)—पण्डित किशोरीदास जी वाजपेयी शास्त्री । विशेष-योग्यता के विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी है । मूल्य ।)

३—**तुलसी-गीतावली** (संक्षिप्त संस्करण)—महिला विद्यापीठ द्वारा स्वीकृत । टिप्पणी भूमिका सहित । मूल्य १)

४—**रजतकण** (अँग्रेजी अनुवाद के लिए)—प्रो० हरिहरनाथजी टण्डन एम० ए० द्वारा संग्रहीत अँग्रेजी के उत्कृष्ट अवतरण । बी० ए० परीक्षा के लिए स्वीकृत । मूल्य १)

मिलने का पता—

साहित्य-रत्न-भंडार, आगरा ।